Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BHUGOL 1925 G.K.V.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

maj Foundation Che

Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113724

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

R X-74

Stock Verification 2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

(Regd. No. A—1333)

वर्ष २] [illegible]र १९२५ [संख्या ६

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एक मात्र सचित्र मासिक पत्र।

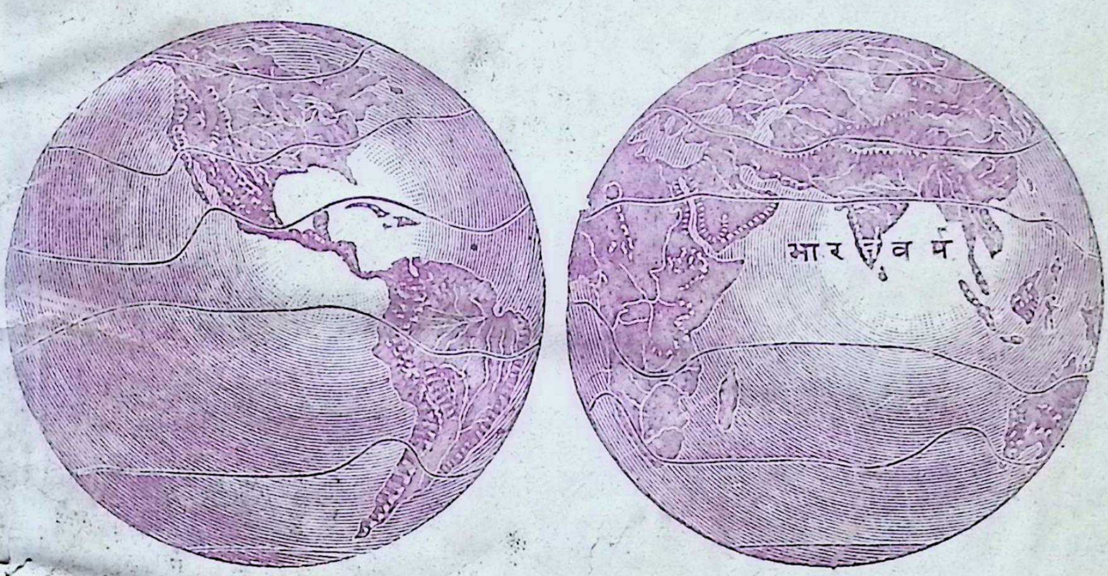

भूगोल अनुभव हेतु यह, "भूगोल" पत्र अमोल है।
"भूगोल" कहता है निरख, भू गोल है भू गोल है।

सम्पादक—
रामनारायण मिश्र बी० ए०

वार्षिक मूल्य संरक्षकों से १०) एक प्रति का मूल्य
सर्व साधारण से ३)] [चार आने ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची ।

१-भूगोल का यात्रा विभाग (बरमा की सैर) १
२-नवीन आस्ट्रिया (मार्ग, सड़कें और दृश्य) ५
३-फ्रांसिसी फ़ेज़ ७
४-नवीन कुस्तुन्तुनिया ८
५-कुल्लू का प्रदेश ६

श्री० व्रजमोहनलाल जी असिस्टैन्ट
(एग्ज़ेक्यूटिव इंजीनियर)

६-पैलेस्टाइन और सिरिया का शिशिर १२
७-हिन्दुस्तान में सिंचाई की नई योजनायें १३

प्रो० डी० पंथ लखनऊ, विश्व-विद्यालय

८-लङ्का के मोती १५

श्रीयुत रामप्रकाश

९-विविध विषय (समुद्र उथला हो गया) १७
१०-गेहूं, १८
११-चीन की दीवार १९
१२-तापक्रम २०
१३-संक्षिप्त समाचार २१
१४-प्रश्नोत्तरी २२
१५-भूगोल के संरक्षक २४

भूगोल की नियमावली ।

(१) 'भूगोल' प्रत्येक मास की १० तारीख तक प्रकाशित होगा ।

(२) इसका अग्रिम वार्षिक मूल्य सर्व साधारण से मेरठ में २॥), बाहर ३) और विदेशों में ५) है । एक प्रति का मूल्य ।) है, नमूने की कापी बिना मूल्य किसी को नहीं दी जायगी ।

(३) संरक्षकों से उनके सम्मानार्थ १०) वार्षिक है। आजन्म संरक्षकों से केवल एक बार १००)

(४) पत्र व्यवहार के समय, चन्दा भेजते समय अथवा कार्यालय से किसी प्रकार की लिखा पढ़ी करने के समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये ।

(५) लेख, कविता, समालोचनार्थ पुस्तकें और बदले के पत्र सम्पादक 'भूगोल' मेरठ के पते से आने चाहियें।

और मूल्य तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र मैनेजर 'भूगोल' मेरठ के पते से आने चाहियें ।

(६) किसी लेख या कविता को घटाने बढ़ाने, प्रकाशित करने या न करने, लौटाने या न लौटाने का अधिकार सम्पादक को है । सम्पादक जिन लेखों का लौटाना उचित समझते हैं उनका डाक और रजिस्ट्री का व्यय प्राप्त होने पर वे लौटाये जायेंगे अन्यथा नहीं ।

(७) इस पत्र में प्राय: सब लेख भूगोल सम्बन्धी ही होंगे ।

(८) सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबन्ध लेखक महाशय को करना होगा ।

सम्पादक—'भूगोल' मेरठ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरमा के प्रायः प्रत्येक बड़े नगर में इस प्रकार फुटबाल खेलने वाली मंडली मिलती है। जहां तक होता है खिलाड़ी इस हलकी बेंत की गेंद को ज़मीन पर नहीं गिरने देते।

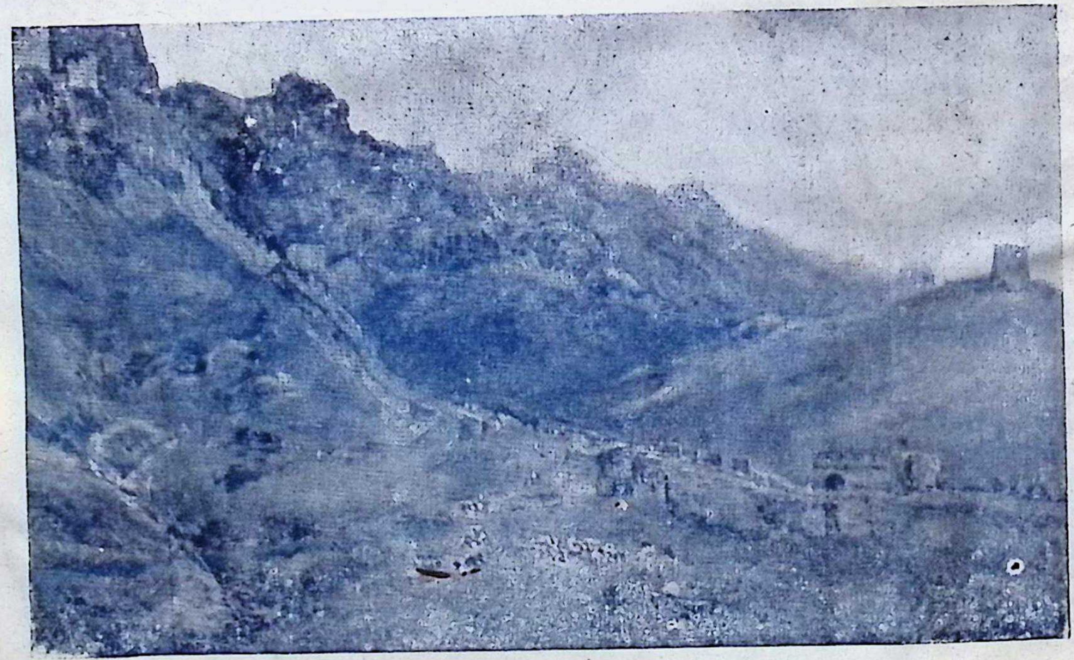

जगत-प्रसिद्ध चीनी दीवार समुद्र-तट से लेकर भीतरी भाग तक चली गई है यहां इस का एक भाग दिखाया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113724 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
113724

भूगोल

Sanctioned as a Periodical for use in High, Normal and Middle Schools of Central Provinces and Berar by the Director of Public Instructions C.P.

वर्ष २ } कार्तिक–१९८२–अक्तूबर सन् १९२५ ई० { सं० ६

भूगोल का यात्रा विभाग।

(बरमा की सैर)

गताङ्क से आगे

पेगू से सीधे मांडले न जा कर मैंने जियावाड़ी के लिये ही सबेरे नौ बजे की गाड़ी से प्रस्थान किया। लगभग ६ घंटे में पहुँच गया। यह कोई प्राचीन व विशाल नगर नहीं है। ब्रिटिश विजय के पहिले यहां जँगलही जंगल था। विहारी भाइयों ने आकर इसे हरा भरा कर दिया। इस छोटी सी हिन्दुस्तानी रियासत अथवा बड़ी ज़िमीदारी के साथ कई गांव लगे हुये हैं। हिंदुस्तानी उपनिवेश किस तरह के हो सकते हैं इस का यहां छोटा सा नमूना मिलता है।

स्थिति के अनुसार यहां घर, बाज़ार, स्कूल, कुआ, सड़क, हल, बैल आदि सभी चीज़ों पर हिन्दुस्तानी मुहर लगी है। सफाई व जाग्रति यहां के साधारण विहारी नगर से कहीं अधिक है। इन गावों में प्रायः सबके सब विहारी भाई हैं। ऐसा जान पड़ता था मानों मैं विहार में पहुँच गया। रियासत के मैनेजर साहब का नया महल सुन्दर व सुदृढ़ लकड़ी से बरमी ढंग का बन रहा है। आपको विहारी आसामी पितावत् मानते हैं। पर बरमी आसामी भी आप पर पूरा पूरा भरोसा करते हैं। आप बहुत सा रुपया अपनी रिआया में विद्या प्रचारार्थ स्कूल पर ख़र्च करते हैं। स्कूल के शिक्षक भी आपको बहुत त्यागी और विद्या प्रेमी मिल गये हैं। शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिडिलतक दीजातीहै।हिन्दीको विशेष स्थान मिला है वैसे तो अंग्रेज़ी भी पढ़ाई जाती है। आपने भौगोलिक अनुसन्धान से बड़ी सहानुभूति प्रगट की और "भूगोल" के संरक्षक भी सहर्ष बन गये। इन्हीं की रियासत में इतनी ईख होती है कि यहां का गुड़ बरमा के और भागों में भी बिकता है। दूसरे दिन इन मित्रों से बिदा हो यमेदिन का टिकट लिया। इस यात्रा में प्राकृतिक द्रश्य धीरे २ बदलता जाता है समथल धान के खेतों के बदले ऊँचे नीचे कटीले और ढाई तीन हज़ार फिट ऊँचे पहाड़ द्रष्टि गोचर होते हैं। ये सब पेड़ों से घिरे हैं। उधर से आने वाले चश्मे भी लट्ठों से भरे रहते हैं। ताड़, इमली, अमलतास, आम, जामुन, सुपारी, ढाक आदि के पेड़ अधिकतर सब कहीं पाये जाते हैं। नीम बहुत कम मिलता है। टौंगू के पास से स्पष्ट रूप से अपर बरमा के चिन्ह दिखाई देते हैं टौंगू एक बड़ा शहर तथा रेलवे जंकशन है। लकड़ी का भी यह एक बड़ा केन्द्र है सिटांग नदी में लट्ठों के ढेर रहते हैं शहर से कुछ दूर नदी के उस पार बुद्ध भगवान का पादचिन्ह है जहां हरसाल मेला लगता है। यह शहर पहिले सोलहवीं सदी में एक राजा की राजधानी था पुराने क़िले के भग्नावशेष व खाई इस के प्रमाण हैं। झील, नया पगोड़ा, स्कूल, बंगले आदि अब भी इसकी शोभा को बढ़ा रहे हैं आबादी बीस हज़ार के लगभग है।

पिनमिना के पास से गांवों में बांस की कंटीली चार दीवारी थी जो डाकुओं और ज़ंगली जानवरों की सूचक थी। पहाड़ के कई भाग नंगे भी थे। खेती भी कहीं ही कहीं थी। यमेदिन पहुंचते ही रात के नौ बज गये। यहां एक सुन्दर ठाकुर बाड़ी भी थी। इसलिये यहीं रात बिताई। इस ठाकुर बाड़ी के पुजारी ने जो फ़ैज़ाबाद ज़िलेके एक संस्कृतज्ञ पंडित थे बड़ा ही अतिथि सत्कार किया। यहाँ घर साधारण गांव के से हैं कुओं का अभाव है पानी के लिये बाहर कुछ दूर एक तालाब है जिसके चारों ओर डोल, बाल्टी, बहँगी व गाड़ी द्वारा पानी लेजाने वालों की पँक्ति लगी रहती है। तालाब का पानी साफ़ व मीठा है क्योंकि इस में नहाना व मैले बरतन डालना बिल्कुल मना है। दूसरे दिन स्नानादि से निपट तथा कुछ आम, केला व दूधसे क्षुधा शान्त कर चल दिया। आगे देश सूखा है पर्वत भी नग्न हैं पर पगोड़े इनकी चोटियों पर भी बने हैं। पेडों पर कांटेदार झाड़ियां हैं। खेत सूखे पड़े हैं इन में चार फलों वाला पटेला के समान हल चलता है पर कुण्ड, तीन इँच से अधिक नहीं खुदता। थाजी के पास नहर खुद रही है। इस प्रदेश में जन सँख्या भी बहुत कम है मकई की अधिक उपज होती है यह खाने के काम तो आती ही है पर इस की अड़ियों के पत्तों से लोग सिगरट बनाते हैं।

ऐसे शुष्क व पहाड़ियों के प्रदेश में होता हुआ साढ़े बारह बजे मिंगे पहुँच गया। यहीं मेरे मित्र पण्डित हरिवदन शर्म्मा जी ठहरे हुए थे। अतः स्टेशन से उत्तर रेलवे कर्मचारियों के घरों की पंक्तियों के बीच व गेरुआ खेतों में होता हुआ श्वेत ठाकुर बाड़ी में पहुँच गया। तन्दुरुस्ती के लिये यह स्थान बरमा भर में सब से अच्छा गिना जाता है। पर यह प्रसिद्ध है आमों के लिये, यहां के आम बड़े ही स्वादिष्ट होते हैं और प्रायः सभी शहरों में पहुँचते हैं। यदि यहां से रेलवे स्टेशन और रेलवे बन-साल उठा दी जावे तो यहां कुछ भी न रहे। इस बन-साल में बरमा रेलवे की सारी गाड़ियां बनने और मरम्मत होने आती हैं। एक भाग में लोहे का सामान बनता है। तरह २ के पुरज़े मिनटों में तय्यार हो जाते हैं। बढ़ई के कारख़ाने में मशीन के आरों से बड़े २ से बड़े २ लट्ठे बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बात में चीर दिये जाते हैं रंगाई और काट छांट के बाद वे जोड़ कर ठीक कर दिये जाते हैं।

मिंगे से मांडले तक दूरी केवल ६ ही मील है पर इस का एक एक मील ऐतिहासिक घटनाओं से भरा पड़ा है। मिंगे और मांडले के बीच प्रायः चार मील की दूरी पर अमर-पुरा है मिंगे से जाकर पुरानी चाल की ईंट की सड़कें, टूटे-फूटे पगोड़ा तथा विशाल झील पड़ती है इसके ऊपर एक बड़ा लम्बा काठ का पुल है यह पुल अब पुराना हो गया है। थोड़ी २ दूरी पर इस में काठ ही की बुर्जियां हैं। इस पुल से नीचे उतरते ही अमरपुर में प्रवेश होता है। अमर पुर का निर्माण १७८७ ई० में बादपाया महाराज ने करवाया। १८५२ ई० तक यही राजधानी रहा। इसी अवधि में इरावदी के समीप यहां विशाल फया, राजभवन, क़िला, खाई, चार दीवारी आदि इस कोटि के बन गये कि वे अपनी जीर्णावस्था में भी प्राचीन गौरव की साक्षी देते हैं। कुछ मन्दिर तो बिल्कुल नये से हैं। इस नगर में रेशम की बुनाई का ख़ूब काम होता है प्रायः प्रत्येक घर में मैंने करघे पर कोई न कोई कपड़ा (लुंगी) अध बुना चढ़ा हुआ देखा। पुरानी चाल की बुनाई के अतिरिक्त यहां एक बुनाई का स्कूल भी है जो सान्डर्स सिल्क वीविंग के नाम से प्रसिद्ध है। पर यह कोई बड़ा नगर न रह सका इसकी जन संख्या इस समय केवल आठ हज़ार के लगभग है। अमरपुर में दूसरी स्टेशन अमरपुर घाट के नाम से प्रसिद्ध है जहां से यात्री व माल स्टीमर द्वारा नदी के दूसरे किनारे को जाते हैं दूसरे किनारे पर उन्हें मिचीना अथवा मनीवा के लिये गाड़ी तयार मिलती है।

१८२२ ई० में मिंगे और ऐराती के संगम पर स्थित आवानगरी में नई राजधानी बनी पर १८३७ ई० में फिर राजधानी अमरपुर हो गई। और बीस बरस तक रही। इस वर्ष फिर राजधानी यहां से उठकर मांडले चली गई।

मांडले नगर उस मैदान में बसाया गया जो शान पहाड़ियों से लेकर पूर्व में इरावदी नदी तक फैला हुआ है। समस्त शहर का क्षेत्र-फल लगभग २५ वर्ग मील है। असंख्य इमलियों की छाया से पूरित चौड़ी सड़कें एक दूसरे से समकोण बनाती हुई पूरब से पश्चिम और उत्तर स दक्षिण को चली गई हैं। इनके दोनों ओर ईंट, टिन और लकड़ी के ऊंचे २ मकान हैं। जब मैंने रगून से शांजू को ट्रैम से प्रस्थान किया तो उस में भीड़ सड़क पर नहीं थी पर बैल गाड़ी घोड़ा गाड़ी और मोटर भी सड़क पर साथ २ चलते थे। बाहर के मकान बांस के बने हैं जो पुराने होने के कारण काले पड़गये हैं शहर खुला और हवादार है।

थोड़ी देर में फया के दरवाज़े पर पहुँच गया। फया के दरवाजे पर काठ का काम बहुत ही मनोहर है। जगह २ लकड़ी के खम्भे है ऊपर से सुनहरा परत जड़ा है इस महा मुनि फया की छत पर भी सुनहरा काम है। यहां की मूर्ति को बरमी लोग बड़ी ही श्रद्धा से देखते हैं बसन्त में यहां की मूर्ति, तालाब, घण्टे, पीत वस्त्रधारी पुंगी और सुगन्ध आदि एक दम धार्मिकभाव जाग्रत करते हैं।

सांजू से लौट कर दूसरे दिन मैंने राज महल के दर्शन किये राज महल का विस्तृत विवरण एक स्वतन्त्र लेख में दिया जायगा यहां संक्षिप्त में यही बतलाना पर्याप्त होगा कि दुनिया की राजधानियों के प्राचीन महलों की भांति यह सारा महल काठ का बना हुआ है बहुत सा भाग गिरा दिया गया है फिर भी इसके निर्माता को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसे पहिचानने में कठिनाई न होगी। भिन्न २ अवसरों के लिये भिन्न २ राज आसन काम में लाये जाते थे बहुत सी सजावट जाती रही पर अपने वैधव्य में भी यह यात्रियों को चकित कर देता है मुझे महल दिखलाने का भार मेरे मांडले निवासी मित्रों ने लिया था जो बरमी भाषा में भी निपुण थे। पर भाग्य से एक ऐसे वृद्ध सज्जन से भेंट हुई जो थीबा महाराज के समय में महल की नौकरी पर था सारी राम कहानी सुनाने के बाद मैं ने उससे कहा कि प्रजा को शायद अङ्गरेज़ी राज में पहिले से कहीं अधिक आराम है। थीवा नाम सुनते ही उसकी आंखों में आंसू भर आये और उसने कहा कि पहिले हम सरीखे गरीबों की गुज़र २) महीने में हो जाती थी अब तो ७) रुपये में भी गुज़र नहीं होती।

यहीं पास ही में वह जेल थी जिसे लोक-मान्य तिलक ने पवित्र किया था। उसका भी दर्शन करके पास में मांडले हिल पर चढ़ने की सोची यह पहाड़ी बहुत पवित्र गिनी जाती है। बरमा के परम पूज्य यूरवांटी नाम पुंगी महाराज ने कई लाख की लागत से इस में कई नये मन्दिर सीढ़ियां व छाया के लिये टिन लगवादी है। धीरे २ कर के एक मन्दिरसे दूसरे मन्दिर में होता हुआ चोटी पर पहुँचा गया।

चोटी पर से सारा शहर यहां तक कि मिंगे की वर्कशाप (कारख़ाना या वनसाल) की चिमनी का धुआं जो यहां से दस मील है दिखाई देता है। एक ओर शहर के मकान व पेड़ दिखाई देते हैं इससे आगे बगीचे दृष्टि गोचर होते हैं पहाड़ की तलहटी में इरावदी नदी बहती है। सामने क़िला व नहर है क़िले के ऊचे २ कंगूरे यहीं से झाड़ी के समान लगते हैं। दूसरी ओर बगीचे व बीच २ में धान के खेत हैं।

फौंडाडो नामी बरमी मुहल्ला ठीक नीचे बसा है। एक सड़क चर्तें जी को जाती है दोनों ओर पहाड़ हैं, ताड़ इमली बेरी आदि से दृश्य की मनोरमता व उपयोग्यता बढ़जाती है आज पानी बरसने से कुछ २ बादल अब भी घिरे थे वैसे यह शुष्क प्रदेश है हवा के चलने से शिखर के ताम्रपत्र हिलते हैं जिससे मनोहर झनकार होती रहती है। सारा शहर बगीचा सा मालूम होता है क़िला वर्गाकार है सब कहीं थोड़ी २ दूर पर पगोड़े हैं लकड़ी की लाल २ छतें भी उनके पास निकली हैं चारों ओर शान्ति सी छाई है इरावदी की दूसरी ओर सगाई और मिगून तक दृष्टि जाती है।

दूसरे दिन नाव द्वारा मिगून का विशाल घण्टा घर देखने के लिये प्रस्थान किया। इस घण्टेका विवरण गत दिसम्बर मास के भूगोल में प्रकाशित हो चुका है। इस यात्रा का आनन्द अनुभव से सम्बन्ध रखता है। शब्दों के परे हैं नदी की उल्टी ओर नाव ले जाने में जो परिश्रम होता है उसे पाठक भलिभांति जान सकते हैं पर परिश्रमी, बरमी मल्लाह इसके अभ्यस्त हैं। हां वे मज़दूरी पूरी पूरी लेते हैं। स्टीमर के पाल वाले मल्लाहों ने तो आने जाने के लिये पांच रुपये से कम लेना स्वीकार ही न किये इसलिये किनारे २ धोबी घाट और नाव के कारख़ानों के बीच में होता हुआ एक मील आगे बढ़ा वहां तीन रुपये में काम चल गया एक आदमी की तीन रुपये मज़दूरी कुछ कम नहीं है पर बरमी नौकर एक बार मेहनत कर लेते हैं फिर जबतक पैसा रहता है ये महनत का नाम नहीं लेते। मेल आपस में पूरा है यदि घाट के एक मल्लाह ने कुछ दाम कह दिये तो दूसरा कभी न घटेगा।

यहां से लौट बाज़ार शहर आदि से निपट मिचीना के लिये प्रस्थान किया। अपूर्ण—

(यहां का शेष वृतान्त फिर कभी दिया जावेगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन आस्ट्रिया ।

(मार्ग, सड़कें और दृश्य)

समस्त आस्ट्रिया का पुनरुत्थान हो रहा है पर आस्ट्रिया की सड़कें जो जातीय उन्नति की कसौटी हैं सबसे अधिक सुधर गई हैं। सड़कोंके किनारे छोटे२ पत्थरके टुकड़ोंके ढेर आशा दिलाते हैं, कि भविष्य में सड़कें बहुत अच्छी हो जायंगी। छोटी छोटी मरम्मत सब जगह हो रही है। पहाडों में धरातल ठीक है पर बड़े२ नगरों के पास और देशों की तरह लीक पड़ गई हैं। यहां गढ़े लीक और खाई खन्दक हो गई हैं, और कंकड़ या तो अत्यन्त अधिक है या अत्यन्त कम।

योरुप में आस्ट्रिया वासियों के समान अतिथि सत्कार करने वाली जाति न मिलेगी। टूटी फूटी जर्मन भाषा सीखना बहुत कठिन नहीं है। बहुत से लोग अंग्रेज़ी भी समझ और बोल सकते हैं। अच्छे नकशों का मिलना सरल है बड़ी २ सड़कों पर दिशा दर्शक खम्भे लगे हैं। अगर नाम और मीलों के नम्बर कुछ और बड़े अक्षरों में होते तो और भी अच्छा होता। आस्ट्रिया का (आटमोबील क्लब) व अन्य संस्थाएं यात्री को सहायता करने के लिये उद्यत हैं।

आस्ट्रिया का प्राकृतिक दृश्य सुन्दरता में योरुप के किसी ही भाग से मुक़ाबिला कर सकता है। न जाने क्यों, यहां के पहाड़ और घाटियों की अनुपम छटा है। साल्ज़बर्ग और साल्ज़कामरगट में अनेक अत्यन्त मनोरम पर्वतीय धारायें हैं जिन में छोटी छोटी मछलियां भी हैं। हर बीस तीस मील पर होटल बने हैं एक दम दो तीन हज़ार फीट उठी हुई पहाड़ियों के बीच नद-कन्दराएं हैं पहाड़ चोटी तक पेड़ों से लदे हैं। जंगलों से घिरी हुई हरी हरी बहुत सी झीलें हैं कुछ वरथरसी और कामर जैसी समुद्राकार भी हैं। कुछ छोटी छोटी नीली २ झीलें भूरी पहाड़ियों में नीलम के समान जान पड़ती हैं। गावों के रास्ते कुछ तंग और बहुत मोड़ दार हैं,पर गांव बहुत ही रमणीक हैं। छोटे २ बच्चे मित्र भाव दरसाते हैं पर मोटर को देख कुछ झिझकते हैं।

होटलों में खाना अच्छा और सस्ता मिलता है। स्वच्छता सब कहीं पाई जाती है। इन्सब्रुक शहर में होटल मैनेजर खानसामा और रसोइया का काम सिखाने के लिये एक स्कूल है। फिर इसमें आश्चर्य ही क्या यदि आस्ट्रियावासी अत्यन्त कुशल भोजन बनाने वाले सिद्ध हों।

आस्ट्रिया के लिये कई अच्छे मार्ग हैं। चेनल तट के बन्दरगाहों से पहुंचने वाले यात्री को फ्रांस और जर्मनी होकर म्यूनिच जाना होता है म्यूनिच से ज़र्लदर्रे को पार करती हुई एक सड़क इंसब्रुक जाती है। स्विटज़र लैंड को पार करके बास्ले या वालोर्बे होता हुआ यात्री बर्न और ज़्यूरिच पहुंच सकता है वहां से कुछ आगे फेल्डकर्च से आस्ट्रिया देश आरम्भ हो जाता है।

दो घंटे में यात्री ५९१२ फिट की उंचाई पर आर्लबर्गके दर्रेमें पहुंच जाता है जहांसे हिमाच्छादित बिखरी हुई चोटियों, निनादित नदियों और सघन बन की शीतल छाया का आनन्द लूटा जा सकता है। इस चोटी से पूरब दिशा में इन नदी के किनारे २ इन्सब्रुक शहर की ओर सड़कों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतार आरम्भ हो जाता हैं। यहां से टाइरल प्रदेश के सन्ट जोहान नगर पहुंचने में राष्ट्र का पूर्वी भाग सब से अधिक उपजाऊ है हंगरी से लगा हुआ वन पर्वतमय प्रदेश हैं पर जकोसलोवया से मिला हुआ डेन्यूब नदी के आस पास का भाग अधिक उपजाऊ है। यहीं सब से अधिक जनसंख्या है। आधा दिन लगता है। वहां से उत्तर की ओर मुड़ने में साल्ज़वर्ग और साल्ज़ कामरगट पड़ता है सीधे दक्षिण पूरब की ओर आस्ट्रिया का प्रदेश है। उत्तर की ओर मुड़नेमें बेवेरिया का प्रदेश भी पड़ता है जो सेंट जोहान और लिंज के बीच वाली सड़क में आ जाता है इन नदी के समानान्तर ही सालसच नदी बहतीहै। पर दक्षिण की ओर साल्ज़वर्ग लिन्ज़ और वियना नगर पड़ते हैं। डोलोमाइट प्रदेश और भी दक्षिण में हैं जहां आजकल आस्ट्रिया के स्थान में इटली का राज है। १९१४ ई० में आस्ट्रियाने यहां बहुत अच्छी सड़कें बनवाई थीं, जो अपनी घाटी पहाड़ी और जंगली छवि से अब भी यात्री को मुग्ध कर देती हैं। सिक्के की अदल बदल में अब गड़ बड़ी नहीं पड़ती क्योंकि यहां की नई शिलिंग एक पौंड की ३४ के अनुपात से स्थिर हो गई है। पुराने क्रोनेन नोटों में भी स्थिर मूल्य हो गया है। प्रवेश होने पर नाम मात्र को थोड़ा महसूल लगता है।

मोटर वालों के ध्यान देने योग्य बात यह है फ्रांस और स्विज़रलैंड में मोटर दाईं ओर को चलाये जाते हैं पर पच्छिम की ओर आर्ल-बर्ग व और दर्रों को पार करते ही आस्ट्रिया के समग्र भाग में मोटर हिन्दुस्तान की तरह बाईं ओर को बचाये जाते हैं। वियना आदि सब शहरों में सब कोई बाईं ओर को मोटर चलाते हैं। एक या दो मील चलाने के बाद अभ्यास हो जाता है। पुलों पर भी सावधानी रहनी चाहिये। तेज़-चाल से मोटर को कहीं भी चलाना ठीक न होगा परदेशाटन करने वाले को जल्दी की आवश्यकता भी नहीं है। मोड़ बहुत हैं धीरे धीरे चलने वाली किसानों की घोड़ा गाड़ी अचानक आ जाती हैं। धीरे २ वियना नगर अपना पुराना गौरव व्यापार और संगीत उन्नत कर रहा है।

बहुत से लोग फ्रांस से आस्ट्रिया को अत्यन्त दूर समझते हैं लेकिन हावर, डियपी या बोलोन से बास्ले केवल साढ़े चारसौ मील हैं बास्ले से डेढ़सौ मील यात्रा करने के बाद यात्री स्वीटजलैंड के सीमास्थ नगर ब्रीगेंज, फैल्डकर्च यारगाज़ नगर में आ जाता है दूसरे दिन आस्ट्रिया में प्रवेश हो जाता है।

आस्ट्रिया वासी जर्मन लोगों से मिलते जुलते हैं और जर्मन ही भाषा बोलते हैं। कई सदियों के लगातार परिश्रम से उन्होंने एक साम्राज्य स्थापित किया जिसमें कई जातियां उनकी प्रजा बन गईं। ज़क़, स्लोवेक और पोल लोग उत्तर पूरब की ओर हंगरियन, रूमानियन और सर्ब लोग पूरब व दक्षिण में तथा इटेलियन लोग दक्षिण पच्छिम में रहते थे। महायुद्ध के अन्त में साम्राज्य छिन्न भिन्न हो गया और ये जातियां स्वतन्त्र हो गईं। आज कल आस्ट्रिया-प्रजातन्त्र का क्षेत्रफल केवल ३८,-४०० वर्ग मील और जन संख्या ६७ लाख है। इस जनसंख्या के २० लाख मनुष्य अकेले वियना नगर में रहते हैं। पहिले की अपेक्षा इस राष्ट्र की $\frac{१}{५}$ जन संख्या रह जाने से राजधानी भी इतनी जनसंख्या का निर्वाह नहीं कर सकती क्योंकि यहां का बहुत सा काम अन्य राष्ट्रों के हाथ चला गया है।

आस्ट्रिया की अधिक तर भूमि अल्प पवत के समान है। और चर वाही से बहुत से लोगों की जीविका होती है। इन्स और मुर नदियों के बीच पहाडी प्रदेश के पूरबी भाग में कच्चा लोहा मिलता है। कुछ लोहा गलने के लिये उत्तर ओर स्टर को भेजा जाता है कुछ मुर नदी पार बसे हुये ग्राज नगर को जाता है जहां कोयला भी निकलता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ्रांसीसी फेज़।

फ्रांसीसियों को मूर साम्राज्य पर अभिमान है। उनका कहना है कि हमने खूंख्वार उद्दंडता को वश में कर योरुपवासियों के लिये अफ्रीका का दरवाज़ा खोल दिया है। पर फेज़ शहर का दर्शन करने से पता लगता है, कि यहां के गुलाब, राज-भवन और रमणीक भाव अब भी पीली २ विशाल दीवारोंके अन्दर बन्द हैं। प्राचीन फेज़में देशी ही लोग रहते हैं विलायती लोगों का निवास अलग है। प्राचीन फेज़ के लोग बहुत ही काम में लगे रहते हैं। सूर्य के उदय होते ही यहां के लोग भूलभुलैयों की तरह सकरी गलियों में जहां अक्सर मैले का ढेर भी पड़ा रहता है, घूमना शुरू कर देते हैं। एक लाख मनुष्य इसी तंग जगह में भरे पड़े हैं। लेकिन घमासान बाज़ार या भीड़ वाली गलियों में होकर निकलने वाले यात्री को वास्तविक जीवन का बहुत कम पता लगता है। जो स्वराज्य की लगन मिस्र, हिन्दुस्तान और तुरकी में घर कर गई है, उसका यहां चिह्न भी नहीं है। मूर स्त्रियां आज भी मिठाई खाने और बात करने अपने दिन चपटी छतों पर बिताती हैं जैसा कि अल्फ लैला के समय करती थीं। जैसे २ वे एक छत से दूसरी छत को या एक अटारी से दूसरी अटारी पर जाती हैं उनके सुनहरे बाज़ूबन्द और हमेल व और भूषण धूप में चमकते हैं।

इस गुलाब और गन्ध, कीचड़ और रङ्ग, विभव और विवशता, तथा महल और झोंपड़ी से भरे हुए नगर में कुछ दूर नये भाग में नवीन से नवीन शहर से बढ़ी हुई उन्नति है। जहां मोटर कार, सिनेमा, संगीत-भवन और मीठी शराब की भर मार है। यहां पेरिस के भेषभूषा में सैकड़ों स्त्रियां इकट्ठी होती हैं। ये स्त्रियां दूर से फ्रांसीसी जान पड़ती हैं, पर ध्यान देने पर यहूदी सिद्ध होती हैं जिन्हों ने गत ५ वर्षों में ही अपनी फेज़ बहिनों की अपेक्षा आशा-तीत उन्नति की है।

वास्तव में नवीन फेज़ भी पुरानी की तरह ही सैंकड़ों जातियों और भाषाओं की खीचड़ी है।

यह दुनिया का एक केन्द्र तथा काफिलों की सराय है जहां फ्रांस की साम्राज्य-वादिता प्रगट होती है।

नये नगर के प्रधान वर्गाकार स्थान में भांति२ के मोटरकार इकट्ठे होते हैं। मोटर चलाने वाले स्पेन और माल्टा वासी हैं जो झगड़ा करने और शरह को अदलने बदलने के लिये दुनिया भर में मशहूर हैं। यहां के होटलों में फ्रांसीसी ठाट बाट में डटे हुए अरब लोग मिलते हैं जो मोमबत्ती की फेक्टरी के प्रतिनिधि सम्पादक गुमाश्ता और जनरल का काम करते हैं। यही सिरिया और अल्जीरिया भेद ले जाने वाले भेदिये मिलते हैं।

अजायबघर में अजब बातें देखने को मिलती हैं। पन्द्रहवी सदी तक मरक्को की सभ्यता योरुप के स्पेन आदि देशों से बढ़ी चढ़ी थी। फिर मरक्को ने सदियों की नींद लगाई। निदान इस समय भी सैकड़ों विद्यार्थी पृथ्वी को ठहराहुआ मानते हैं। और हिल २ कर पढ़ते हैं।

शहर के बाहर की ओर सेने गाल वालों के गांव है। जहां नोकदार खपड़ैल हैं। जहां दे श सिपाही रहते हैं। यहां की स्त्रियां विदेशियों की नक़ल करती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन कुस्तुन्तुनिया ।

बीस वर्ष पहिले कुस्तुन्तुनिया एक आनन्द की नगरी थी, यहां सुलतान ख़लीफ़ा को राजधानी थी जो इस दुनियां और उस दुनियां दोनों ही में निरंकुश था। योरुप निवासी थके घोड़ों की गाड़ियों में सवार हो धूल व कीचड़ की सड़क में सफ़र करते थे। क्योंकि बिजली से चलनेवाली ट्रैमगाड़ी उनके ध्यान में नहीं आती थीं। यही साफ़ा व तुर्की टोपी पहिने एशिया की लग भग आधी जातियां व्यापार के लिये मिलती थीं। कुत्तों की वजह से सबको संभल कर चलना होता था। हर एक यवन स्त्री भली भांति बुर्के से ढ़की होती थी और प्रत्येक यवन मनुष्य सिर में ऐसा वस्त्र पहिनता था जिससे वह काम पड़ने पर नमाज़ पढ़ने के लिये ज़मीन या कालीन पर माथा टेक सके।

पर अब यह दिन बीत चुके इन्हें कुछ कट्टर लोग व्यापारी आह के साथ याद करते हैं। धन धान्य की उस समय चाहे कमी न ही पर राजनीति की दृष्टि से ये दिन साधारण तुर्क के लिये अभिमान के दिन न थे। अधिकांश काठ की बनी हुई नगरी के लिये आग से बचाने के लिये कुछ घड़े भरने वाले तुलुम्बाजियों को छोड़ कोई प्रबन्ध न था।

सुधार।

फिर सुधार का समय आया। सड़कों पर रोशनी होने लगी कुत्ते भगा दिये गये। बिजली द्वारा ट्रैमगाड़ी चलने लगी। सार्वजनिक छोटा सा बग़ीचा भी लग गया। पर युद्धकाल में इन कामों पर अधिक ख़र्चा न हो सका। मित्र राष्ट्रों के सैनिक शासन के अवसर पर जो दीनदशा कुस्तुन्तुनिया की थी, वैसी शायद ही किसी शहर की रही हो। सब जगह मक्खी भिनक रहीं थीं जगह २ धूल और कीचड़ होगई हवा किसी ओर को चले, पर धूल अवश्य उड़ती थी। चलने वालों के पैरों पर आ पड़ती थी। अक्सर गन्दी नाली की खाड़ी बन गई थी जिन में आंख खोल कर न चलने वाले को गिरने का डर था। निर्धन मुहल्लों में ऐसी गंध आती थी जिसे धूप भी दूर करने में असमर्थ थी।

अब सब कुछ बदल गया है प्राचीन गौरव तो अभी दूर है पर विदेशियों से छुटकारा हो गया है। कुछ २ प्रतिष्ठा स्वाभिमान भी फिर आगया है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि अब कुस्तुन्तुनिया तुर्की की राजधानी नहीं रही पहिले का व्यापार भी बहुत कम है। पर दूरदर्शी एमिन बे इस दशा को सुधारने की कोशिश कर रहे हैं। पर इस काम में उन्हें स्थानीय समाचार पत्रों से बहुत कम सहायता मिल रही हैं। इस का कारण शायद यह है कि कुस्तुन्तुनिया म्युनिस्पैलिटी के चेयरमैन प्रजा द्वारा निर्वाचित न हो कर सरकार द्वारा नियुक्त हुए हैं।

इस बीच में सड़कों की मरम्मत रोशनी, घाट गोदाम आदि बनवा कर अपनी योग्यता का अच्छा परिचय दिया है, म्युनिस्पैलिटी की वार्षिक आमदनी डेढ़ करोड़ रुपये से कुछ कम हैं फिर भी सभापति ने गेहूं पर चुंगी आधे से भी कम करदी है और गलाटा पुल का महसूल बन्द करने की सोच रहे हैं। पुराना कर्ज़ा भी बहुत कम होगया है।

इन सब बातों के कारण सडकों पर फुर्ती आ गई है। औरतों ने बुर्क़ा अलग कर दिया है। उत्सवों में आदमियों के साथ जाती है बहुतों ने तो दफ़्तरों और फ़ौजों में भी काम करना शुरु कर दिया हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

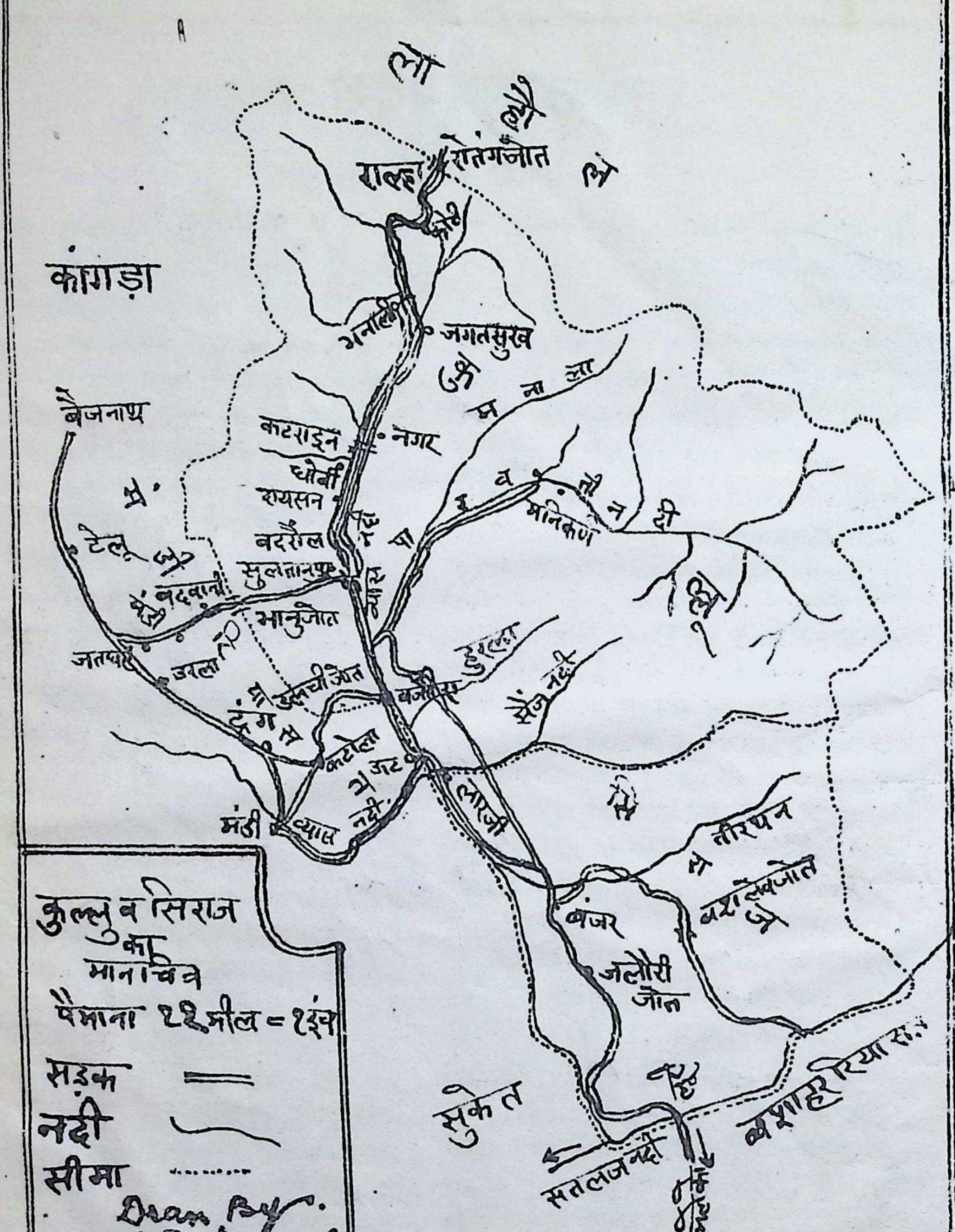

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुल्लू प्रदेश ।

(जुलाई के अंक से आगे)

[ले० श्रीयुत ब्रज मोहनलाल जी असिस्टैन्ट इग्ज़ेक्यूटिव इंजीनियर ।]

व्यास के अतिरिक्त अन्य मुख्य नदियां पारवती, मलाना, हुरला, सैंज और तीरथन है और यह सब ही व्यास की सहायक हैं। पारवती नदी की घाटी व्यास घाटी से कम रमणीक नहीं है। इसी घाटी में हिन्दुओं का मुख्य तीर्थ स्थान 'मणिकर्ण' है जहां पर उबलते हुए पानी के कुण्ड हैं। सैंज और तीरथन नदी का समागम लारजी में हैं, और तब यह संयुक्त धारा समागम से आध मील नीचे ही व्यास के साथ मिलती है। इस त्रिवेणी के स्थान पर ही व्यास एक समकोण बनाती हुई मण्डी रियासत की भूमि में प्रवेश करती है। इस त्रिवेणी के स्थान का दृश्य बड़ा ही विकट है। एक ही स्थान से तीन नदियों की दुर्गम संकीर्ण घाटियां दीख पड़ती हैं। व्यास की घाटी यहां से आगे आठ दस मील तक बड़ी ही संकीर्ण है। दोनों ओर बड़ी ऊंची गिरिश्रेणी हैं, और दाहिने तट की सीधी चट्टान को काट कर लारजी से मण्डी तक मोटर की सड़क बनाने का यत्न किया जा रहा है। कुल्लू के अन्य मार्गों का वर्णन अन्यत्र किया जावेगा।

इतिहास

कुल्लू की प्रमाणिक ऐतिहासिक सामग्री दो सहस्र वर्ष पहले तक की मिलती है किन्तु पौराणिक कथाएं पाण्डव-समय तक का कुल्लू का इतिहास बतलाती हैं। कहते हैं एक टांडी नाम का राक्षस रोतंग जोत के निकट अपनी बहिन हरिम्बा के साथ बस गया। उसके दमन करने के लिए भीमसेन पाण्डव कुल्लू में आया और राक्षसों का बहिष्कार कर भीम हेरम्बा को संग लेगा। भीमसेन के एक साथी विदार ने टांडी राक्षस की कन्या से विवाह कर लिया और उनके दो पुत्रों भोट और मकर को व्यास ऋषि ने पाला।

भोट ने तिब्बती स्त्री से विवाह कर लिया और क्योंकि वह गौमांस खाने लगा उसका भ्राता मकर उससे पृथक रहने लगा। कहते हैं कि इसी मकर ने मकरसा नामक ग्राम बसाया जहां से वह सारे कुल्लू प्रदेश का राज्य करता था। यह तो हुई पौराणिक कथाएं। प्रथम ऐतिहासिक राजा विरायस है जिस का नाम एक सिक्के पर खुदा मिला है। इसके अतिरिक्त कि वह ईसा की प्रथम शताब्दी में था उसका कोई और हाल ज्ञात नहीं है।

पन्द्रहवीं शताब्दी तक पाल वँश राज करता था जिसके पीछे सिंह वँशी राजा हुए। यह सिंह वँशी और पाल वँशी एक ही जान पड़ते हैं केवल कुछ कारणों से नाम बदल गया है। सन् १८०० तक इन राजाओं के नंडी, सुकेत, कांगड़ा, और चम्बा आदि के राजाओं से युद्ध हुआ करते थे और एक समय कुल्लू राज्य में मंडी, सुकेत, लाहौल और शिमले का कुछ अंश तक सम्मिलित हो गया था।

मुग़लवंश से भी कुल्लू का सम्पर्क रहा है और मुग़ल बादशाहों के तेरह फ़रमान अभी तक मौजूद हैं। एक फ़रमान औरङ्गज़ेब का है जो राजा जगत सिंह के नाम है (-१६५८ ई०)। इस फ़रमान में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगतसिंह को राजा के नाम से सम्बोधित किया गया है। इस फ़रमान में जगतसिंह से बिलासपुर के धानचन्द कहलूरी के साथ मिल कर पहाड़ों के मार्ग बन्द करने की प्रार्थना की गई है जिससे दारा शिकोह का पुत्र सुलेमान शिकोह अपने पिता से न मिल सके जो समूहगढ़ की लड़ाई में औरङ्गज़ेब और मुरादबख़्श से हारकर पंजाब भाग गया था।

सिक्खों का आक्रमण।

प्रथम बार रंजीतसिंह ने सन् १८१० में ४०००० रुपये का दण्ड कुल्लू से वसूल किया। तीन साल बाद दूसरा दण्ड वसूल न होनेपर दीवान मोहकम चन्द के आधिपत्य में सिक्ख सेना ने बिजौरा की ओर से आकर चढ़ाई करदी।

सिक्खलोग पचास हजार रुपया वार्षिक दंड मांगते थे जो कुल्लू का राजा देने में अशक्त था। राजा डरके मारे अपना महल छोड़कर भाग गया और आक्रमण कारियों ने सुलतानपुर को खूब लूटा। फिर किसी तरह से राजा ने जितना रुपया उससे इकट्ठा हो सका उतना देकर अपनी जान छुड़ाई। इसके पीछे सन् १८३६ में जनरल वेन्चुरा (Ventura) के आधिपत्य में मंडी रियासत के विरुद्ध सिक्ख सेना आई और मंडी का राजा क़ैद कर लिया गया। फिर यह बहाना बना कर कि कुल्लू ने मंडी की सहायता की थी, कुल्लू पर भी धावा बोल दिया गया। राजा बहकावे में आकर और अपने महल को लूट से बचाने के हेतु अपने आप क़ैदी हो गया।

फिर तो सिक्खों की बन पड़ी। उन्होंने सारे ही देश पर अधिकार करने की ठानी। सिराज के सारे दुर्ग वंश में करने के लिये सेना का एकभाग राजा को साथ लेकर चल पड़ा और प्रत्येक दुर्ग के अधिपति को स्वयं राजा के मुख से दुर्ग छोड़ने के लिये कहलाया गया। इस जीत से फूल कर सिक्खों ने राजा के साथ बड़ा बुरा सलूक किया। कहते हैं कि सिक्ख सिपाहियों ने राजा की मूंछ तक खींच कर उठक बैठक कराई। कुल्लू के लोग राजभक्ति के लिए प्रसिद्ध हैं। वे इस अनीति को कहां तक सहन कर सकते थे। सिराज के वज़ीर कपूरू ने तभी एक ढोंग रचा। जितने आदमी हो सकते थे इकट्ठे किये गये। सिक्ख सेना एक सहस्र के लगभग अपना कार्य समाप्त कर बशलेव जोत से वापिस आ रही थी। तुङ्ग के दुर्ग के नीचे का मार्ग जो केवल एक संकीर्ण पथ था, एक पेड़ों से भरे जंगल में होकर निकलता था। यहीं पर सब सिराजी इकठे हो गये। सिक्ख सेना हर्ष से बढ़ी चली आरही थी। जब सेना का वह भाग जिसमें कुल्लू का राजा था सामने आया, सिराजियों ने एक दमधावा किया और कुछ सिपाहियों को मार कर राजा को पहाड़ी पर चढ़ा कर ले गये। उसी समय सारी सिक्ख सेना पर पहाड़ी पर से बड़े बड़े पत्थर फैंके गए। और सिक्खों ने डर के मारे तुङ्ग के दुर्ग में शरण ली। किन्तु खाने की सामग्री पास न होने के कारण उनको बाहर निकलना पड़ा और फिर उनपर वैसा ही आक्रमण हुआ। उनको देश का ज्ञान नहीं था और वह ऐसे पहाड़ों पर पहुंच गये जहां उन्हें पैर जमाना भी कठिन था।

पहाड़ी लोग पहाड़ों पर चढ़ने में निपुण होने के कारण सिक्खों के ऊपर ही पहुंचते गये, और पत्थर गिरा कर उन्हें मारते गये। जब एक रात इस प्रकार तंग हो कर सिक्खों को फिर घाटी में उतरना पड़ा, उनको यह विश्वास दिलाया गया कि उनके प्राण की रक्षा की जावेगी। उनसे हथियार ले लिये गये। ज्योंही सिक्ख लोग अस्त्र विहीन हुए उन्हें निर्दयता से मार डाला गया। इस प्रकार कायर बलहीन सिराजियो ने सिक्खों के अन्याय का बदला लिया।

कुछ वर्षों तक सिक्खों का दौर दौरा रहा। सन् १८४६ में प्रथम सिक्ख युद्ध की संधि की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्त में रंजीत सिंह ने सतलज और रावी के बीच का देश अंग्रेज़ों को दे दिया और इस प्रकार कुल्लू ल हौल और पिती अंग्रेज़ राज्य में समिलित होगये यहां के राजाओंको जागीर दे दी गई। यही कुल्लू का संक्षिप्त इतिहास है आजकल कुल्लू कांगड़े ज़िले का एक अंश है और एक Subdivisin officer के आधीन है।

कुल्लू के मार्ग

कुल्लू जाने के मुख्य मार्ग दो हैं एक शिमले से दूसरा पठानकोट से। शिमले से कुल्लू का प्रधान नगर सुलतानपुर १२२ मील है और पठानकोट से १४० मील है। पठानकोट से बैजनाथ ८२ मील तक मोटरें चलती हैं। बैजनाथ से कुल्लू कुल ५८ मील रह जाता है और निम्नलिखित पड़ाव आते हैं।

ढ़ेलू –	१४ मील
जनघिरी–	१३ मील
बदवानी–	१२ मील
करांव –	१२ मील
सुलतानपुर–	८ मील

बदवानी और करांव के बीच भाबू जोत हैं जो लगभग १०००७ फुट ऊंची है। जोत के दोनों ओर की सड़क बहुत चक्करदार और तेज़ चढ़ाई वाली है और सामान्य पुरुष को चढ़ने में बड़ी कठिनता होती है। इस जोत पर नवम्बर के अंत से मार्च के अन्त तक बर्फ पड़ी रहती है और यह मार्ग इन चार महीने बन्द रहता है। पहाड़ी लोग मार्च के आरम्भ में ही आना जाना आरम्भ कर देते हैं।

जाड़े की ऋतु में भाबू जोत बन्द होने के कारण मुख्य मार्ग डुलची जोत के द्वारा है। इस मार्ग में निम्नलिखित पड़ाव हैं—

बैजनाथ से ढेलू–	१४ मील
ढेलू से उरला–	१२ मील
उरला से द्रंग–	१२ मील
द्रंग से कटौला–	१२ मील
कटौला से विजौरा–	१७ मील
विजौरा से सुलतानपुर–	६ मील

कटौला और विजौरा के बीच डुलची जोत है, जो कुल ७००० फुट ऊंची है— डुलची जोत तक मंडी रियासत है, और डुलची से कुल्लू प्रारम्भ हो जाता है।

तीसरा मार्ग मंडी होकर भी है। इस मार्ग से सड़क बराबर व्यास नदी के तट पर निकाली गई है। इस में पड़ाव इस प्रकार है, द्रंग तक जैसे ऊपर बताया गया—।

द्रंग से मंडी–	१२ मील
मंडी से पंडोह–	१२ मील
पंडोह से ऊट–	१३ मील
ऊट से विजौरा–	६ मील
विजौरा से कुल्लू–	६ मील

इस मार्ग की विशेषता यह है कि इसमें चढ़ाई ऊतराई कहीं नहीं है। मंडी से कुल्लू तक बराबर व्यास नदी का किनारा है। ऊट से कुल्लू घाटी आरम्भ हो जाती है। मंडी से कुल्लू तक इस मार्ग से मोटर की सड़क का प्रबन्ध हो रहा है। मंडी तक अब भी मोटर चलती हैं। इस सड़क के पूरा हो जाने पर कुल्लू मोटरों के लिए खुल जावेगा।

मन्डी पहुंच ने के दो मार्ग और भी हैं। एक होशियारपुर से और एक रुपड़ (अम्बाला ज़िला) से। अधिकतर कुल्लू का व्योपार होशियारपुर के साथ इसी मार्ग से होता है। मन्डी से होशियारपुर कुल १० मील के लग भग है। यह बात यहां पर उल्लेखनीय है, कि यह सड़क केवल घोड़े टट्टुओं के ही लिए है, इन पर पहियेदार गाड़ी नहीं चलती हैं इस देश में ऐसे सहस्रों मनुष्य हैं जिन्होंने रेल गाड़ी क्या बाबा आदमके समय की बैलगाड़ी के भी दर्शन नहीं किये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिमले से सारा रास्ता १२२ मील केवल खच्चर टट्टू का है। शिमले के अफ़सर लोग ही अक्सर इस मार्ग से आते जाते हैं। गर्मियों में अधिकतर लोग भाबू जोत से ही पार होते हैं।

सुलतानपुर पहुंचकर कुल्लू घाटी में सैर करने की अन्य सड़कें हैं जिन का वर्णन उचित अवसर पर किया जावेगा। हरेक पड़ाव पर डाक बङ्गला बना हुआ है जहां पर डेढ़ रुपया प्रतिदिन किराया देने पर हर कोई ठहर सकता है किन्तु यह बङ्गले अंग्रेज़ लोग वा अंग्रेज़ी चाल के हिन्दुस्तानियों के लिए ही उपयुक्त हैं।

कुल्लू की सैर का आनन्द अप्रैल मास से अक्तूबर तक है। रेलगाड़ी या मोटर का सुभीता न होने से अभी थोड़े ही लोग आते हैं, क्योंकि ठीक सैर के लिए कम से कम डेढ़ महीना चाहिये। कुल्लू घाटी की शोभा अप्रैल मई मास में वर्णनातीत होती है। सब ओर पहाड़ियों पर रंग बिरंगे फूल होते हैं। कहीं खुरमानी का गुलाबी फूल है, तो कहीं आडू का। अलूचे, सेंव, नासपाती, आलूबुखारा, सब ही प्रकार के पेड़ फूले हुए होते हैं। गेहूँ के खेत का रँग हरे से भूरा होना आरम्भ होजाता है और जगह २ पर धान की पौध लगा दी जाती है। जब गेहूँ की फ़सल कट जाती हैं तब जगह२ पर धान की पौध की हरियाली बहुत ही सुहावनी प्रतीत होती है। मई के महीने में ब्रास के फूलों की अरुणिमा तो आश्चर्य-जनक होती है। ऊँचो २ गिरिशिखाओं पर हर प्रकार के जँगली फूल जून जुलाई और अगस्त के महीनों में खिलते हैं। दिन प्रतिदिन नये२ रँग निकलते हैं। वनस्पती विद्या के विद्यार्थियों के लिए यह गिरिशिखायें बड़ी ज्ञान प्रद हो सकती हैं। शिमले के मार्ग में पड़ने वाली जालोरीजोत इन दिनों में बहुत ही सुहावनी होती है। जोत के ऊपर पहुंच कर दूर दूर का ऊँची गिरिशिखाएं दिखाई दे जाती हैं जिन पर समस्त वर्ष बरफ़ पड़ी रहती है।

साथ में जो नक़शा दिया गया है इसमें कुल्लू के मुख्यस्थान, और मार्ग दिखाये गये हैं जिन के देखने से पाठकों को यह लेख ठीक समझ में आसकेगा। मार्ग इत्यादि के वर्णन करने से यह लेख निरस होगया है किन्तु भावुक यात्रियों की सुविधा के लिए मार्गों का वर्णन करना आवश्यक था। अन्य लेखों में कुल्लू की मनोरञ्जक बातों का वर्णन किया जावेगा। —

पेलेस्टाइन और सीरिया का शिशिर।

पेलेस्टाइन और सिरिया का वसन्त सर्वोत्तम है पर इस ऋतु को छोड़ सुहावनेपन में यहां दूसरा स्थान शिशिर का है मिस्र से आने वाले यात्री को गाज़ा और दमस्क के बीच अत्यन्त मनोरम प्रदेश मिलता है। इस समय गर्मी का अन्त हो जाता है और समुद्र की ओर से शीतल हवायें चलती हैं। रात को पानी बरस जाती है। जिस से दिन में नया जीवन जान पड़ता है। हर एक रेगिस्तान गर्मी की धूल को दफन कर देता है, और बर्बादी के निशान ढूंढ़ने से भी नहीं मिलते।

मिस्र से इस प्रदेश के (ईसाइयों के) तीर्थ स्थानों की रेलयात्रा भी विचित्र भाव उत्पन्न करती है। इस रेल द्वारा मोतियों की लड़ के समान ऐतिहासिक नगर पुहे हैं। जितने दुनिया की और किसी बिरली ही लाइन पर मिलते हों।

शेष पृष्ट १७ पर देखिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

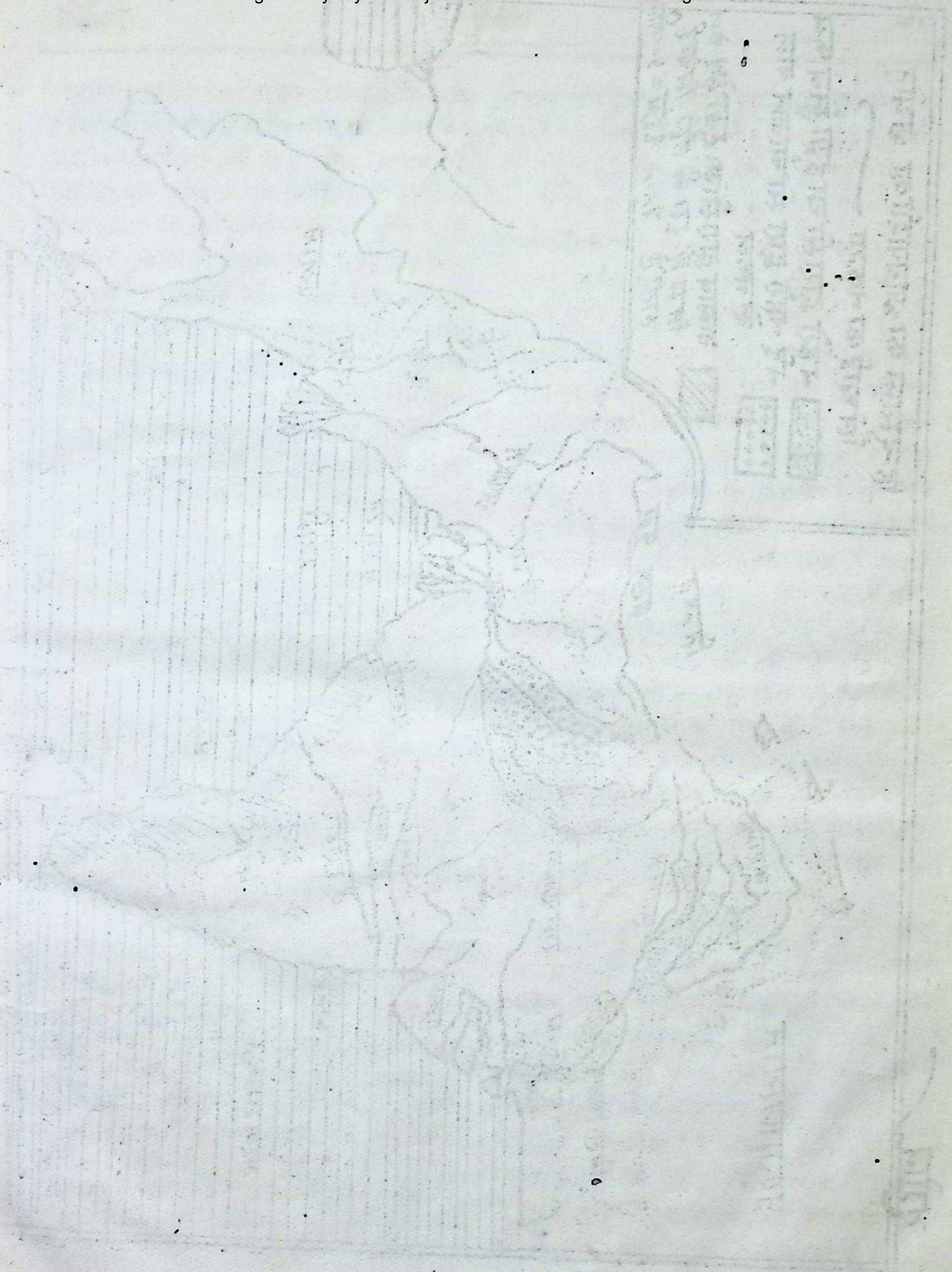

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

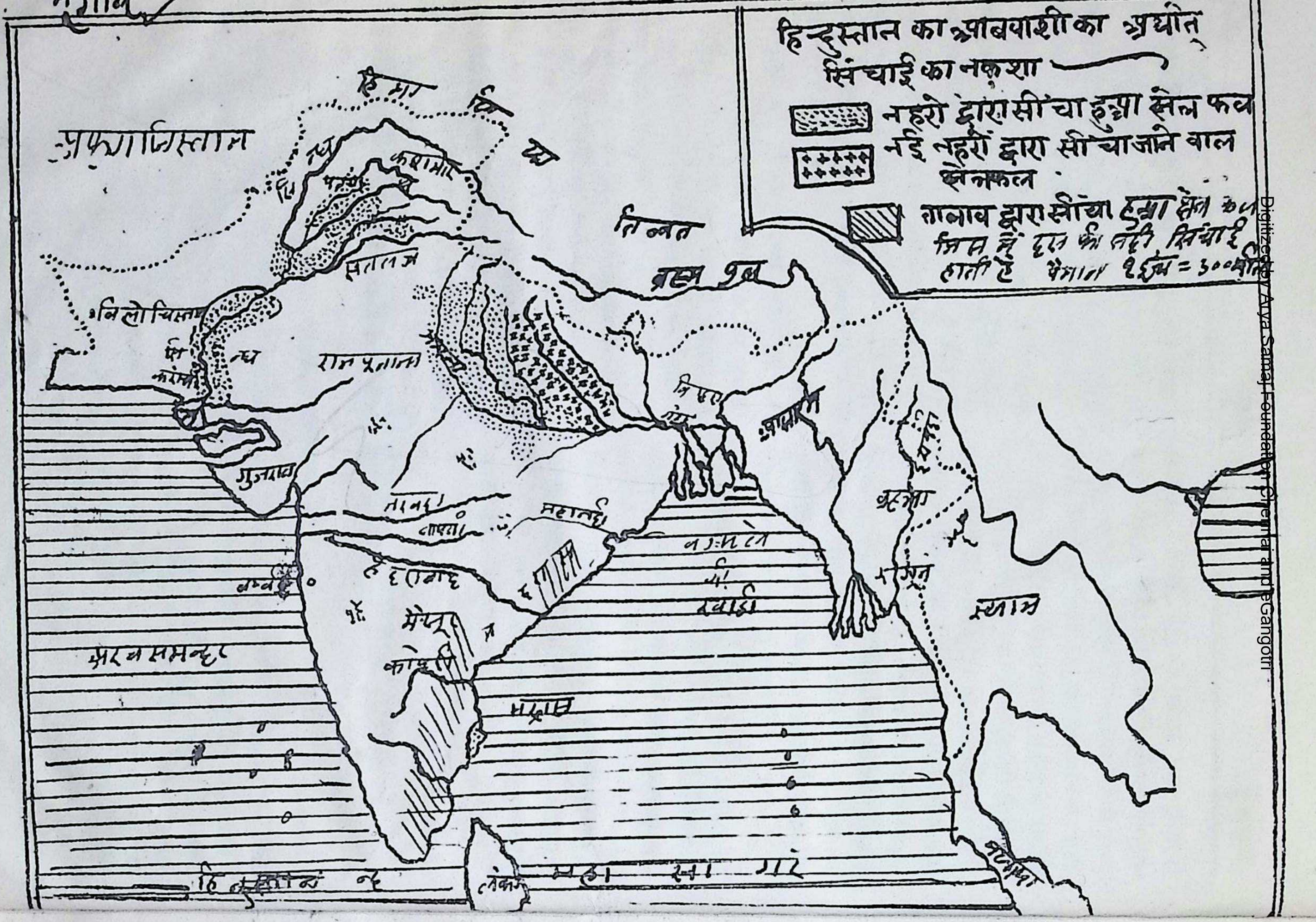

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान में सिंचाई की नई योजनायें ।

लेखक—प्रो० डी—पन्थ लखनऊ, विश्व-विद्यालय ।

"हिन्दुस्तान में कुछ भाग ऐसे हैं जहां खेती के लिये पर्याप्त वर्षा होती है, कुछ भागों में सदा इतनी कम वर्षा होती है कि लाग वहां खेती करने का नाम नहीं लेते । इन दोनों के बीच १० लाख वर्ग मील क्षेत्रफल सिंचाई का ठीक २ प्रबन्ध न होने से दुर्भिक्ष का ग्रास बना रहता है ।

भारतीय इरीगेशन कमीशनके इस कथनसे सिंचाई की उपयोगिता स्पष्ट ही है। पर इतना मानना पड़ेगा कि सरकार ने लाभदायक सिंचाई की किसी भी योजना से मुख न मोड़ा।

हिन्दुस्तान में सिंचाई की अनेक रीतियां हैं। बहुत सा क्षेत्रफल सरकार की सहायता बिना लिये ही किसान अपने बल से सींचते हैं। कुआं खोदकर, तालाब से पानी निकाल कर अथवा धाराओं में बन्द बांध कर वे ऐसा करते हैं । हिन्दुस्तान में प्राय: २५ लाख कुओं से लगभग सवा करोड़एकड़ ज़मीन सींची जाती है । इन कुओं में किसानों ने एक अरब के लगभग रुपया लगाया है ।

सरकारी सिंचाई की योजनाओं में ताल और नहर दोनों ही का समावेश है । मद्रास में इस तरह के पचास हज़ार तालाब हैं जिनसे तीस लाख एकड़ ज़मीन सींची जाती है ।

नहरें दो प्रकार की हैं।

पहिली कोटि की नहरों में सदा बहने वाली नदियों से पानी लिया जाता है । दूसरी कोटि की नहरों के लिये बड़े २ जलाशय बनाये गये हैं । जिन में से नलों को पानी मिलता है । जलाशयों से प्राप्त करने वाली नहरें दक्खिन व मध्य प्रान्त आदि में हैं । हिमालय से निकलने वाली स्थायी नदियां उत्तरी भारत की नहरों को पानी देती हैं । ये नहरें या तो बाढ़ के काम की होती है, अथवा सदा सिंचाई करती हैं । बाढ़ के काम की नहरें सिन्ध प्रान्त में हैं जिन्हें सिन्ध नदी के बाढ़ से पानी मिल जाता है स्थायी नहरें संयुक्त प्रान्त व पंजाब में हैं ।

देशी राज्यों को छोड़ ब्रिटिश भारत में दोनों प्रकार की नहरों से लगभग पौने तीन करोड़ एकड़ ज़मीन सींची जाती है यह समस्त फसली क्षेत्रफल का लगभग $\frac{१}{८}$ भाग है ।

सब प्रधान तथा शाखा नहरों व राजवाहों की लम्बाई ६७ हज़ार मील है इसका सब से बड़ा भाग अर्थात् एक करोड़ पाँच लाख एकड़ पंजाब में है । पंजाब की नहरों से देशी राज्यों में भी ७ लाख एकड़ ज़मीन सींची जाती है ।

दूसरा नम्बर मद्रास का है जहां ७३ लाख एकड़ ज़मीन सींची जाती है। इसी प्रकार सिन्ध में ३३ लाख और संयुक्त प्रान्त में २६ लाख एकड़ ज़मीन नहरों द्वारा सींची जाती है। सिंचाई पर इस भांति १९२२ में ८१ करोड़ रुपया खर्च हुआ है लगान लगभग दस करोड़ और नहरों पर चलताउ ख़र्चा लगभग ४ करोड़ और पूंजी पर ७ प्रति सैकड़ा का लाभ रहा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन नई प्रसिद्ध योजनाएं ये हैं।

(अ) सारदा नहर (ब) सक्कर बारेज और (स) सतलज घाटी नहर।

(अ) रुहेल खण्ड को सारदा नहर की योजना में सारद किच्छ जो रुहेलखड़ को सींचती है और सारदा अवध कैनाल शामिल है। सारदा अवध नहर सारदा किच्छ से ७ वें मील पर निकलती है। और दक्खिन पूरब की ओर जाती है। प्रधान सारदा नहर साढ़े सत्तरह मील के बाद तीन शाखाओं में विभक्त हो जाती है इन शाखाओं से नहरों और राज-वाहों का जाल रायबरेली और बाराबंकी ज़िलों की पूर्वी सीमा तक फैला हुआ है। इस योजना में प्रधान नहर ४७८ मील, राजवाहे और शाखाएं ३३७० मील और फुटकर नहर १०० मील लम्बी है कुल योग ३९४८ मील का है। यह नहर १३,६८,००० एकड़ भूमि सींचेगी। इसमें ७५ लाख पौंड (पौने ग्यारह करोड़ रुपये) की लागत बैठेगी पर लागत पर सवा सात रुपये सैंकड़े का लाभ होगा तनकपुर के पास बन बासा से काम शुरू हुआ है।

(ब) सक्कर बारेज़ से सिन्ध प्रान्त में खेती फैल जावेगी। असंख्य बाढ़ की नहरें जो सिन्ध का पानी खींच कर खेती में सहायता पहुँचाती हैं सिन्ध प्रान्त की ज़रूरत को ठीक २ पूरा नहीं कर सकतीं।

लाइड बारेज़ सक्कर।

लाइट बारेज सिंध में ८० लाख एकड़ ज़मीन को पानी पहुँचा सकेगी वास्तव में नियमित रूप से सींचा हुआ क्षेत्रफल पचास साठ लाख एकड़ होगा जो मिस्र की समस्त खेती से भी अधिक है। यह बांध दुनियां भर में सब से बड़ा है इसमें ३५ लाख पौंड खर्च होगा जो मिस्र के सर्व प्रसिद्ध अस्वान बन्द से भी १० लाख पौंड अधिक ख़र्चीला है। बांध में ६६ विशाल दरवाज़े होंगे जिन में ५० टन फौलाद के फाटक होंगे, सात बड़ी २ नहरें होंगी सब से बड़ी रोहरी नहर होगी। इसकी लम्बाई २०५ मील होगी। पर इसकी शाखाओं की कुल लम्बाई २३०० मील होगी। इस प्रकार जल-शक्ति भूमि प्रतिवर्ष बीस लाख टन (लगभग ५ करोड़ ६० लाख मन) अन्न और कपास पैदा करेगी। समस्य योजना में १८ करोड़ रुपये खर्च होंगे।

(स) सतलज-घाटी नहर सतलज नदी के दोनों किनारों पर उत्तर की ओर ब्रिटिश राज्य में और दक्षिण की ओर भावलपुर रियासत में फैली हुई है। इस समय अधिकतर बाढ़ ही की नहरे हैं। सतलज घाटी नहर वर्त्तमान नहरों को अप्रैल से अक्तूबर तक नियमपूर्वक पानी पहुँचावेगी इनका क्षेत्रफल भी बढ़ जावेगा। साथ ही साथ यह नहर उन ऊंचे किनारों को स्थायी रूप से सींचेगी, जो इस समय खेती के योग्य नहीं हैं।

इस सम्बन्ध में चार जलागार होंगे तीन सतलज नदी में और एक सतलज व चुनाव के संगम पर होगा। इन सबसे १८ नहरें निकलेंगी। ये नहरें मानसून के अवसर पर प्रति सैंकड ४८५०० घन फीट पानी पहुँचावेंगी और शरद ऋतु में प्रति सैंकड सात हजार घन फीट पानी निकलेगा। पचास लाख एकड़ से भी अधिक ज़मीन सिंचेगी। २० लाख एकड़ ज़मीन पंजाब में, २८ लाख एकड़ भावलपुर रियासत में और साढ़े तीन लाख एकड़ बीकानेर राज्यमें इस योजना से सिंचा करेगी। इसका परिणाम यह होगा कि साढ़े सैंतीस लाख एकड़ मरू-भूमि बसने योग्य हो जावेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंका के मोती

ले०—श्री रामप्रकाश

लंका के मोती

१६ वर्ष के पश्चात् मिनार की खाड़ी में मोती फिर से निकाले जाने लगे हैं। ये लङ्का के मोतियों के तट लङ्का के प्रथम राजा विजय से प्रसिद्ध हैं जिसने ईसा से छः शताब्दी पहिले अपने ससुर मदुरा के राजा को लगभग दो लाख के मोती भेंट में भेजे थे। लङ्का के इतिहास से प्रगट है कि वहां मोती बहुत दिनों निकलते रहने के बाद कई बार बन्द हो गये। क्योंकि घूंघे और मोती के कीड़ों पर प्रतिकूल धाराओं और हिंसक मछलियों का आक्रमण होने लगा।

मोती के स्थान का ठीक ठीक पता लगाने और उस पर चिन्ह डालने के लिये तीन सरकारी जहाज़ों से बड़ी सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त डुबकी लगाने की रीति विजय के समय से प्रायः ज्यों की त्यों चली आ रही है। किनारों के प्रथम दर्शन लाल, उज्जवल, तथा इन दोनों रंगों के मिले हुवे झन्डों से सूचित होते हैं। जो हिन्द महासागर में पानी के ऊपर पौं फटने के समय हिलते रहते हैं। तब दूर पर नावें और उनके पीछे मछली पकड़ने वाली नावें जो धूनी कहलाती हैं, और जिनका अग्रभाग और रस्सियां पुराने समय की होती हैं, फिरती हुई दिखाई देती हैं। तदन्तर वे डुबकी लगाने वाले मनुष्यों और मण्डूकों से (वे मनुष्य जो डुबकी लगाने वाले को रस्सी की सहायता से पानी में उतारते हैं और फिर सीप सहित उसको ऊपर खैंच लेते हैं) भरी हुई दिखाई देती हैं।

तामिल और अरबी

ज्योंहि नावें किनारे पर लगती हैं त्योंहि डुबकी लगाने वाले मनुष्य शीघ्र ही अपने कपड़ों को उतार कर फेंक देते हैं। तथा तख़्ते और मस्तूल भिन्न २ प्रकार के रंगे हुवे कपड़ों और रुपट्टों से लटकाये जाते हैं। भारत के दक्खिन समुद्र तट से तामिल और फ़ारिस की खाड़ी से अरबी डुबकी लगाने वाले आते हैं। अरबी तामिल लोगों से अच्छी डुबकी लगाने वाले होते हैं। वे उनसे अधिक शांत नियमानुसार काम करने वाले और पानी में अधिक समय तक रहने वाले होते हैं। अभी हाल में परीक्षा करने से यह विदित हुवा है कि एक मनुष्य ४२ फ़ीट गहरे पानी के अन्दर केवल दो मिनट रह सकता है। किन्तु इसका साधारण समय ६० व ७० सैकिंड का है।

डुबकी लगाने वाला मनुष्य रस्सी से बंधे हुवे पत्थर या धातु के बोझ पर एक पैर को रखकर पानी के अन्दर जाता है। तब ख़ाली हाथों से वह एक दूसरी रस्सी पकड़ लेता है जिसमें सीपों के लिये एक जालीदार थैला बंधा रहता है। शांत जल में उस का शरीर भीतर ही भीतर चलता हुवा मालूम होता है। तदन्तर वह जल्दी से फ़ावड़े द्वारा घूंघों को जालीदार थैले में भरता है। फिर रस्सी खिंच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है और वह ऊपर आ जाता है। अरबी अपने हाथों से थैले पर डांड लगाये रहते हैं। तामिल बीच में रस्सी को छोड़ देते हैं और तैरते हुवे ऊपर आते हैं। डुबकी लगाने वाले मनुष्य दो दो की जोड़ी में काम करते हैं। और उनके इकट्ठे किये हुवे घोंघे धूनियों पर वोरों में भरे जाते हैं। धूनी के पिछले भाग में आग जली हुई रहती है। और जब डुबकी लगाने वालों को ठंड लगती है तो वे इसके चारों तरफ़ कुछ समय के लिये बैठ जाते हैं। किन्तु वे इस में अधिक समय व्यर्थ नष्ट नहीं करते।

थैलों पर मौहर लगाना

दोपहर के बारह बजे डुबकी लगाना बन्द होता है, और मौहर लगाने वाला कर्मचारी अपनी नाव से उतर कर एक धूनी से दूसरी धूनी में पहुँचकर थैलों पर घण्टे भर तक मौहर लगाता रहता है। यह काम पूरा होते ही धूनियां रस्सों के चारों ओर इकट्ठी हो जाती हैं और मारी छुकड्डी (मोतियों का शहर) की ओर चल देती हैं। तब वे बड़े बड़े बादवानों से खेई जाती हैं। तथा जब वे एक साथ चलती हैं तो ऐसा ज्ञात होता है कि मानों चिड़ियों का एक समूह अपने पवित्र भूरे और सफ़ेद परों से रस्सियों के पीछे उड़ रहा हो। जब वे बन्दरगाह के समीप आती हैं तो नाव वाले अपने अपने रस्सों को अलग कर देते हैं। तब उन में एक बड़ी दौड़ होती है क्योंकि प्रत्येक नाव वाले तट पर सब से प्रथम जाने के लिये और सीपों को उतारने के लिये उत्सुक रहते हैं।

डुबकी लगाने वाले मनुष्य सीप के बोरों को सिर पर रखकर समुद्र तट पर लाते हैं। इसके पश्चात् राजकर्मचारी उन सीपों को गिन लेता है। उन में से एक तिहाई भाग डुबकी लगाने वालों का होता है। तब वे एक बड़ी खुली जगह में जाते हैं जहां उनका बाज़ार लगता है। मनुष्यों के समूह के समूह तामिल, सिंहाली मलायी और मूरी लोगों से जो एक दूसरे को धक्का देते और चिल्लाते हुवे फिरा करते हैं, सीपों को ख़रीदने के लिये प्रतीक्षा करते रहते हैं।

नीलाम

मारीछुकड्डी नगर के मैले भाग में जो मोतियों के कारण एक नगर बन गया है झोंपड़ियां होती हैं जिनमें मोती बेचने वाले जो गंभीर और डाढ़ी वाले भरती होते हैं अपने पीतल के सन्दूकों को जिन में मोती होते हैं, घेरे हुवे बैठे रहते हैं। वे भिन्न २ प्रकार की पीतल की चलनियां रखते हैं, जिन में वे मोतियों को छांटते हैं। तथा एक वृक्ष के नीचे डुपट्टा बांधे हुवे मोतियों को साफ़ करने वाले बैठते हैं।

नौ बजे सरकारी गुमाश्ता कचहरी में सरकारी भाग का निलाम करता है। बोली तीन भाषाओं में यानी सिंहाली, तामिल और अरबी में लगाई जाती है। कभी कभी अत्यन्त कोलाहल होता है जिसको दुभाषिये शीघ्र ही रोक देते हैं। कुछ सीपों के ढेर सड़ने के पहिले ही बेच दिये जाते हैं जिनका मूल्य एक सहस्र से कम नहीं होता है। तब ये तूतियों को भेजे जाते हैं जहां सड़ने के लिये सीपियों का ढेर लगा रहता है। शेष कई बार छाने और फटके जाते हैं। यहां तक कि बचे हुवे ढेर में से अत्यन्त छोटे से मोती के रह जाने की भी आशा नहीं रहती। मोतियोंके सम्बन्ध में यही काम सब से मनोरञ्जक होता है। किन्तु उस मनुष्य को एक बड़ा इनाम दिया जाता है जो सड़े हुवे सीपों के ढ़ेर में से एक सफेद चमकता हुवा मोती पाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध विषय ।

(समुद्र उथला हो गया)

बिस्के खाडी में पनडुब्बा जहाज,

बिस्के की खाड़ी में ४८ अंश और ७ सेकंड अक्षांश तथा तीन अंश ५७ मिनट देशान्तर में समुद्र का सब से गहरा भाग समझा जाता था फ्रांसीसी मल्लाह इससे खूब परिचित हैं यह एक मील से भी ऊपर गहरा था पर हाल में एक कमाडंर ने गहराई नापी तो ६० ही गज पाई गई। इस प्रकार एक क्षण समुद्र तल के उठ आने से लोग अचम्भे में पड़ गये हैं और जापान के समान ज्वालामुखी पर्वत के फटने की आशंका करते हैं। पर एक दूसरे विद्वान का कहना है कि समुद्र का उठना इन्चों में सम्भव होता है न कि हज़ारों गज़ों में। जापान के भूचाल के पहिले सेन फ्रांसिस्को ही में सबसे अधिक ऊंची तली उठ आई थी और वह भी केवल दो फ़ीट। इससे सम्भव है इसके जांचने में भूल हो गई है। पहिली बार कदाचित लोगों ने ज्वाला मुखी पर्वत के मुंह को नापा हो। फिर ऊपरी ढाल को। कुछ भी हो वहां भूचाल सम्बन्धी गड़बड़ी की आशंका की जाती है।

* * * * *

एक घन सेण्टीमीटर अर्थात् १/१६ घन इन्च में ३० ट्रियलिनर परमाणु में छोटे बड़े सभी तरह के होते हैं। कुछ नंगी आंख से दिखाई देते हैं कुछ प्रवल खुर्दबीन ही से देखे जा सके हैं कुछ इतने छोटे होते हैं कि प्रबल से प्रबल खुर्दबीन के सामने भी अदृश्य रहते हैं ये एक दूसरे से ठोकरें खाकर फटते रहते हैं। जिससे समुद्र की धाराओं के समान इनमें भी गति होती है।

* * * * *

पूर्वी तिब्बत में बनस्पति अध्यन के लिये गतवर्ष कुछ लोग दारजिलिंग से गये थे अक्सर फूलों के पौधों के बीज इकट्ठे किये गये थे मार्ग दो सौ मील के बाद सांपू नदी के किनारे २ जो कहीं २ दो सौ मील लम्बी कन्दरा बनाती है यहां पर नदी की साधारण चौडाई ८०० फीट से केवल सौ पचास ही फीट रह गई नदी के पानी से किनारे की पहाड़ी की चोटियां दो हजार फीट होगई दृश्य बड़ा ही मनोरम था।

कान्तारा नगर ही में ऐसा विदित होता है मानो फिराउन ने अपनी फौज़ यहां दजला और नील नदियों के बीच रख छोड़ी हो। अजर अमर गाज़ा में डैगन के त्रिलीत किले की ओर दृष्टि जाती है। जहां समसन की शक्ति के आगे मन्दिर चकना चूर हो गया। जाफा विलायती साधुओं का स्मरण दिलाता है। रमलेह अरबी लोगोंके अनुसार मक्खी और पिस्सू के लिये मशहूर हैं।

यरूसलीम नगर पहाड़ी पर बसा है और पेलेस्टाइन के इतिहास भर में प्रसिद्ध किलों में से एक रहा है पहाड़ी पर होने से यह दूर से दिखलाई देता है। यरूसलीम वास्तव में धार्मिक केन्द्र है ईसाइयों के लिये पवित्रतम स्थान है ऊंटनी सवार अरबी लोगों के लिये भी मक्का मदीना को छोड़ तीसरा स्थान इसी शहर का है। पर छोटे-बड़े राजाओं की दृष्टि में यह विद्रोही नगर गिना जाता था। मिस्र से यरूसलीम पहुंचना सुगम है इसी भांति यरूसलीम से दमस्क जाना सरल है यहां यात्रियों को ठहरने की भी सुविधा है। दमस्क बद्दू-अरब का केन्द्र है रेगिस्तान के बद्दू यहीं माल ख़रीद ने और आनन्द उड़ाने के लिये आते हैं।

लबनान की सुन्दरता—लबनान सुन्दरतामय है विविध दृश्य मनोहर चरागाह, अनुपमपर्वत क्रिया स्विटज़रलैंड व आस्ट्रियाके कुछ हिस्सों से मिलते हैं। विशेषता यह है कि निर्मल आकाश और नील समुद्र के भी दर्शन हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गेहूं

गेहूं की खेतीमें पहला काम जोतना है जिस से कांटे व झाड़ी नष्ट हो जाते हैं फिर ज़मीन टूटकर या पटे चलाकर मुलायम हो जाती है और नमी अन्दर बनी रहती है। पुरानी प्रथा के अनुसार जुताई हल बैल, कहीं कहीं भैंसों व घोड़ों की सहायता से होती है। पर आजकल उन्नत देशों में यह काम मोटर ट्रैक्टर से लिया जाता है। इन मशीनों से एक ही समय में कई कुंड हो जाते हैं और आदमी से सौगुना काम होता है खेत के अनुसार ये हल भी छोटे बड़े होते हैं। मशीन के बड़े २ हल बड़े ही खेतो में काम आते हैं।

फिर खेतों में क्यारियां बांध कर बीज बो दिया जाता है पहिले मूठ भर के बीज फेंका जाता था अब यन्त्र द्वारा बीज डाला जाता है जिस से बहुत कम नष्ट होता है। बीज बराबर के फ़ासले पर पड़ता है और रेखा भी सीधी ही रहती है।

आश्विन यानी सितम्बर मास के बाद शीघ्र ही गेहूं बो देना चाहिये दो सप्ताह में अंकुर फूट आते हैं क्योंकि अब भी कुछ कुछ ज़मीन गरम रहती है छोटा पौदा जड़ पकड़ते ही सरदी सहने में समर्थ हो जाता है। जड़ मज़बूत होती जाती हैं पर वसन्त से अधिक पहिले पौदा थोड़ा ही बढ़ता है। घास कांटे आदि नराकर अलग कर दिये जाते हैं।

पत्तों के बढ़ते २ बाली आती हैं फिर बाली में दाने आते हैं। काटने का काम हंसिये से होता है। बहुत से उन्नत देशों में मशीनें फसल काटती हैं और पूली बाँधती हैं पर ये मशीनें समथल में ही उपयोगी होती हैं क्योंकि ऊंची नीची ज़मीन पर उनके फल टूटने का डर रहता है। पूलों को पैर में इकट्ठा करके उनपर दाँय चलाते हैं। गाहने के बाद सैलाकर गेहूं को भूसे से अलग करते हैं। बहुत से देशों में यह सब काम मशीन द्वारा होता है।

किसान अपने ख़र्चभर को घर में छोड़ शेष गेहूं को पास के शहर की मंडी में ले जाता है। कुछ देशों में किसान बाज़ार में अनाज ले जाने के बदले केवल नमूना लेजाते हैं भाव ठहर जाने पर उसी मेल का गेहूं पहुँचा दिया जाता है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रत्येक किसान के दफ़्तर में तार लगा होता है। फ़सल के दिनों में मिनियापालिस शिकागो और बफेलो आदि शहरों का भाव हर घण्टे तार द्वारा आता रहता है। इन शहरों में किसानों के गुमास्ते रहते हैं अनुकूल भाव होने पर गेहूं बेचने का हुक्म एक दम भेज दिया जाता है। यही नहीं ये किसान हिन्दुस्तान के अकाल, अरजेन्टायन की गरम आंधियों और डेन्यूब की बाढ़ का भी पूरा पूरा ज्ञान रखते हैं।

धीरे धीरे गेहूं चक्की में पिसने जाता है ये चक्कियां पानी, हवा भाप या हाथ से चलाई जाती हैं आटा छन जाने पर रोटी के काम आता है।

वास्तव में गेहूं शीतोष्ण अक्षांशों की उपज है। जिन हालतों में यह सफलता पूर्वक उगता है उनका दिग्दर्शन उत्तरी अमरीका के मध्य भाग अर्थात् कनाडा के मेनिटोबा प्रान्त और संयुक्तराष्ट्र के उत्तरी व दक्षिणी डाकोटा के पूर्वी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागों में भली भांति होता है। यहां गेहूं वसन्त ऋतु में बोया जाता है इसलिये यहां की सरदी का उन पर बहुत कम असर होता है। जुलाई मास में पकने के समय यहां का तापक्रम प्राय ८० सेंटीग्रेड होता है इसी प्रकार गेहूं के पौदे के लिये उसके जीवन काल में वर्षा का भी क्रम नियत है। आरम्भ काल में कुछ पानी की आवश्यकता पड़ती है पर पकने के समय धूप अच्छी होती है। चूंकी गेहूं को अधिक पानी आवश्यक नहीं है इसलिये यह अक्सर खुश्क प्रदेशों के लगे लगे उगता है। दुनिया के स्टीपी प्रदेशों में इसी से इस की खेती दिनों दिन बढ़ रही है। कुछ भागों में गेहूं के खेतों के आगे जमीन चराई के अतिरिक्त और किसी काम की नहीं मिलती। उत्तरी अमरीका में गेहूं की खेती की पच्छिमी सीमा बीस इंच वार्षिक वर्षा की रेखा से मिलती है। पच्छिमी योरुप में गेहूं की खेती अनावृष्टि से नहीं वरन् अतिवृष्टि से परिमित होती है। ब्रिटिश द्वीप के पूर्वी भाग ही में गेहूं होने का एक प्रधान कारण यह है कि पच्छिमी भाग में पकने के समय खूब पानी बरसता है।

बहुत दूर उत्तर में गरमी में भी सरदी इतनी पड़ती है कि गेहूं का पकना असम्भव हो जाता है। दक्खिनी साइबेरिया मंचूरिया और उत्तरी पूर्वी चीन राजनैतिक शान्ति स्थापित होने पर ख़ूब गेहूं पैदा कर सकते हैं। साइबीरिया और मंचूरिया में कम आबादी और सड़कों का अभाव अड़चन का कारण हैं। चीन में लोग गेहूं के बदले अभी दूसरी फसलें उगाना पसन्द करते हैं।

गेहूं को नियत मात्रा में गरमी और नमी चाहिये इसलिये संसार के भिन्न २ भागों में भिन्न २ अवसरों पर गेहूं पकता है। भू-मध्य सागर के प्रदेशों में गेहूं बसन्त में बोया जाता है और मई व जून में काटा जाता है उत्तरी रूसमें अधिक सरदी होने से थोड़ी देरी से बोया जाता है और धीरे धीरे पकता है इस लिये कटनई अगस्त के अन्त में होती है। भारतवर्ष में फ़र्वरी से लेकर अप्रैल के अन्त तक भिन्न २ भागों में गेहूं कटता रहता है। सरदी के दिन में वर्षा का अभाव होने से नहरों व कुओं से सिंचाई भी करनी पडती है। दक्षिणी गोलार्द्ध में गरमी हमारे सरदी के दिनों में होती है इसलिये वहां गेहूं की फसल नवम्बर से जनवरी तक कटती है इस भांति किसी न किसी देश में हर महीने गेहूं की फसल कटती रहती है उनका क्रम इस प्रकार है:—

गेहूं कटने का महीना	देश
जनवरी	आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, अरजेंटाइन रिपब्लिक और चिली देश
फ़र्वरी	भारतवर्ष।
मार्च	भारतवर्ष और ऊपरी मिस्र।
अप्रैल	भारतवर्ष, मेक्सिको, क्यूबा, निचल मिस्र, सिरिया, फ़ारिस, और एशियाई, रूम।
मई	मरक्को, अल्जीरिया, ट्यूनिस, एशियाई, रूम के उत्तरी भाग, चीन, जापान, टेक्सास और फ्लोरिडा।
जून	अफ़ग़ानिस्तान, जापान, भू-मध्य-सागर के प्रायद्वीप, दक्खिनी-फ्रांस, केलिफोर्निया, ओरेगान, ऊँटा तथा संयुक्तराष्ट्र के मध्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गेहूँ कटने का महीना

महीना	देश
	वर्त्ती व पूर्वीभाग जो ४०° अक्षाँश के नीचे हैं।
जुलाई	फ्रांस, आस्ट्रिया, हंगारी, दक्खिनी रूस, उत्तरी सँयुक्त राष्ट्र, आंटेरियो और क्यूबेक।
अगस्त	इँगलैंड, बेल्जियम, हालैंड, जर्मनी और कनाड़ा के पूर्वीभाग।
सितम्बर	स्काटलैंड, स्वेडन, नार्वे और रूस।
अक्टूबर	फ़िनलैंड व उत्तरी रूस।
नवम्बर	पेरू व दक्षिण अफ्रीका।
दिसम्बर	बर्मा और साउथ आस्ट्रेलिया।

गेहूं की उपज प्रति एकड़ के हिसाब से पुराने देशों में जहां नये ढँग से काम लिया जाता है सब से अधिक है पुराने ढँग की खेती से उतनी उपज नहीं होती। प्रति एकड़ उपज के अनुसार क्रम इस प्रकार है :—

देश	सेर
इँगलैंड	६०
बेल्जियम	५६
हालैंड	५६
न्यूज़ीलैंड	५२
जर्मनी	४८
मैनीटोबा	४८
फ्रांस	४०
आस्ट्रिया	३१६
हँगारी	३१
सँयुक्तराष्ट्र	२६
इटली	२४
अरजेंटीना	१८
विक्टोरिया	१६.८
रूस	१६
भारतवर्ष	१४-२६

चीन की दीवार।

चीन के सम्राट चीहांगटी ने लाखों मनुष्यों को चीन की दीवार बनाने में लगा दिया। इस का कारण यह था कि मंगोलिया और मंचूरिया के स्टेप्स में रहने वाले तार तारीगिरोह दक्षिणी चीन की बढ़ती नहीं देख सकते थे अतः अपने मज़बूत टट्टुओं पर सवार हो ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी में उत्तरी दर्रों के रास्ते से यहां टूट पड़े। चीहांगटी इनकी लूट मार का मतलब समझ गया उसने सोचा यदि इन असम्भव दलों को बन्द करने के लिये पूरी २ रुकावट न पैदा करदी गई तो एक समय ऐसा आवेगा जब इन का सामना करना कठिन हो जावेगा। इन्हीं विचारों से इस बड़ी दीवार की नींव पड़ी लेकिन इसके बनने का काम १५४७ ई० तक होता रहा इस वर्ष इसके ऊपरी भागोंको छोटी२ मीनारों से सुशोभित किया गया सारी दीवार तीन सौ हज़ार मील से भी अधिक लम्बी है बीच बीच में सैकड़ों मीलों के महराब हैं कहीं २ दोहरी भी की गई है। समुद्र तट के निकट शांहैकवान से लेकर कांसू प्रान्त के भीतरी भाग तक चली गई है। बुर्जों पर पहरा रक्खा गया।

लोहे जड़ी हुई फ़ाटकों से प्रवेश होता है हरेक पहाड़ की चोटी पर ख़बर भेजने के लिये आग जलाई जाती थी जिस का इशारा पाते ही चीनी फ़ौजें घटना स्थल पर पहुँच जातीं और लुटेरों को नष्ट कर देतीं। इस तरह का सीमा-युद्ध सदियों तक चलता रहा। तारतारी लुटेरों को चीन से निराश हो और प्रदेश तलाश करने पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
113725

भारतवर्ष के प्रसिद्ध स्थानों का साप्ताहिक तापक्रम और मासिक वर्षा का चक्र।

	स्थान	७ सितम्बर		१४ सितम्बर		२१ सितम्बर		२८ सितम्बर		१ जून से सितम्बर के
		परम ताप क्रम	अल्प ताप क्रम	परम ताप क्रम	अल्प ताप क्रम	परम ताप क्रम	अल्प ताप क्रम	परम ताप क्रम	अल्प ताप क्रम	अन्त तक की वर्षा
संयुक्त प्रांत	मेरठ	९६-५	८२-०	९६	८०-५	९५-५	८०-०	७९-७	७४-६	१९-७
	आगरा	९७-७	७५-९	९८-३	७४-४	९८-८	७५-०	९२-३	७४-०	२९-८५
	इलाहाबाद	८१-६	७३-५	८८-५	७८-०	९४-८	७५-८	९४-९	७७-५	५९-१
	बनारस	८०-२	७४-६	८४-५	७९-६	९५-७	७६-६	९२-२	७६-०	३६-६३
	झांसी	९४-६	७५-०	९५-९	७७-०	९७-६	७६-८	९४-४	७२-७	२९-५६
	कानपुर	९०-६	७७-९	८९-८	७७-०	९५-४	७७-५	९१-६	७४-२	४१-५६
	लखनऊ	९३-२	७६-१	९०-९	७५-८	९६-५	७६-८	९३-२	७३-१	४७-११
	पेशावर	९९-३	७८-६	९६-४	६७-८	९७-६	७१-२	९३-२	६९-६	५-९४
	श्रीनगर(काश्मीर)	८५-४	६०-५	८१-३	५०-१	८२-३	५०-५	७४-७	४९-९	७-४४
पंजाब	लाहौर	१००-७	८०-५	१०१-८	७३-३	१०२-७	७४-३	९५-७	७०-९	१५-९
	शिमला	६८-१	५९-०	६८-३	५७-०	६७-३	५६-८	६१-४	५३-८	४१-३२
	देहली	९८-०	८३-५	९८-०	८१-१	९७-८	८०-५	९१-०	७५-०	१८-९४
	शिलांङ्ग(आसाम)	७६-०	६१-०	७४-९	६५-०	७३-९	५८-०	७४-१	५५-१	३४-०७
	रंगून (ब्रह्मा)	८५-०	७५-१	८७-०	७६-५	८४-०	७६-६	८०-४	७८-२	७७-५३
	पटना (बिहार)	८१-१	७७-६	८६-८	८०-६	९२-७	८०-४	८७-९	७६-९	२८-३६
बंगाल	कलकत्ता	९१-३	८०-८	९०-९	८०-९	९०-२	८०-७	८८-९	७८-५	४०-३९
	दार्जिलिङ्ग	६७-२	५७-४	६८-८	५८-६	६४-४	५६-३	६६-९	५३-२	१०९-६७
	कटक(उड़ीसा)	८९-४	७८-२	८६-५	७७-२	९०-७	७७-३	९०-४	७८-०	६२-८३
	मदरास	९५-१	८१-२	९६-२	७६-७	९१-३	७७-०	९१-५	७६-८	११-३९
	कोलम्बो	८७-०	७६-६	८८-५	७३-६	८८-६	७४-०	८८-६	७४-१	२१-२२
	बम्बई	८६-१	७६-२	८५-५	७६-४	८८-६	७४-०	८८-६	७४-१	४७-३५
	पूना	८६-४	६७-९	८६-८	६७-४	८९-५	६९-७	९३-०	७१-१	१२-१०
	मैसूर	८६-६	६७-०	८५-५	६६-०	८४-१	६७-०	८५-८	६९-०	९-६५
राजपूताना	अजमेर	९३-२	७८-८	९२-६	७२-८	९५-६	८०-४	९५-४	७३-२	८-६४
	जयपुर	१००-०	७७-०	९८-५	७४-९	९९-६	७५-८	९४-७	७२-५	११-६३
	नागपुर	९१-३	७६-९	९१-६	७४-८	९३-५	७५-३	९३-२	७०-९	५१-२७
	हैदराबाद (सिंध)	९४-९	७७-९	९८-८	७६-०	९८-८	७४-४	९८-८	७३-३	०-९७
बिलोचिस्तान	जैकोबाबाद	१००-९	७८-६	१०४-५	७५-८	१०१-९	७४-६	१००-१	७७-०	४-१७
	कोटा	९१-२	४८-४	८५-२	४३-९	८५-४	४२-१	८२-१	४२-६	०-९९

नोट:—ताप क्रम फारेन हाईट—अंशों में और वर्षा इञ्चों में दिखलाई गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त-समाचार तथा सम्पादकीय विचार।

१ सिम्बर-क्वीन्सलैंड में १८,००० रेलवे कर्मचारियों की हड़ताल के कारण हजारों टन गन्ने सड़ गये और राखरुपटन में डक के २६ थैले पड़े रह गये।

२ सितम्बर-मरक्को युद्ध में चिन्ता के कारण स्पेन क महाराज, अलफांसो भी चिन्ता-कुल हो रहे हैं उन्होंने कई सभाओं में सभापति बन कर भाषण दिये।

३ सितम्बर-इराक़ की पार्ल्यमेंट ने ग्रेटबिटेन से मित्रता सूचक प्रस्ताव पास किया है।

४ सितम्बर-लैट्टविया की पोलिस के सम्वादियों के विद्रोह का पता लगाया है।

६ सितम्बर-शिमीनो सेक्री द्वीप में उतर ने वाले हवाई जहाज़ों को जापानी पुलिस ने सोवियट सरकार के हवाई जहाज़ों को शीघ्र चले जाने की आज्ञा दी है।

७ सितम्बर-अन्तराष्ट्रीय सभा ने मौसूल के विषय में वादविवाद वन्द कर के एक उपसमिति बनाई है।

६ सितम्बर-जिन शर्तों को फ्रांस व स्पेन ने समाचार पत्रों में प्रकाशित किया है उनके आधार पर रिफ-नेता अब्दुल करीम सन्धि की बात चीत करने को तैयार है।

१० सितम्बर-भयानक तूफ़ान के कारण कोरिया का दक्खिनी भाग तथा क्यूशो का उत्तरी भाग उजड़ गया है दो२ गाड़ियां टूट गईं और ढाई सौ घर गिर गये और फूसन के निकट ४० घर बह गये।

११ सितम्बर-जेविड्रस की राजधानी स्वेदा खाली करदी गई है। फ्रांसिसों के विरुद्ध मुसलिम नेताओं ने इस्लामी दुनिया से सहायता की प्रार्थना की है।

१३ सितम्बर-इरावदी फ्लोटिला कम्पनी के नौकरों की हड़ताल अब तक जारी है।

१४ सितम्बर जर्मन में हवाई जहाज़ बड़ी संख्या में उन्नति कर रहे हैं कम से कम ४२ जहाज़ काम में आते हैं।

१६ सितम्बर बग़दाद से दमस्क जाने वाले क़ाफ़िले पर बद्दूओं ने हमला किया। दो मारे गये और तीन घायल हुए।

१७-सितम्बर मौसूल प्रदेश के इसाई गावों को तुर्क लोग घेर रहे हैं और गांव निवासियों कोउत्तर की ओर जानेके लिये विवश कर रहे हैं।

१८-सितम्बर बम्बई के हड़तालियों की दशा बड़ी चिन्ताजनक हो रही है उनकी संख्या सवा लाख से भी अधिक हो गई है।

१६ सितम्बर-चीन में बिदेशियों के स्वतन्त्र अधिकर के विषय में पेकिंग में सभा होगी।

२० सिस्तबर-आग लगने से टोकियो जापानी डायट (सभा भवन) का एक भाग नष्ट हो गया है।

२१ सितम्बर-बेल्जियम के राजा रानी ने दार्जिलिंग के लिये प्रस्थान किया।

२३ सितम्बर-करांची में नहाते हुए कुछ सैनिक डूब कर मर गये।

२८ मरसी सुरंग तैयार करनेके लिये लन्दन में इञ्जिनियर नियत होगये हैं सुरंग की लम्बाई ढ़ाई मील तथा खर्चा साढ़ेसातकरोड़ रुपया होगा।

३० सितम्बर हांगहो नदी का प्रधान दक्खिनी बांध टूटजाने से १५०० वर्ग मील मील में बाढ़ पहुँची है हज़ारों को हानि हुई है और सैकड़ों जानें गई हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्नोत्तरी।

१४९२ ई० के सितम्बर मास में कोलम्बस ने ब्रह्मद्वीप से पूर्व इस रहस्य मय सिवार से भरे हुए जल में जहाज़ लगाया तभी से लोगों ने तरह २ की डरावनी बातें सारगासोली (घास के समुद्र) के विषय में गढ़ डालीं। बहुतों ने बतलाया कि जहाज़ घास में फँस गये और निकल न सके यहां तक कि मल्लाह घास से तड़प २ कर मर गये। कुछ लोगों ने उड़ा दिया कि घास के किनारों में भूतों का फेरा होता है और ये भूत पास आने वाले जहाज़ों पर हमला करते हैं। चूंकि मल्लाह इन घास से भरे हुए भागों में खेना नहीं जानते थे और न जाना पसन्द करते थे इसलिये यह कल्पित कहानियां कालान्तर में सच्ची समझी जाने लगीं।

हाल में अमरीकन प्रोफ़ेसर बीबे इन्ही भीषण भागों में अपना जहाज़ ले गये। आप विश्वास दिलाते हैं कि लोगोंने डरों को बहुत कुछ बढ़ावा दिया है। बहने वाली सिवार और घास के किनारे लगातार जुड़े हुए नहीं हैं वरन् जहां तहां बिखरे हुए हैं। यह समझना कि सैकड़ों मीलों तक फांसने वाली सिवार को छोड़ और कुछ नहीं है बड़ी भूल होगी। वास्तव में यह घास का द्वीप समूह है जिनमें होकर कोई ही जहाज़ आजा सकता है। चूंकि कोलम्बस के ही तीन छोटे २ जहाज़ों को गुज़रने में कोई कठिनाई नहीं पड़ी इसलिये इन गल्पों की उत्पत्ति ही नहीं होनी चाहिये थी। इस का यह अर्थ नहीं है कि सर्दी की ऋतु में यह जहाज़ों के लिये रोचक बन जायँगे क्योंकि सिवार भरा हुआ पानी मल्लाहों को कभी नहीं भाता। पर लोगों ने जैसा

क्यूबेक का १६०८ ई० में फ्रांसीसी अन्वेषक सचैम्पलेन ने सेन्टलारेन्स नदी के उस भाग में बसाया था जहां से जहाज़ नहीं चल सक्ते थे। उस समय दुश्मन से सुरक्षित रखने के लिये पुराना शहर पहाड़ी पर बसाया गया। सैनिक दृष्टि से यह जिबराल्टर के समान अजय था इसी लिये इसे अमरीकन जिबराल्टर भी कहते हैं। सेन्टलारेंस अपना मीलों का विस्तार सकरा करते २ यहां एक मील के लगभग कर लती है पर गहराई अधिक होजाती है। पास ही सेन्टचार्ल्स नदी भी सेंटलारेंस नदी में मिलती है। पहाड़ी एक दम सीधी उठी हुई है। तिस पर शहर के चारो ओर मज़बूत किला बन्दी है। इन बातों के होते हुये यदि क्यूबेक शत्रू को दुर्गम प्रतीत हो तो आश्चर्य हा क्या ? अंग्रेज़ी सेनापति ने धोखे से आक्रमण करके ही फ्रांसीसियों पर विजय पाई थी यद्यपि आज दोनों ही सेना पतियों के स्मारक गवर्नर के भवन को सुशोभित कर रहे हैं। इसी नाम के प्रान्त की राजधानी होने से राज-सभाभवन विश्व विद्यालय आदि और भी अनेक विशाल भवन हैं। पुराने मकान गिरजाघर आदि विचित्र प्राचीन फ्रांसीसी ढंगके बने हैं, सड़कें भी मोड़ेदार और ढालू है आधुनिक व्यापारिक क्यूबेक पहाड़ी की तलहटी में बसा है। घाट, गोदाम, कारखाने आदि सब नीचे ही हैं। क्यूबेक प्रान्त में चरागाह और बन बहुत हैं जिससे चमड़े औरलकड़ी के यहां बड़े २कारखाने हैं आराकी मिलोंसे बुरादा बहुत मिलता है और भी कुछ लड़की मिलती है जो कागज़ बनाने ही के लिये ठीक होती है

शेष पृष्ठ २४ पर देखिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल के संरक्षक ।

१ राय बहादुर व ला० सीताराम ऐम०ए० ऐल० ऐल० बी० ऐम० ऐल० सी मन्त्री देव नागरी हाई स्कूल मेरठ।

२ चौ० मुख्त्यारसिंह बी० ऐ० एल० ऐल० बी चेयरमैन डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मेरठ।

३ बा० बृजनाथ मित्थल बी० ऐस० सी० ऐल० ऐलबी० वकील मेरठ ।

४ ला० शिबचरन दास रईस ज्वायन्ट सेक्रेटरी देवनागरी हाई स्कूल मेरठ।

५ श्रीयुत पं० गंगादत्त पांडे बी० ए० ऐल०

६ ऐल० टी पी० डबल्यू० मार्श स्कायर आई ऐल० कलक्टर एन्ड मैजिस्ट्रेट मेरठ।

७ बी० ई० जी० हस्से स्कायर आई० सी० ऐस० कोर्ट एन्ड सेशन जज मेरठ।

८ श्रीयुत नन्दराम वैश्य बी० ऐ० सेकन्ड मास्टर देव नागरी हाई स्कूल मेरठ।

९ बा० रघुनाथ सहाय शातिर बी० ए० मास्टर देवनागरी हाई स्कूल मेरठ।

१० श्रीयुत रामचन्द्र S. D. O. Military works Allahabâd) ।

११ श्रीयुत डाक्टर लालचन्द्र जी सिविल हासिस्पटल भामू (अपर ब्रह्मा)

१२ श्रीयुत पंडित चन्द्रिका पांडे मैनेजर स्टेट जियावाड़ा (लोवर ब्रह्मा

१३ श्रीयुत पंडित भगवानदीन जी दुबे ३० बुकिंग स्ट्रीट रंगून (ब्रह्मा)।

१४ श्रीयुत पडित पुरुषोत्तम जी तिवारी पैडी ब्रोकर पज़न हौंग, रंगून

१५ श्री० मदन मोहन वर्मा एम० ए० जीवाजी गंज ग्वालियर।

इससे यहां कागज़ बनाने ही के भी कारखाने हैं। आगे चलकर सेंटलारेंस गहरी कर दी गई है जिससे बहुतसा व्यापार मांटरियल पहुँच गया है। फिर भी इस समय भी रलन जहाज़के व्यापार लिये क्यूबेक वहत प्रसिद्ध हो रहा है॥

इन्हें भयानक समझरक्खा था वह बात नरहेगी।

प्रश्न १६ का उत्तर—हेली फैक्स नोवास्कोशिया प्रायद्वीप के पूरवीतट पर बीच में बसा हुआ है इसका बन्दरगाह वहत बड़ा गहरा और बड़े से बड़े जहाज के लिय भी सुगम है।

सेन्टलारेंस नदी का मुहाना सर्दी के दिनों में बर्फ़ से घिर जाता है। यह बन्दरगाह उन दिनों में भी बरफ़ से मुक्त होने के कारण पूर्वी कनाडा के समुद्री व्यापार व यात्रियों के लिए बड़ा उपयोगी सिद्ध होता है। कनाडा की सघन जन संख्या के केन्द्र से दूर पड़ जाने के कारण यह अधिकतर घाट और स्टेशन ही के रूप में व्यापार के लिये सहायक होता है। इस की जन संख्या ४०,०००ही के लगभग है पर यह समुद्री अड्डे के लिये उपयुक्त हैं क्योंकि यह कनाडा के अटलांटिक की ओर स्थित बन्दरगाहों में से प्रधान तथा योरुप के बहुत निकट है इसी से यह ब्रिटिश जहाज़ी स्टेशन भी है। प्रान्त की राजधानी होने से विशाल भवम इसकी शोभा को बढा रहे हैं।

अगले मास के लिये प्रश्न

प्रश्न १७—दक्षिण अमरीका के कौन २ से भाग ऊन, रबड़, गेहूं, शक्कर और क़हवा विशेष रूप से पैदा करते हैं और क्यों ?

प्रश्न १८—योरुपके कितने प्रदेशों में लकड़ीकाटने, शराब बनाने, मछली मारने और गेहूं उगाने का काम होता है और क्यों ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(Regd. No. A—1333)

भारतीय भाषाएँ।

[हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन अंक]

वर्ष २] नवम्बर १९२५ [संख्या ७

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एक मात्र सचित्र मासिक पत्र ।

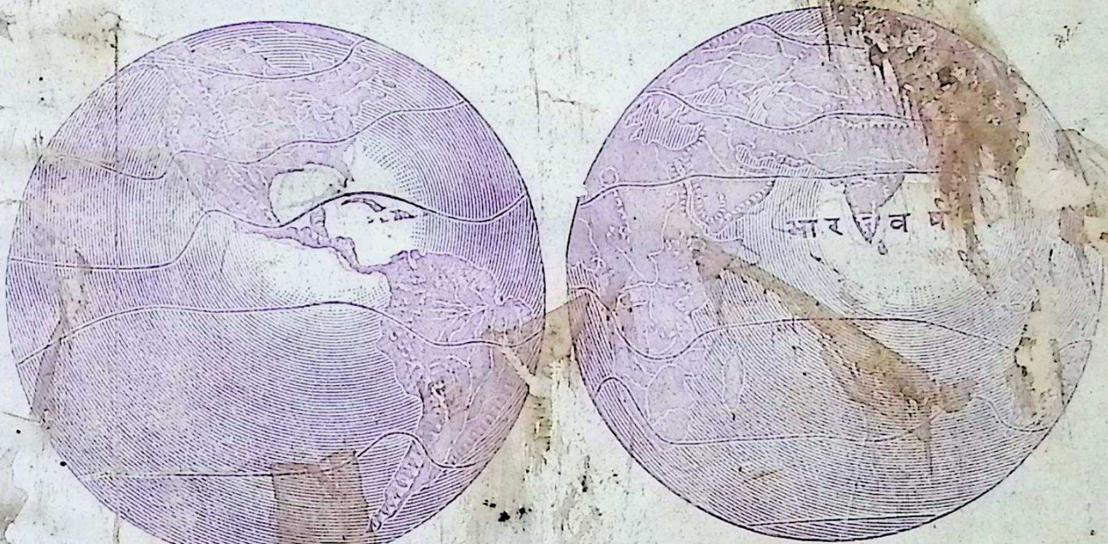

भूगोल अनुभव हेतु यह, "भूगोल" पत्र अमोल है ।
"भूगोल" कहता है निरख, भू गोल है भू गोल है ।

सम्पादक—
रामनारायण मिश्र बी० ए०

वार्षिक मूल्य
सर्व साधारण से ३)] संरक्षकों से १०)

एक प्रति का मूल्य
[चार आने ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची ।

१-इरानी भाषाएं	१	५-हिन्दी भाषा के अनेक रूप	१३
श्रीयुत रामप्रकाश जी		६-उर्दू भाषा का संक्षिप्त इतिहास	२०
२-तिब्बतिं भाषा	५	श्री० रघुनाथ सहाय जी शातिर बी० ए०	
३-कूकी चीन भाषा	७	७-सम्पादकीय समाचार	२६
४-उड़िया भाषा	६		

भूगोल की नियमावली ।

(१) 'भूगोल' प्रत्येक मास की १० तारीख तक प्रकाशित होगा ।

(२) इसका अग्रिम वार्षिक मूल्य सर्व साधारण से मेरठ में २॥), बाहर ३) और विदेशों में ५) है । एक प्रति का मूल्य ।) है, नमूने की कापी बिना मूल्य किसी को नहीं दी जायगी ।

(३) संरक्षकों से उनके सम्मानार्थ १०) वार्षिक है । आजन्म संरक्षकों से केवल एक बार १००)

(४) पत्र व्यवहार के समय, चन्दा भेजते समय अथवा कार्यालय से किसी प्रकार की लिखा पढ़ी करने के समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये ।

(५) लेख, कविता, समालोचनार्थ पुस्तकें और बदले के पत्र सम्पादक 'भूगोल' मेरठ के पते से आने चाहियें ।

और मूल्य तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र मैनेजर 'भूगोल' मेरठ के पते से आने चाहियें ।

(६) किसी लेख या कविता को घटाने बढ़ाने, प्रकाशित करने या न करने, लौटाने या न लौटाने का अधिकार सम्पादक को है । सम्पादक जिन लेखों का लौटाना उचित समझते हैं उनका डाक और रजिष्ट्री का व्यय प्राप्त होने पर वे लौटाये जायेंगे अन्यथा नहीं ।

(७) इस पत्र में प्राय: सब लेख भूगोल सम्बन्धी ही होंगे ।

(८) सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबन्ध लेखक महाशय को करना होगा ।

संम्पादक—'भूगोल' मेरठ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रजभाषा (सूरदास)

ब्रज घर घर सब भोजन साजत ।
सब के द्वार बधाई बाजत ॥
सकट जोरि लै चलै देव बलि ।
गोकुल ब्रजबासी सब हिलिमिलि ॥
दधि-लोनी मधु साजि मिठाई ।
कहँ लगि कहउं सबै बहुताई ॥
घर-घर तें पकवान चलाये ।
निकसि गांव के गोइंडे आये ॥
ब्रजबासी तहँ जुरे अपारा ।
सिन्धु समान न वार न पारा ॥
पैंड़े चलन नहीं कोउ पावत ।
सकट चले सब भोजन आवत ॥
सहस सकट चले नंद महर-के ।
अवर सकट कितने घर घर के ॥
सूरदास प्रभु महिमा सागर ।
गोकुल प्रकटे हैं हरि नागर ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

{ Sanctioned as a Periodical for use in High, Normal and Middle Schools of Central Provinces and Berar by the Director of Public Instructions C.P. }
Also recommended for reading rooms and libraries by the Secretary Text Book Committee U. P.

वर्ष २ } मार्गशीर्ष–१९८२–नवम्बर सन् १९२५ ई० { सं० ७

ईरानी भाषायें।

(लेखक—श्रीयुत रामप्रकाश जी)

पूरब की ओर बढ़ते २ ईरानी लोग यारकन्द तक पहुँच गये। किन्तु उनकी भाषा जो जातीय भाषा थी केवल पामीर में ही रही। और सैरीकोल पूर्वी सीमा बन गई। उन मनुष्यों ने जिन्हों ने पच्छिम की ओर यात्रा की थी सर्व को ही नहीं जीता किन्तु ईरान् बिलोचिस्तान तथा लगभग सम्पूर्ण अफगानिस्तान उनके हाथ में आया। आरम्भ काल में ईरानी भाषा दो विभिन्न भाषाओं में जो साधारणतया परसी और मिडिया कहलाती थीं बटी हुई थीं। इसका लिखित प्रमाण मिलता है। फारसी रेकमन्डियों की सरकारी भाषा थी। इसको दारा प्रथम ने भी अपनी सरकारी भाषा बनाया था। जिसका प्रमाण बहिस्तों के लेखों से पाया जाता है।

तीसरी शताब्दी से सातवीं शताब्दी तक यह अर्ध फारसी या ससिनदियों की पहलवीं में परिणत होती रही। और अंत में आधुनिक फारसी भाषा बन गई। फ़ारसी भारतीय भाषा नहीं है। किंतु मुसलमानी राज्य में यह भारतीय साहित्य की प्रधान माध्यम हो गई। तौ भी फारसी की सब से ज़्यादा मशहूर पुस्तकें और कोष भारतवर्ष में ही बनाये गए थे। इसके विपरीति मिडिया खस्ता की भाषा थी। यह केवल मिडिया (उत्तर पच्छिमी फारसी) में ही नहीं किन्तु सम्पूर्ण पूर्वी ईरान में भी बोली जाती थी। इसी से दो विख्यात ईरानी भाषायें अर्थात् बलोची व पश्तो जो भारतीय भाषाओं में से निकली है। इनके अतिरिक्त पामीर और सैरीकोल की ग़लचाभाषायें भी इसी से निकलीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलोच्च ।

दक्खिन की ओर से इनमें सब से प्रथम बलोच्च भाषा आती है समस्त ईरानी भाषाओं में इसका बाहरी रूप अत्यन्त विलक्षण है। इस में शब्दों के दे-रूप अब भी प्रचलित हैं जिन को फारिस में नष्ट हुवे १००० वर्ष बीत चुके हैं। जैसा इसके नाम से ही प्रगट होता है यह विलोचिस्तान की प्रधान भाषा है । भूगोलानुसार यह मध्य पहाड़ियों के द्राविड़ भाषा के बोलने वाले बरूहियों से दो भाषाओं में बांट दी गई है। एक भाग उत्तर का और दूसरा भाग मकरान के दक्खिन पच्छिम का है । इस की दक्खिनी सीमा अरब का सागर है जो लगभग सिन्ध नदी के मुहाने से ५८ अंश पूर्व देशान्तर तक है। उत्तर की ओर यह क्वैटा तक फैली हुई है। और पच्छिम की ओर यह हलमन्द की घाटी तक पहुँच गई है। सिन्ध नदी की घाटी आर्य भाषाओं के बोलने वालों से भर हुई है। किन्तु बलोच्च की पूर्वी सीमा इसी नदी के किनारे २ पच्छिम की ओर डेरा गाज़ीखां तक पहुँच गई है । मकरानी की अपेक्षा उत्तरी विलोच्च भाषा ने भारत से बहुत से शब्द लेकर अपना कोष बढ़ाया है। वैसे तो दोनों भाषाओं में ही अरबी और फ़ारसी के अपभ्रंश पाये जाते हैं। बलोच्च शायद ही लिखी हुई भाषा कही जा सकती है यद्यपि फारसी और रोमन लिपि का प्रयोग इसके लिखने में हुवा है। गत मनुष्य गणनानुसार बलोच्च भाषा भाषियों की संख्या लगभग डेढ़ लाख थी।

पश्तो ।

बलोच के उत्तर में पश्तो है जो ब्रिटिश और स्वतन्त्र अफगानिस्तान की मुख्य भाषा है । स्वतन्त्र अफग़ानिस्तान में यह हज़ारा अर्थात् वह प्रदेश जो काबुल नदी के उत्तर में है, और जिसमें लघमान और काफिरस्तान शामिल है, की देशी भाषा नहीं है। पर अन्यत्र पर साधारणतया प्रयोग की जाती है। यह स्वात, बूनर और उस प्रदेश की जो सिन्ध नदी के पच्छिम से लेकर डेराइस्माईलखां के दक्खिन तक फैला हुआ है, प्रधान भाषा है । सिन्ध नदी प्राय इसकी पूर्वी सीमा के निकट है । किन्तु यह नदी इसकी पूर्वी सीमा नहीं कहीं जा सकती क्योंकि इसकी घाटी के नीचे का भाग आर्य भाषा भाषियों से भरा है। उत्तर की ओर पश्तो भाषा ने सिन्ध नदी को पार करके हज़ारा और रावल पिंडी के कुछ भागों में अपना अधिकार जमालिया है। पर यह भाषा बोल चाल में उस स्थान तक प्रयोग में आती है जहां कान्दिया नदी सिन्ध से मिलती है और जहां सिन्ध नदी दक्खिन की ओर को मुड़ती है। गत मनुष्य गणनानुसार ब्रिटिश भारतवर्ष में इसके बोलने वाले बारह लाख के लगभग थे। इसमें वह क्षेत्रफल भी सम्मिलित है जिसमें दो भाषायें बोली जाती हैं। पठान पश्तो भाषा को बोलते हैं। किन्तु हिन्दू आर्य भाषा को जो वहां हिन्दुको कहलाती है, बोलते हैं।

बलोच से भिन्न, पश्तो लिपिबद्ध भाषा है। इसमें लिपि स्वतन्त्र है । इसका आधार फारसी है। इसका साहित्य भी काफ़ी बढ़ा हुवा है। इसका अध्ययन न केवल अंग्रेज़ी विद्वानों ने वरन् रूसी, फ्रांसीसी और जरमनों ने भी किया है। इस भाषा के चुभने वाले स्वर इसके बोलने वालों तथा उनके पहाड़ी घरों के अनुकूल ही है पर और लोगों के लिये वे अत्यन्त कर्णकटु प्रतीत होते हैं। यद्यपि इस भाषा का उच्चारण मधुर नहीं है, तौ भी यह एक प्रबल और मानवी भाषा है । इसको कोई मनुष्य शुद्धता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ठीक तरह से बोल सकता है। यह बलोच के समान विलक्षण नहीं है। इस भाषा ने दूसरी भाषाओं के शब्द तो लिये ही हैं किन्तु इसने भार ीय भाषाओं का व्याकरण भी मिला लिया है। इस भाषा की दो प्रधान शाखायें हैं अर्थात् उत्तरी पूर्वी भाषा या पर्वती और दक्खिनी पच्छिमी भाषा या पश्तो हैं। इनमें उच्चारण के अतिरिक्त बहुत कम भेद है। इनमें एक नाम दो भिन्न प्रकार से बोला जाता है। इनमें से प्रत्येक उपभाषा है जिनमें अन्तर केवल स्वर के उच्चारण में होता है। उदाहरणार्थ अफरीदी उपभाषा में दीर्घ आकारान्त शब्द बहुतायत से मिलते हैं। पर वज़ीरी उपभाषा में आ के स्थान में ओ उ के स्थान में इ आदेश होता है।

औमुरी।

प तो से मिलती हुई पर पृथक एक दूसरी भाषा औरमुरी है। यह एक छोटी जाति से बोली जाती है। ये अपने को बारिकियों की जिन्होंने महमूद गज़नी को भारत के आक्रमण के समय साथ दिया था, सन्तान कहते हैं। यह कहा जाता है कि इन बारिकियों ने सोमनाथ के विख्यात फाटकों को लूटने में बड़ा प्राक्रम दिखलाया था। और इस से प्रसन्न होकर सुल्तान ने करीगोराम के चारों ओर का प्रदेश इनको सदा के लिये जागीर के तौर पर दे दिया था। पश्तो के सामान ही यह ईरानी भाषा मिडिया का अंग है यह पश्तो से भी अधिक स्वर रहित है इसमें एक ऐसा व्यञ्जन है जो ख़ के समान है और जिसका उच्चारण पठान भी कठिनता से कर सकते हैं।

गलचा

पामीर की ग़लचा भाषायें भी ईरानी से निकलने वाली हैं। इन भाषाओं के जन्म-स्थान बाक़ी, शिगनी, सरीकौली, इश्काशमी और मुनजानी अङ्गरेज़ी सीमा से बाहर हैं। किन्तु मुनजानी भाषा ने दोरा दर्रे द्वारा हिन्दुकुश को पार कर दिया है। यह भाषा चितराल की लियुतकूह घाटी में भी बोली जाती है जहां यह युदगाह के नाम से प्रसिद्ध है। यह मनजानी भाषा से भिन्न है और यह स्वतन्त्र भाषा बन गई है। हिन्दुकुश के पठार में ईरानी भाषाओं का प्रचार नाम मात्र को है। जब पहिले पहल आर्य पामीर में बसगये तब उन में से कुछ ने दर्रों को पार करके लघमान, काफिरस्तान, चितराल गिलगिट और काशमीर में अपना घर बनाथा। वे ऐसे समय में आये जब ईरानी भाषाओं की जड़ जमने न पाई थी। और उनके इस नये देश में उनकी भाषा कुछ २ ईरानी तथा आर्य पद्धती के अनुसार स्वन्तत्र रूप से आगे बढने लगी। भारतवर्ष के आर्य जो पंजाब में काबुल की घाटी से घुसे यहाँ की रहने वाली जातियों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। और उनका पिशाच अर्थात् मांसाधारी नाम रक्खा। समय के बीतने पर इस नाम में कई कहावतें जुड़ गईं।

पिशाच।

एक समय पिशाच जाति के मनुष्य वर्तमान् समय की अपेक्षा अधिक भाग में फैले हुवे होंगे। संस्कृत लेखक उनके उपनिवेशों को पच्छिमी पंजाब और सिन्ध में बतलाते हैं। और पिशाच भाषा कहे उदाहरण जिनका उन्होंने प्रयोग किया था उन शब्दों में पाया जाताहै। जिनको यूनानी लोगों ने उत्तरी पच्छिमी भारत में बोले जाने वाले नामों का अपनी पुस्तकों में उल्लेख किया है। दूसरा महाराजा अशोक के उस प्रदेश के शिला लेखों से मिलता है। सचमुच सिन्ध नदी के नीचे की घाटी में वहां की भाषा में इस भाषा का बहुत अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभाव है,वर्तमान् समयमें इन भाषाओंका अधिक प्रयोग पंजाब और सिन्ध में है। इनकी एक बडी अद्भुत लिपि है। वैदक मन्त्रों के कुछ शब्द आजकल भी यहां अपने प्राचीन रूपमें मिलतेहैं। जो भारतवर्ष में बहुत बिगाडकर बोले जातेहैं।

वास्तव में ये भाषाएं न ईरानी हैं न आर्य। किन्तु इसमें दोनों के बीच की हैं। इसके दक्खिन की ओर पिशाच भाषाओं में हिन्दुस्तानी मुहाविरे मिल गये हैं। यह परिवर्तन काश्मीरी भाषा में विशेष रूप से हुवा है जिसमें पिशाच शब्द नाम मात्र को रह गये हैं। और इस का प्रधान अंग आर्य भाषाओं से बना है जिस से काश्मीरी भाषा की काया इस प्रकार पलट गई है कि इसको आर्य भाषा कहना अनुचित न होगा। क्योंकि इसमें पिशाच भाषाओं के चिह्न अब भी नहीं आते।

वर्तनमान समय में असली पिशाच भाषाओं की शाखायें ये हैं पशाई जो अफगानिस्तान के लघमान में बोली जाती हैं। क़ाफिरी जिसकी प्रधान उपशाखायें बसगहली, बेई और कहलसा है; चित्राल की भाषा ख़ोवार, और गिलगिट तथा इस के आसपास की शीनहा हैं। शीनहा ही काश्मीरी भाषा का आधार है। इस से कई और भी मिली हुई भाषायें निकली हैं जो सिन्ध नदी की घाटी और स्वात काहिस्तानों में बोली जाती हैं इनके स्थान पर आजकल पश्तो का प्रचार बढ़ रहा है दूसरों की अपेक्षा ख़ोवार की स्थिति लगभग स्वतन्त्र है. और क़ाफिरी जो कई भागों में विभक्ति हो गई आपस में एक दूसरे से अधिक भिन्न हैं। समस्त पच्छिम की ओर वेसिन वैरी ईरानी मुनजानी से उच्चारण में मिलती है। सम्पूर्ण पिशाच भाषायें साहित्य से शून्य है। हाल में योरुपिय विद्वानों ने इन्हें लिपिबद्ध करना आरम्भ करदिया है इस प्रसंग में प्राचीन प्रचलित कथाओं के अनुसार जानने योग्य बात यह है कि बहद्कथा नाम अमूल्य पुस्तक जिसकी अब कोई प्रति प्राप्त न है! पहिलेपहल इसी पिशाच भाषामें रचीगईथी

सिन्धी।

सिन्ध व उस के अड़ोस पड़ोस की भाषा सिन्धी है इस भाषा का लहंडा अर्थात् पच्छिमी पंजाबी से घनिष्ट सम्बन्ध है। एकान्त भाग में होने से इस भाषा की पुरानी विशेषताएं अब भी ज्यों की त्यों हैं कभी सिन्ध में पिसाचों का एक उपनिवेश था उन की भाषा के चिन्ह अब भी कुछ २ सिन्धी में पाये जाते हैं। इस में बहुत कम साहित्य है जो है वह भी नवीन और विशेष कर मुसलमान पीरों का बनाया हुवा बृटिश शासन में आने के बाद यहां अब से लगभग ६५ वर्ष पूर्व फ़ारसी लिपि का प्रयोग हुआ। यदि हिन्दी प्रेमियों में इस समय जाग्रति होती तो वे वैदिक ऋषियों को प्राणप्यारी सिन्धु की घाटी में देवनागरी के बदले यवन लिपि को कभी भी न टिकने देते। फ़ारसी लिपि तथा मुसलमानों की अधिकता होने से फ़ारसी के शब्द सिन्धी एक दम बढ़ गए। इस भाषा की चार शाखायें हैं। सिरैकी अपर सिन्ध की लाड़ी लोअर सिन्ध की, थरेली, थर व रेगिस्तान की और कच्छी कच्छ को भाषा है। सिरो की लहंडा या पंजाबी से मिलती है। थरेली मारवाड़ी से मिल गई है। कच्छी भाषा सिन्धी और गुजराती का मिश्रण है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिब्बती भाषा ।

तिब्बत तथा तिब्बत को छूने वाले हिन्दुस्तान के कुछ पर्वतीय प्रान्तों की भाषा तिब्बती है। वास्तव में इस भाषा के बोलने वाले कुछ ही सहस्र हैं पर इसकी उपभाषाओं के बोलने वालों की संख्या अधिक हैं इसलिये इसका विवरण करना भी आवश्यक है। तिब्बत शब्द वेदों के त्रिविष्टिप शब्द का अपभ्रंश जान पड़ता है पर तिब्बत निवासी अपने देश को बोद-युल और अपनी भाषा को वादस्कद अथवा भोका कहते हैं । इसी से बदल कर भोटिया नाम पड़ गया है । आजकल भोटिया केवल इस सीमा के निवासियों को कहते हैं तिब्बत के लोग बहुधा हणिया कहलाते हैं। फिर भी तिब्बत शब्द प्रचलित हो गया है।

तिब्बती तथा इसकी उपभाषाएं समस्त तिब्बत, बालतिस्तान, लद्दाख आदि में बोली जाती हैं। श्रीनगर से द्रास तक जाने वाले मार्ग का ज़ोज़िल दर्रा आर्य्य-भाषा को तिब्बती भाषा से अलग करता है। यहीं पूरब की ओर एक अनिश्चत टेढ़ी विभाजक रेखा खींची जा सकती है। लाहौल, स्पिती, कुनावर, गढ़वाल, नैपाल, सिकम और भूटान के उत्तरी भाग हो इस रेखा को छू सकेंगे । इन प्रान्तों में तिब्बती-भाषा भाषी उत्तर से आकर यहां बसने ही वाले मिलेंगे। पूरब की ओर अधिक आगे बढ़ने पर चीन के सेचूआन प्रान्त में भी तिब्बती भाषा मिलेगी। समस्त प्रदेशों में बोली जाने वाली तिब्बती भाषा एकसी न रह सकी। भिन्न २ भागों में इसके अनेक रूपान्तर हो गये हैं। उच्च कोटि की प्राचीन साहित्य-भाषा बहुत ही सीधी सादी तथा रूढ़-शब्द-प्रधान थी। धीरे २ इस में तद्धित और विभाक्त आदि भाग मिले और विलीन हो गये। मध्यभाग ही इस मूल भाषा का केन्द्र है। उपभाषायें पच्छिम से लेकर पूरब तक क्रमशः स्पिटी, न्यामक जद्द, गढ़वाली कागती, शर्पा, दंजोंका और ल्होका हैं। दार्जिलिंग के उत्तरी पश्चिम वाले तिब्बत प्रदेश में मंग्यूल, खोरसूम और मर्युल उपभाषाएं हैं मंग्युल नैपाल की पच्छिमी सीमा तक बोली जाती है। खोरसूम, कमायूं, गढ़वाल और बशार की सीमा तक पहुँचती है । मर्युल भाषा की प्रधानता पच्छिमी तिब्बत विशेषकर काश्मीर की लद्दाख और बालतिस्तान रियासतों में हैं। इस प्रकार तिब्बत की उपभाषाएं हिन्दुस्तान की पहाड़ी भाषाओं से बहुत कुछ मिली हुई हैं।

तिब्बती वर्णमाला का आधार क, ख आदि देवनागरी लिपि है। सातवीं शताब्दी में इस भाषा में सुन्दर साहित्य का समावेश होने लगा, तिब्बती भाषा की उत्पत्ति और उन्नतिके इतिहासमें दो काल विशेष प्रसिद्धहैं सातवीं सदी के मध्य में थोन्मी सम्भोट नामी स्रोंगत संगापो महाराज का मन्त्री भारतवर्ष में संस्कृत का अध्ययन करने के लिये भेजा गया कई सदियों तक अनुवाद द्वारा भारतीय ज्ञान का स्रोत तिब्बत में बहता रहा तिब्बती विद्यार्थियों का घोर परिश्रम और अदम्य उत्साह दोनों ही देशों के लिये हितकर हुआ। उन्होंने संस्कृत के अक्षय कोष की सहायता से तिब्बती व्यांकरण की नींव डाली। इस प्रकार नींव पड़जाने पर कुछ समय के पीछे इतिहास और पुराण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्धी तिब्बती सहित्य स्वतन्त्र रूप से वृद्धि पाने लगा।

दूसरा काल १२०५ ई० से आरम्भ होता है। मुसलमानों द्वारा मगध की उदन्तपुरी और विक्रम शिला नामी बौद्ध पाठशालाओं के नष्ट भ्रष्ट हो जाने तथा बख्तयार ख़िलजी के हाथों में बंगाल और विहार की राज्य श्री आ-जाने के पश्चात् काश्मीर के पंडित शाक्य श्री जी महाराज तिब्वत लौट आये। इसी समय दंडिन काव्यादर्श और क्षेमेन्द्र के अवदान कल्पलता नामी संस्कृत ग्रन्थों का तिब्वती भाषा में छन्दो बद्ध अनुवाद हुआ।

इसके उपरान्त भारत में मुसलमानी राज्य ज़ोर पकड़ता ही गया भारत से आध्यात्मिक ज्ञान का द्वार कदाचित सदा के लिये बन्द होते देख जिज्ञासु तिब्वती लोग चीन की ओर बढ़े। बौद्ध साहित्य की चीन में कमी न थी। इससे तिब्वत की प्यास तो बुझी पर भारतीय भाषा और भाव की छाप जो तिब्वत के साहित्य पर बैठ गई थी दिनों दिन मन्द पड़ती गई। अठारहवीं सदी के आरम्भ में चीन का यहां पूरा २ अधिकार जम गया तब से बोधि सत्व की छत्रच्छाया में तिब्वती भाषा की काया ही पलट गई, और उच्च प्रदेश में सर्वत्र इसी का प्रयोग होने लगा।

फिर भी हिन्दी भाषा-भाषियों के लिये यह भाषा कठिन न होगी। उपभाषाओं में अधिकतर उच्चारण में ही भेद है। दार्जिलिंग में मुझे कई ऐसे लामा मिले जो पाली के विद्वान् थे और संस्कृत बोल सकते थे साथ ही साथ उन्हें हिन्दी समझने और कुछ २ बोलने का अभ्यास हो गया था। एक पंजाबी महाशय जो तिब्वत से लौटकर आये थे तिब्वती भाषा ऐसी सुगमता से बोलते थे मानों यह उन की मातृभाषा हो। इस भाषा को सीखने का सबसे सस्ता और सरल उपाय तो ऐसे दुभाषियों द्वारा है। वैसे पाली व संस्कृत भाषा द्वारा भी तिब्वती का अध्ययन हो सकता है।

योरप के विद्वानों ने भी कई कोष व व्याकरण अग्रेज़ी फ्रांसीसी आदि अपनी २ भाषाओं में बनाये हैं उनकी सूची ग्रियर्सन महाशय के लिंग्विस्टिक सर्वे आफइंडिया नामी पुस्तक की तीसरी जिल्द के प्रथम खण्ड में भिन्न २ अध्यायों के अन्त में दी हुई है। बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी का मुख पत्र अक्सर तिब्वती भाषा पर लेख निकालता रहा है। कलकत्ता में इस के दफ्तर से और भी कुछ पुस्तकें अंग्रेज़ी में उपलब्ध हो सकती हैं।

मराठी।

गुजराती भाषा के दक्षिण प्रायः डामन से लेकर गो आतक अरब सागर के किनारे २ महाराष्ट्र अथवा मराठी भाषा का प्रदेश है। बम्बई प्रान्त में दक्खिन पठार का उत्तरी भाग तथा पच्छिमी घाट और अरब सागर के बीच की तट-स्थली मराठी भाषा भाषी है। दक्षिण में मध्य प्रान्त के उस पार उड़िया व तेलिगू से घिरी है। उत्तर में गुजराती और हिन्दी से इसकी सीमा बनी है पूरब की ओर यह छत्तीस गढ़ी हिन्दी से मिल जाती है। दक्षिण की ओर इसे द्राविड़ भाषायें घेरे हुए हैं।

मराठी में उच्च कोटि का प्रचुर साहित्यहै। मरहटों ने मुसलमानों को अपने देश से शीघ्र ही निकाल बाहर कर दिया था इस लिये इस भाषा में यवन शब्द बहुत ही कम हैं। यह देवनागरी लिपि ही में लिखी जाती है। इस की तीन शाखाएं हैं देशी मराठी पूना के चारों ओर तथा उत्तरी कोनकन में बोली जाती है। दक्खिनी कोनकन की भाषा कोनकणी है। तीसरी शाखा बरार और मध्य प्रान्त में हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूकी चीन भाषा।

कलकत्ता से २२० मील उत्तर पूर्वी बंगाल के मैदान से एक बड़ी पर्वत माला उठती है। यह पूर्व की ओर चौड़ी होती जाती है और क्रमशः गारो खासिया और नागा नामों से प्रसिद्ध है। इनकी ऊंचाई तीन हज़ार से बढ़ते बढ़ते मनीपुर में ६००० फ़ीट हो गई है। पूर्व की ओर आसाम प्रान्त में हिमालय की श्रेणियों से इनका संगम होता है यहां से दक्षिण की ओर फिर एक पर्वत समूह आरम्भ होता है जो मनीपुर की घाटी को घेरे हुए है और पच्छिम की ओर सिलहट के दक्षिण तक फैला है। चीन, लूशाई, टिपरा और चिटगांव के पहाड़ी प्रदेश में होती हुई यह पहाड़ी चली गई है। आगे और दक्षिण की ओर अराकान योमा में होती हुई नीग्रेस अन्तरीप तक पहुँचती है। इस प्रकार श्रेणी की पूरी लम्बाई ७०० मील है।

सब से अधिक ऊंचाई मनीपुर के उत्तर में है। वहां से आगे दक्षिण की ओर क्रमशः नीची होती गई है। अराकान के उत्तर में श्रेणी की ऊंचाई फिर कहीं कहीं ८००० फीट तक हो जाती है। यही पर्वत शाखाएं चारों ओर को फैल गई हैं दक्षिण की ओर पच्छिमी शाखाएं दब गई हैं जिससे इनके और समुद्र के बीच उर्वरा प्रदेश निकल आया है पूर्व की ओर अराकान योमा इरावदी के किनारे तक चले गये हैं।

कूकीचीन का यही निवास है इस भाषा के बोलने वालों की संख्या ढाई तीन लाख के लगभग है यह भाषा उदित बरमी भाषा से मिलती जुलती है लिखित से बहुत भिन्न है। तिब्बती से इसका जोड़ बहुत कम बैठता है।

आसामी भाषा।

लखीमपुर और ग्वालपाड़ा ज़िलों के बीच आसाम घाटी में बोली जाने वाली आर्य भाषा का नाम आसामी है। ग्वालपाड़ा ज़िले में यह रंगपुर जिले की पच्छिमी बंगाली से मिल जाती है। जिस ज़िले में यह बोली जाती है वहां की एक मात्र भाषा आसामी ही नहीं कहला सकती क्योंकि इसके साथ ही साथ कई अनार्य भाषाओं का भी प्रचार है। यह केवल घाटी की भाषा है। ब्रह्मपुत्रा के उत्तर व दक्षिण में पच्छिमी सिरे पर पहाड़ियां हैं जहां अन्य भाषाएं बोली जाती हैं। आसामी लोगों की कुछ टोलियां सिलहट कछार और मनीपुर में अपने पूर्वजों की भाषा को किसी न किसी रूप में अब तक रक्खे हुये हैं।

आसाम शब्द संस्कृत के असम (अद्वितीय) शब्द से बिगड़ कर बना है जिसे अहोम भी कहते हैं। अंग्रेज़ों ने इसे आसाम बना दिया इसीसे इनकी भाषा को असमिय या अहमिय न कहकर आसामी ही पुकारते हैं।

आसामी भाषा ही ऐसी आर्य भाषा है जो सब से अधिक पूर्वी सिरे पर बोली जाती है। केवल इसके पच्छिम में ही दूसरी आर्य भाषा अर्थात् बंगला है वैसे तीन ओर यह तिब्बती खासिया आदि अनार्य भाषाओं से घिरी हुई है। आसामी स्वतंत्र भाषा है अथवा बंगाली ही का अंग है यह एक विवाद-पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसंग है कुछ लोगों के मत से यह एक बंगला ही का अङ्ग गिनी जानी चाहिये। पर आसामी नवयुवक बंगला की यह प्रधानता स्वीकार करने को तय्यार नहीं हैं। आसामी व्याकरण के ७८ पृष्ठ पर निकोल महाशय लिखते हैं।

जैसा बहुत लोग समझ बैठे हैं आसामी बंगाली का अपभ्रंश मात्र नहीं है। यह एक प्रथक और स्वतन्त्र भाषा है जिसका शब्द कोष बंगाली के समान एक ही निकास स्थान अर्थात् संस्कृत से लिये गये हैं। पर यह संस्कृत भी बंगाल से नहीं आई वरन् उत्तरी भारत से आई है।

आसामी व्याकरण और साहित्य वृहत तथा प्राचीन हैं। इसकी प्राचीनता बंगला से कुछ भी कम नहीं, उन्नीसवीं सदी तक आसामी साहित्य बंगला की अपेक्षा किसी रूप में कम न था।

हाल में निस्संदेह शिवसागर में छापेखाने को ऐसी सफलता न हुई जो कलकत्ते में हुई। पर इससे आसामी भाषा की राष्ट्रीयता में कुछ भी अन्तर न पड़ा यह सदा से राष्ट्रीय भाषा रही है और आगे भी रहेगी। प्रधान आसामी भाषा शिवसागर के आसपास बोली जाती है।

समस्त आसामी बोलने वालों की संख्या १५ लाख के लगभग है। चूंकि आसामी लोग बहुधा घर पर ही रहना पसन्द करते हैं इस लिये आसामी भाषा भाषी अन्य प्रान्तों में बहुत कम पाये जाते हैं। गत मनुष्य गणना में इस प्रकार थे।

बंगाल की देशी रियास्तों में	६७३
बम्बई में	५
बरमा में	१
संयुक्त प्रान्त में	१६
पंजाब में	१
राजपूताना में	१६
मध्यभारत में	३५
कुल जोड़	७४७

आसामी लोगों को अपनी भाषा पर अभिमान है। इतिहास में यह खूब बढ़ी चढ़ी भाषा है। यहां भारत के कुरु पांचाली के समकालीन ने भगदत्त के विषय में इतिहास ग्रन्थ हाल में मिले हैं।

इसके अतिरिक्त धर्म सम्बन्धी ७० ग्रन्थ हैं। एक प्राचीन व लोकप्रिय कवि श्री हंकार नाम के थे राजा नरनारायण के समय में अब से साढ़े चारसौ वर्ष पूर्व हुए इन महाराज ने भी अनेक ग्रन्थ रचे हैं। रामाहर सरस्वती महाराज ने रामायण व महाभारत का अनुवाद आसामी भाषा में किया है। चिकित्सा व नाटकों पर भी अनेक ग्रन्थ आसामी भाषा में उपलब्ध हैं। १८१३ में इन्जील का अनुवाद भी इस भाषा में हो गया।

आसामी वर्णमाला देवनागरी ही की भांति है।

आसामी—एइ मकद्दमा मिसा। मैं तार घरत कोनो बस्तु सुर

हिन्दी—यह मुकद्दमा (मिथ्या) झूठा। मैं उसके घरमें कोई वस्तु चोरी

आसामी—

करिबालाई। ज़ोबा नासिलो कथा हैसी एई

हिन्दी—

करने के लिये गया नहीं था कथा है यह,

इस प्रकार यह भाषा यदि धीरे २ बोली जावे अथवा देवनागरी लिपि में ही लिखी जावे तो हिन्दी भाषा भाषियों को समझने में विशेष कठिनाई न पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़िया-भाषा।

उत्कल या उड़ीसा प्रान्त की भाषा उड़िया है। उड़िया भाषा प्रायः ८२,००० वर्गमील क्षेत्र-फल में बोली जाती है इसके बोलने वालों की संख्या लगभग ६० लाख हैं। इस भाषा का शुद्ध नाम उत्कलीव ओड्री है। सब से पुराने लेख महाराज नरसिंह देव द्वितीय के समय (१२६६ ई०) के इस भाषा में मिलते हैं। नरसिंह देव चतुर्थ के शिला लेख में बहुत से ऐसे वाक्य हैं जो उड़िया भाषा की प्रौढावस्था को सूचित करते हैं। उस समय की उड़िया भाषा वर्तमान उड़िया से लेखन-शैली व व्याकरण में बहुत कुछ मिलती है।

वास्तव में उड़िया भाषा आजकल के उड़ीसा प्रान्त ही में परिमित नहीं है। मिदनापुर और बालासोर ज़िलों के कुछ भागों में भी उड़िया ही बोली जाती है। सिंहभूम ज़िले तथा छोटा नागपुर के अन्तर्गत कई छोटी २ देशी रियासतों में उड़िया का प्रचार है। दक्षिण की ओर मद्रास प्रान्त के गञ्जाम और विज़ीगापट्टम के ज़िलों और उन से लगी हुई देशी रियासतों में अधिकतर उड़िया ही बोली जाती है। इस प्रकार आजकल के चार सरकारी प्रान्तों अर्थात् मद्रास मध्यप्रान्त बिहार और बंगाल में उड़िया भाषा बोली जातीहै

राजनैतिक सीमा।

उड़िया के पूरब की ओर बंगाल की खाड़ी उत्तर पूरब की ओर हल्दी नदी है जो मिदनापुर के कंटाई ताल्लुके को भी अलग करती है फिर यह बांकुड़ा ज़िले तक काली घाई के लगे लगे उत्तर पच्छिम को मुड़ जाती हैं। और उड़िया भाषा क्षेत्रफल में मिदनापुर के दाहन, गोपीवल्लभ पुर, झरगांव और विनपुर थानों को सम्मिलित करती है। फिर यह सिंहपुर ज़िले की पूरबी सीमा की ओर मुड़ती है जहां केवल दालभूम का परगना बंग भाषा भाषी बच जाता है इसके बाद यह सिंहभूम और मयूर भांज रियासत की सीमा सरायकाला रियासत तक बनाती है। यहां फिर एक बार उत्तर को मुड़कर यह सिंहभूम ज़िले को पार करती है रांची के ऊंचे पठार से रुक जाती है। रांची ज़िले के दक्षिण ओर बढ़ती हुई जशपुर रियासत तक पहुंचता है इस रियासत को यह दो भागों में बांटती है दक्षिणी भाग उड़िया भाषा भाषी है। फिर इस भाषा की सीमा दक्षिण की ओर जशपुर और उदयपुर के बीच होती हुई रायगढ़ और सारनगढ़ रियासतों तथा सम्भलपुर और रायपुर ज़िलों को काटती है। विज़िगा पट्टम की जयपुर एजेन्सी व बस्तर रियासतों को पार करके विज़िगापट्टम और गञ्जाम ज़िलों की दूसरी ओर बरवा बन्दरगाह में समुद्र तट पर उड़िया प्रान्त की सीमा समाप्त हो जाती है।

भाषा की सीमा।

उत्तर की ओर उड़िया भाषा की सीमा बंगला, तथा बिहारी हिन्दी पच्छिम की ओर छत्तीस गढ़ी हिन्दी, दक्षिण की ओर तेलिगू भाषा से बनती है। उक्त विशाल प्रान्त की भाषा एक मात्र उड़िया ही नहीं है। हां आर्यभाषा यही अकेली है। उड़ीसा के कुछ भागों में ऐसी जातियां हैं जो उड़िया भाषा बिलकुल नहीं जानतीं उनकी बोली एक प्रकार की द्राविड़ व मुंडा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा है। इन में कांभी बोली के घोलने वाले सब से बड़ी संख्या में है। उड़िया भाषा का व्याकरण बंगाली से बहुत कुछ मिलता है।

प्राय: इस के बंगला की तरह संज्ञा के एक वचन व बहुवचन का रूप एकसा रहता हैं। अधिकतर बहुवचन सूचक संज्ञा के पहिले अनेक संख्या वाची विशेषण जोड़ देते हैं। बंगाली क्रिया के समान इस भाषा की क्रिया के उत्तम व मध्यम पुरुष में एक बचन का बहुत कम प्रयोग करते हैं सो भी या तो अशिक्षित लोगों द्वारा अथवा अनादर प्रगट करने के लिये होता है। बंगला भाषा की अपेक्षा उड़िया में एक विशेषता यह है कि हिन्दी के समान यह भाषा भी जैसी लिखी जाती है वैसी पढ़ी जाती हैं। शब्द के प्राय: प्रत्येक अक्षर का स्पष्ट उच्चारण किया जाता है। यह भाषा सुनने में बहुत ही प्रिय व मधुर और सीखने में अत्यन्त सुगम है। उड़िया भाषा की क्रियायें सीधी सादी तथा पूर्ण है। कालवाची रूपों की भरमार है पर यह रूप पेचीदा नहीं हैं और साधारण रीति से समझ में आ जाते हैं। इस भाषा में धातु (In finitive mood) का अत्यन्ताभाव है।

इस प्रकार उड़िया ही वर्तमान अर्द्ध भाषाओं में एक ऐसी भाषा हैं जो प्राचीन वैदिक काल की संस्कृत से मिलती जुलती है। भाषा की इस शुद्धता का कारण इसकी भौगोलिक स्थिति हैं। उड़ीसा पुराने समय से एक प्रथक देश रहा है। इसके पूरब में समुद्र पच्छिममें पहाड़ी प्रदेश जहां मूल वासियों का निवास था और जहा की जल वायु बदनाम हो चुकी थी। दक्षिण की ओर द्राविड़ भाषा है जो इस से सर्वथा भिन्न है उत्तर की ओर बंगला है। पर उड़ीसा का बंगाल से बहुत कम राजनैतिक सम्बन्ध रहा है।

इस के अतिरिक्त उड़ीसा एक विजित प्रान्त रहा है। आठ शताब्दियों तक यह तिलंगों के आधीन रहा। वर्तमान काल में पचास वर्ष तक यहां भोंसला महाराज का राज्य रहा दोनों ने, अपनी २ छाप देश में लगा दी भाषा में बहुत से तेलिगू और मराठी शब्द व कहावतें भर दी गईं जो अब तक प्रचलित हैं। वास्तव में उड़िया भाषा पर यही विदेशी प्रभाव रहा है उत्तरी भारत की तरह यवन भाषा के शब्दों का मिश्रण नहीं है। हां अब अंग्रेज़ी भाषा के शब्द धीरे २ प्रवेश कर रहे हैं। पर यह अधिकतर शासन सम्बन्धी व कचहरी के शब्द हैं। दूसरी भाषाओं की अपेक्षा उड़िया में एक और विशेषता यह है कि यहां शहरी और गंवारी भाषा में अन्तर नहीं हैं भारत के अन्य स्थानों के विषय में कहा जाता है कि हर दस कोस पर भाषा बदलती जाती है पर उड़ीसा की भाषा में ऐसा रूपान्तर नहीं होता।

उड़िया साहित्य की उत्पत्ति उपेन्द्र भंज से होती है। यह दक्षिण उड़ीसा की गुमसर नाम छोटी सी पहाड़ी रियासत के राजा के छोटे भाई थे। गुमसर रियासत आज कल भी शुद्ध उड़िया का उत्पत्ति स्थान समझी जाती हैं। इन्हों ने अनेक धार्मिक काव्यों की रचना की जो अब भी आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं। उनके जन्म काल का पता नहीं चलता। पर अनुमान किया जाता है कि वे अब से तीन सौ वर्ष पहिले जीवित थे। उनके तीस ग्रन्थ तो अब भी मिलते हैं। दो पद्य कोष हैं। अन्य ग्रन्थों का आधार पुराण आदि ग्रन्थों पर है। इसके सिवा रामायण भगवत गीता आदि प्राचीन ग्रन्थों का भी भाषान्तर हो गया है। आधुनिक उड़िया में बंगाल व अंग्रेज़ी भाषा के अनुवाद बढ़ रहे हैं। मूल ग्रन्थों का अभाव है। पर अब उड़िया लोगों से जाग्रति हो रहे हैं।

उड़िया की वर्ण माला देवनागरी ही के समान है पर शायद ताड़-खजूर की पत्तियों पर सीधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्रा का बनना कठिन था इस लिये लोगों ने देवनागरी की सीधी २ मात्रा के स्थान में मोड़दार सिरे चलाये जिन से उड़िया लिपि देवनागरी लिपि से बिल्कुल भिन्न प्रतीत होने लगी। इस भाषा के बोलने वालों की संख्या नव्वे लाख के लगभग है जिन में एक लाख के लगभग उड़िया भाषा भाषी लोग भारत के अन्याय भागों में बिखरे हुए हैं।

उड़िया—कौनासी मनुसर जोड़िय पुआ थिला
हिन्दी—किसी मनुष्य के दो पुत्र थे।
उड़िया—सान पुआ बापकु कहिल,
हिन्दी—छोटा पुत्र बाप से कहने लगा।
उड़िया—ऐ बुआ यह धनमावे घर अछी ताहामते बहादे।
हिन्दी—छोटे पुत्र ने पिता से कहा हे पिता में जो माल मता है व मुझको दीजिए।
उड़िया—ओ से आपना जीना से मानन का वाटि देला और उसने अपनी जीवि का उनको बांट दी।

उदाहरण—अधिक बढ़ाने से लाभ क्या ? हिन्दी और उड़िया का सम्बन्ध इन्हीं दो एक वाक्यों से स्पष्ट है। दोनों भाषाओं का उत्पत्ति-स्थान तो एक है ही वाक्य रचना भी सुबोध हैं।

द्राविड़ भाषा।

द्राविड़ जाति में द्राविड़ और मुंडा दो भाषाओं का प्रचार है पहिले कुछ लोग इन्हें एक ही समझते थे। पर अब उनके उच्चारण, लिंग, संज्ञा के रूप, क्रिया और कर्ता के सम्बन्ध, गणना शैली, निषेध वाची अव्यय धातु और कोष की तुलना करने पर बहुत अन्तर पाया गया है समता कुछ ही कुछ है। ये भाषाएं दक्षिण भारत में और मध्य भारत की पहाड़ियों में बोली जाती हैं। इनकी दो उपशाखायें मुंडा के साथ छोटा नागपुर और संथाल परगना ज़िलों में भी पहुंच गई हैं बरूही तो बलोचिस्तान में भी प्रवेश कर गई। इस बरूही भाषा से शायद संस्कृत के लेखक भी परिचित न थे क्योंकि जहां संस्कृत पुस्तकों में आन्ध्र या तेलेगू तथा द्राविड़ भाषा का प्राय: उल्लेख आता है वहां बरूही का नाम भी नहीं मिलता। भाषा का यह पुराना विभाग नवीन विभाग से भी मिलता जुलता है जो निम्न प्रकार हैं:—

द्राविड़ समुदाय	बोलने वालों की संख्या
तामिल	१,६५,२५,५००
मलयालम	६०,२६,३०४
कनाड़ी	१,०३,६५,०४७
कोड़गू	३६,१६१
तूलू	५,३५,२१०
तोदा और कोटा	२,१०५
कुरुख	५,६२,३५१
मल्तो	६०,७३७
बीच की गोंड आदि भाषाएं	११,२३,६७४
आन्ध्र-तेलिगू	२,०६,६६,८७२
कन्ध	४,६४,०६६
कोलामी	१,५०५
बरूही	४८,५८६
जोड़	५,६५,१४,५२४

द्राविड़ भाषाओं में निर्जीव पदार्थों के लिंग की गणना नपुंसक लिंग में होती है। पुलिंग और स्त्रीलिंग का भेद सर्वनाम और विशेषण ही में प्रगट रूप से होता है वैसे संज्ञा के पहिले लिंग सूचनार्थ नर और मादा जोड़ देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्राविड़ भाषा के नपुंसक लिंग वाली संज्ञा का बहुवचन बहुत कम होता है। इस में कर्म प्रधान का अभ व है । संयोजक शब्दों की अपेक्षा क्रियाद्योतक संज्ञा अधिकतर प्रयोग में आती है

तामिल ।

तामिल अथवा अर्व भाषा दक्षिणी भारत के समस्त भाग को घेरे हुये है। जो मैसूर व पच्छिम की ओर पच्छिमी घाट और उत्तरकी ओर मद्रास शहर के बीच में है।

उत्तरी लङ्का की भाषा भी तामिल ही है इसी प्रकार भारतवर्ष के और भागों में भी बाहर जाने वाले कुलियों ने इस भाषा को फैलाया है। घरेलू नौकर व खानसामे की हैसियत से तो भारतवर्ष के दूर २ भागों में भी यह लोग पाये जाते हैं। कुछ तामिल भाषी खानसामे मुझे क्वेटा के आगे चमन सरीखे स्थानों में भी मिले द्राविड़ भाषाओं में त मिल सब से अधिक प्राचीन संगठित, और परिपूर्ण है। इसका विकास बहुत प्राचीन समय से हुआ है इस में शब्दों की अच्छी अधिकता है। इस का साहित्य भी बहुत बढ़ा चढ़ा है साहित्य-भाषा शेन है बोल चाल की कोदुम या कोदून है तामिल व द्राविड़ शब्द द्रामिड से बिगड़कर बने हैं। इस भाषा की लिपि भी स्वतन्त्र है।

मलयालम भाषा ।

मलयालम तामिल की आधुनिक शाखा है जिस का जन्म नवीं सताब्दी में हुआ। यह माला बार-तट की भाषा है इसकी यरवा नाम उपशाखा कुर्ग में बोली जाती है इस में संस्कृत शब्दों की भरमार है। इसका साहित्य विशाल है तथा दक्षिणी भारत की ग्रन्थ लिपि में बद्ध है।

कनारी भाषा ।

कनारी मैसूर, घाट प्रदेश तथा बम्बई प्रान्त के दक्षिणी सिरे की भाषा है। इसका साहित्य भी प्राचीन है इसकी लिपि तेलिगू लिपि से मिलती जुलती है। वदग और कुरुम्ब नाम इसकी दो शाखाएं नीलगिरि पर्वत पर बोली जाती हैं। कुर्ग की कोडगू भाषा भी बहुतों के मत से इसी कनारो की शाखा गिनी जाती है। कोडगू भाषा कनारी और तुलू के बीच की है। तुलू दक्षिणी कनारा की भाषा है। टोडा और कोटा बहुत छोटी छोटी भाषाए हैं जिन्हें नीलगिरि की कुछ जातियां बोलती हैं।

कुरुख भाषा ।

कुरुख या ओराओं भाषा छोटा नागपुर व उसी के निकटवर्त्ती प्रदेश में रहने वाले द्राविड लोगों की भाषा है यह प्राचीन कनारी व तेमिल से बहुत कुछ समानता रखती है। यहां के लोगों का कहना है कि उन का और मलेरों का कुटुम्ब कनारा ही से आया था।

मलेर जाति और आगे राजमहलके निकट गंगा तट पर बसी हुई है इस जाति की भाषा मल्तो है। कुरुख तथा मल्तो भाषा में न कोई साहित्य है न लिपि है। मिशनरी लोगों के पहुंचने से उनकी बोली में रोमन लिपि का प्रयोग होने लगा है।

गोंड

मध्य भारत के पहाडी प्रदेश में गोंड भाषा बोली जाती है बहुत से गोंडों ने अपनी भाषा को छोड़ आर्य भाषा को ग्रहण कर लिया है। पर असली गोंड तो आन्ध्र और द्राविड़ भाषाओं के बीच की भाषा है। जिसकी कई उपभाषाएं हैं। यह भी साहित्य से शून्य तथा बोलचाल ही की भाषा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी भाषा के अनेक रूप ।

(रांची हिन्दी)

कोनो आदमी केर दू झन बैठा रहैं । ऊ मधे छोटा का बाप के कहलक ए बाप खुरजी मधे जे हमर बटवारा है से हम के दे । तब ऊऊ मन के अपना खुरजी बांइट देलक । थोर को दिन नइ थेलक कि छोटका बेटा सोब कुछ जमा कइर के दूर देश चइल गेलक और उहां लुचपनई में दिन बिताते अपन खुरजी उड़ये देलक । जब ऊ सोब उड़ाये चुकलक तब ऊ मुलक में बड्डा अकाल झेलक और ऊ गरीब होए गेलक और ऊ जाय के ऊ मुलक केर आदमी मन मधे एक झन ठिन रहे लागलक, जे ऊ के अपन खेत में सुवंइर चरायक भेजक । और ऊ ऊ भूसा से जेके सुवमन खात रहैं अपन पेट भरे खोजत रहे और के ऊ ऊ के कोनो गई देत रहैं । तब ऊ के चेत चढ़लक और ऊ कहलक कि हमर बाप केर केत केतइ धांगर मन के खायक से पूरे रोटी होयला और हम भूके मोरत्थी । हम उइठ के अपन बाप ठिन जाव और ऊके कहब ए बा हम सरग केर विरुध और राउर आगु पाप करली हई । हम फेर राउर बेटा कहायक लाएक नाखी । हम के राउर धांगर मन मधे एक झन नियर कइर देऊ । तब ऊ उइठ के अपन बाप ठिन चलक मगेर ऊ दूरे रहे कि ऊकर बाप ऊके कहलक देइख के ऊकर ऊपर माया करलक और कुइद के ऊके घेचामें लग इट के चुमा करलक । बेटा ऊ के कहलक ए बा हम सरग केर विरुध और राउर आगु पाप करली हई और फेर राउर बेटा कहायक लायक नखी । मगर बाप अपना नोकर मन के कहायक' सोवा से बेस लुगा निकलाए के ऊ के पिंधावा और ऊकर हाथ में अंगूठी और गोड़ में जुता पिंधावा और मोटाल बचरू लाइन के मारा और लगे हमारे खाव और आनन्द करब, काहे किई हमर बेटा मोइर रहे फेर जिलक है । हेराय जाय रहे फेर मिलक हैः। तब ऊ मन आनन्द करे लागलें ॥

गोरखपुर जिलेकी भोजपुरी हिन्दी ।

एक जने के दुइठों बेटा रहैं । ओ-मिं से छोटका अपने बाप से कहलस, काहे बाबूजी घर के धन दौलति में जवन हमार बरवरा होय तवन हमकें बांटि दे । त ओकर बाप ओकर बरवरा औ-कें बांटि दिहलस । थोरिक दिन में छोटका बेटा आपन कुलि धन एकट्ठ के के परदेस निकसि गइल । और उहां आपन कुलि धन कुकरम में उड़ा दिहलस । जब ऊ आपन सर्वस उड़ा चुकल तब ओहि देस में बड़ा अकाल पड़ल । तब ऊ बड़ा दलिद्दर हो गइल । तब ऊ ओहि देसके एक धनी अदिमी कें इहां जाके रहै लागल । ऊ धनि अदिमी ओके अपने खेतें सूअरि चरावै के भेजि दिहलस । उहां ओकर मन ओहि घास पात के देखि के जवन सूअरि खाति रहलीं डोलि गइल और मन में कहै लागल की हम कें जोई हो मिलत तंखातीं । लेकिन ओकें केहू किछु नाहीं देत रहल । तब ओकरे सूझल और ऊ अपने मन में कहलस की देख हमरे बाप के केतना मजूरनकें एकता पुतनाखायेकें मिलत बाकी ऊ भरिपेटखाइबो करै-लें, अवर हम इहां भुक्खन मरत बांटी, आवँचलीं। अब अपने बापे किहां आउब सें कहीं की हे बाबूजी । हम भगवान् के प्रतिकूल अवर तुहरे अगाडीं पाप कै चुकलीं, अब हम यह लायक नाहीं बांटीं कि तोहार बेटवा कहाई । से अब तें हम कें अपने एक चकरिहा के तरें राख । ऐइसन सोचिके ऊ अपने बाप के लगें चलल । जब लामहीं रहल तब्बे ओकर बाप ओ के देखि के मारे छोह के दौरि के ओकरे लगें गइल और भेंट अँकवारि लिहलस और चुम्मै चाटै लागल तब बेटा कहै लागल की हे बाबू जी हम भगवान् के प्रतिकूल अवर तोहरे अगाडी पाप के चुकलीं अवर अब एह लायक नाहीं बांटीं की तोहार बेटा कहाइ से अब हम के अपने एक मजूर के तरें राखें। ओकर बापई सुनि के अपने एक नौकर से कहलस की सब से नीक कपड़ा निकारि लै आवं और इन के पहिरावं । अवर इनकें हाथ में अंगूटी अवर गोड़े में पनही पहिरावं । अवर चल सभें खाईं पीईं अवर सुखी करीं । तब सब जने खुसी मनाव लगलें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेलिगू ।

तेलिगू अत्यन्त प्रसिद्ध आन्ध्र भाषा हैं। मद्रास शहर से लेकर उड़ीसा तक भारत के पूर्वी तट की यहीं प्रधान भाषा है। निज़ाम हैदराबाद रियासत के पूर्वी भाग और मध्यप्रान्त व बरार के अत्यन्त दक्षिणी भाग में भी यह भाषा बोली जाती है। इसका विस्तृत साहित्य हैं और अपनी स्वतन्त्र लिपि से युक्त है। यह लिपि देवनागरी से मिलती है। पर उड़िया के समान आरम्भ में ताड़ पत्र पर लिखी जाने के कारण इसमें भी बहुत मोड़ हैं उड़ीसा पहाड़ियों में बसे हुए खोंड लोगों की भाषाएं कन्ध और कोलामी हैं पर इन भाषाओं का कुछ भी संस्कार नहीं हुआ।

बरूही भाषा भी असंस्कृत ही है और बिलोचिस्तान के उत्तर प्रदेश में सुनने में आती है। एक ओर पड़ जाने से इसका विकास स्वच्छन्द रीति से हुआ है। वलोची लोगों का आकार द्राविडों से बिल्कुल भिन्न हैं। पर भाषा विज्ञान विशारदों का अनुमान है कि दोनों की भाषाएं एक ही स्रोत से निकली हैं।

एक समुदाय का यह भी मत है कि हिन्द महासागर के स्थान में एक महाद्वीप था जहां द्राविड जातिका निवास था कालान्तरमें जातिके कुछ लोग उत्तर बिलोचिस्तान पहुंचे कुछ दक्षिण भारत में। पर यह सन्देह का विषय है जिस का अनुसन्धान भविष्य ही में सम्भव है।

मुंडा ।

मुंडा भाषा भारत की अत्यन्त पुरानी भाषा मानी जाती हैं। छोटा नागपुर इसका केन्द्र है वैसे बंगाल, उडीसा, मद्रास, मध्यप्रान्त में इस भाषा का अधिकार हैं। इसका उपनिवेश बरार के उत्तर महादेव पर्वत पर भी है इसमें खेरवाडी कूर्कू, खड़िया, जुआंग, सवर और दावा भाषाएं शामिल है। इन भाषाओंकी भी अनेक उपभाषाएं हैं। इन में हो सिंह भूमि के लड़ाकू कोल लोगों की भाषा है। सन्ताली सन्ताल परगना की पहाडी जाति की बोली हैं। कूर्कू महादेव पर्वत की भाषा है खड़िया रांची ज़िले के दक्खिनी पच्छिमी कोने व पास की जशपुर और गंगापार रियासतों में बोली जाती है।

सवर उड़ीसा के निकट मद्रास प्रदेश में बोली जाती हैं। सवर जाति बहुत प्राचीन हैं वैदिक काल में आर्य भी उन से परिचित थे। प्लाइनी और पलोमी नामी प्रसिद्ध प्राचीन विदेशी इतिहास ने भी इनका उल्लेख किया है मुंडा भाषा बोलने वाले सब मिलकर ३२ लाख के लगभग हैं।

राजस्थानी ।

कोई मांणस गा बेटा हा। वां मांय सूं छोडिकिये बाप ने कयो क ओ बावां घर गे धन माल मैंगा म्हारे बट आवे जको म नें दे दो। जकाग बाप घर गा धन माल गा बांटा करगे वां नें बांट दियो। थोडा सा दिन पाछे छोडकियो बेटो आप गो सो धन मेलो करगे अलग मुलक में पर गयो ओर वटे कुमारग में सो कई खोय दियो।

सगलो विगाण पछे वीं मुलक में जबरो भारी कुसमो हुवो और व कंगाल हुय गयो। और वोवीं मुलक रे रहिणे वाले एक मानस कने जाय गे वीं गे मेले हरण लागो। और वी उन ने आप गा खेती में सूर चरावण भेई हद्यो। ओर वो सूरां गा खावण गां छोडां सूं घणी देरी पेट भराई करतो हो। ओर वीं नें कोई कूंहीं नहीं देतो। जणां वीं ने चेतो हुयो ओर आप गे मन में कयो कि म्हारे बाप गे तो घणाई मांनस हैं और वां माणसां गे रोवि आंगण पांगाण पड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे है ओर हूं मरतो मरू हू । सूं अठिर्यां चाल गे म्हारे बाप कने जासूं ओर वी ने कसूं यो बावा में भगवान गे आगे और थारे मूंढा गे पाप कस्या हैं । उकगा अब थारो बेटो कवोवण जोगों नहि रहूयां । पण में ने थारे माणंसा में एक माणंस बताय ले । ओर वो उठि गे आप मे बाप गे कने आयो वीं णें घणीं सारी दूर सू वीरे बाप देख्यो जरां दयां कर गे भाग कर सा में जायर वीं ने गळागे लगायो ओर बाला लिया न । ओर बेटें क ओ बावा भगवान गे सामने ओर थारी आख्यां में पाप करयां है ओर थारो बेटो वजण जोगी नहीं हूं पण बावे आप गे आगे माणसां नें क्यो सग लां सु चोखा गामां और आपां जमीण जीमा ओर भगा करां इयेई क म्हारे ओ बेटो मर गयो फेरु जायो है गूम गयो हा फेरु थाधो हैं ओर येकोड करण लागा ।

बुन्देली (राघो बन्सी)

कोई आदमी के दो लडके थे । वो में से छोटे ने अपने दादा से कहा के दादा धन में से जो मेरो हिस्सा बैठे सो मेहें देव । तब उन के बाप ने अपना सब धन बाट दआ बहोत दिन नहीं बीते कि छोटे लडके ने अपना सब धन जमा करके दूर देस को निकल गयो ।

हाबड़ौटी हिन्दी (कोटा)

एक सहर में दुरबल बरामणछो । वोरोजी नाकण भिग-श्या कर के आपका उदर-पुरण करे छा । एक गांव में जावे तो भी तीन सेर बेकरड़ी आवे । दो गांव जावे जब भो वोही आवे । ओर अंबरामण के एक लड़की कुवांरीछी । जब बरामण की अस्त्री ने कही के म्हाराज आपणों भाग तो ई मुजब छे और ई कन्न्या का पेला हात कां ई सूं करांगा ।

कांगड़ा ज़िले की पंजाबी बोली ।

इकसी बुड्ढी पजह रुपये इकसी कराड़ बाल थैनी रक्खे थे । कने तिसते कद्दी २ बुड्ढी थोड़ा २ सौदा लेदी थी । जा इकदिन बुड्ढी कराड़ेते अपनी थैनी मांगी ता कराड़े लेखा करो ।

पंज रुपय्ये बांकी देना कढ्ढे । फिर भी बुड्ढी तिसते पाव २ सौदा कद्दी २ लेदी रही । जा फिरि लेखा होइया ता पंज रुपय्ये बाकी भी बुड्ढीया दे मुकी गये । इस गल्लादा गल्लाम लोका इह केता जे "पंज पजाहा लोड़ गये, पंजा की ल पसुओ दम्म कराड़ा बस येई, ता बुड्ढी आवो जाओ" ।

मेरठ की जाट-भाषा ।

एक दिन अकबर बादसा-ने बीरबल-तें पुच्छा ओ बीरबल तू हमें बलद का दूध ला-दे और नहीं तेरी खाल कढ़वाई जागी । बीरबल-कूं बहोत रंज हुइया ओर हुन्तर प्राण-के अपने घरूं पड़- रहा । बीरबल की लोन्डी ने अपणे मन-में कहा की आज तो मेरा बाप बहोत- सोच में पड़ा हैं आज के जाणे इस-का के ढब हुआ जिब उन ने अपणें बाप कूं पूच्छा अरे बाप आज तेरा के ढब है । बीरबल ने कहा को बेटी कुछ ना है । फेर लोन्डी ने पूच्छा कि बाप्पू अपने मन का भेद बताणा चाहिये । जिब-उन ने कहा कि बादसा ने कहा कि के-तो बलद का दूध लादे नहीं तभे कोल्हू में पिड़वाऊंगा । मेरे-ते कुछ नहीं कहा गया और हामी भर के आया हूं और कुछ राह नही पाता लोन्डी ने कहा की बाप्पू या तो कुछ भी बात ना हैं । तुम बेफिकर रहो । बीरबल उठ खड़ा हुआ ।

खेर जिब तड़का हुआ तो उस लोन्डी ने के काम करा की अपणा सब सिंगार करा और बहुत अच्छी पुसाक पहर के ओर कुछ लत्ते हाथ में लेके किले के आगे-कूं लिकड़ जमना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर गई । बादसाह किले-पे चढ़ के जमना की सेल कर रहे थे। अकबर ने देखा की बीरबल की लोन्डीं लत्ते धो-रही-है। बादसा ने लोन्डी ते पुच्छा की ऐ लोन्डी आज क्यों तड़के ही तड़के लत्ते धोवण आई-है जब उस लोन्डी ने कहा की बादशा आज मेरे बाप के लोन्डा हुआ है। बादसा ने छोह में आके कहा की अरी लोन्डी भला कहीं मरद के भी लोंडे होते सुणे हैं। लोंडी ने कहा कि बादसा भला कहीं बलद के भी दूध होता सुणा है। जिब बादसा-कूं कुछ बोल नहीं आया और लान्डी कूं कहदिया की तड़के हीतड़के बीरबल कू कचहरी में भेज-दे। बीरबल तड़के ही कचहरी-में गया। बादसा ने पुच्छा की बीरबल लाया बलद का दूध। बीरबल-ने कहा की बादसा सलामत में तो कल तड़के ही लोन्डो के हाथ भेज दिया था। बादसा कू कुछ बोल न आया।

ग्वालियर रियासत की बोली

किसू मानस के दो मोड़ा हते। बिन में से लुहरे भैया ने बाप से कही बाप मेरो बट मोई दे घाल। और बा ने अपणी जागीर बिन में बाट दई, और बहुत दिनन बाद लुहरो मोडा संग को भेलो करके दूर के देस को चल दियो और मेठेती सगरो माल वाहियात में उडा दियो और जबसगरो माल उडाय चुको मेंटोनी में बडो अकाल पड़ो और ओतगी में है गयो। और वा देस की बस्ती के एक मानस से मिलो। और वा ने बिस को सुअरिया चराने आपने खेत में पठै दियो, और मैं बाने मोथा से जो सुअरिया चत्त ही अपनो पेट भरयां। जब वाके में मूड लगी तो सोचो और जी में कह उठो मेरे बाप के बहुत से महीन्दार खूबराटी खात हैं और बचाय लेते हैं और हूं भूखन मत्त हो, हूं अपने बाप के ढिंग जाओगे और कहोगे हू ने राम जी की मर्जी के गैर काम कियो और तेरे सामने कियो और अब तेरो मोडा कहलायबो के लायक नाने हू षो अपने महीन्दारण में राखले और ठाडो हैं के अपने बाप के ढिग को चलो ॥

करौली और ग्वालियर रितासत की (ब्रजभाषा)

एकाऊ आदमी के दो मोंडा हे तिन में ते लहोरे अपने बाप ते कही बाप मों को सांझा में ते अपनो बट है-चुकौ। और वा-ने बिन को अपनी सामा बांट दई। और बौत दिनन के पीछे लहोरौ मोडा सब जोर-के दूर प्रदेस में निकर गयौ और भेठानी सगरी सामां उडाय दई।

आगरा ज़िले की देहाती बोली।

एकु आदमी-के दो पूत हे उनि-मैं से लौहरे ने बाप-ते कही के ऐकाका मेरे बांट कौ मालू मोइ दै दे। तब बाने मालु बिनि कूं बांटि दियो। कछुक दिन बीत लौहारौ छौरा सबु इकठ्ठौ करि करि कै दूरि देस कू चल्यौ गयौ महां बाघे अपनौ मालकुसग मैं उडायौ जब सब निबटाई चुक्यौ वा देस में अकाल परयौ। वहु गरीबु होन लग्यौ। तब वा देस के एकु बड़े आदमी के जहां जाइ चग्यौ वा-नैबाक अपने खेतनि में सूगर चराइबे कू भेज्यौ।

मुजफ्फर नगर जिलेको देहाती भाषा

एक सकारी छोटे मुंह के बासनह में थोडी मिठाई घाल के जगल मं बोल्ला बोल्ला धर आया। एक बन्दर ने उसने देख लिया। धोरे गया मिठाई देक्खी जिभी बासनह में हथ दे दिया और मुठी भर के मठाई काढणी चाही। इब जां लिकड़े तो किस ढाल लिकड़े न तो बर्तन का मुंह चौडा होता है। और न ओह मुठ्ठी खोलता है न तो ओह लोभ ते हटता, न तूं उसे अकल रस्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताती अक मिठाई ने छोड दे ओर अपणी जान बचाने, होत्ते २ यह हुआ अक सकारी आगया हर बन्दर पकड लिया नेठम याही उन लोगों पै हे जो माल के लोभ में पड जाते हैं। आखीर में उन्हें बडा सकारी मौत गिरफदार करके ले जाता है।

बीरभूम ज़िले की मुसलमानी (हिन्दी)

एक आदमी का दो लडका रहा। उस लोक के बीच में छोटा लडका आपना बापको बोला, बाप जी बिसय का जो भाग हाम को मिलेगा ओ भाग हाम को दोओ। ओर उस लोकको बिसय भाग कर दिया। थोडा दिन बाद छोटा बेटा सब कुछ बिसय एक जायगा कर के दूर देश चला गिया अर उस जायगा में जो अपना खाराप खियाल में बिसय को उडा दिया।

बुंदेली हिन्दी ज़िले छिंदवारा।

कोई आदमी के दो छोकरा हते। वो में से नाने छोकरा ने अपने बाप से कहा दादा में धन को जा हिस्सा मेरा है सो मेंह देदे ता ओ के दादा ने हिस्सा बांटा कर दो। सुत के दिन नहीं भये हते के छोटे छोकरा ने अपने हिस्सा को सबरो धन जमाकर के दूर देस को चली गओ।

मेवाड़ हिन्दी (उदैपुर)

कुणी मनख के दोय बेटे हा। वां-मां-हूं लहोड़क्यों आप-का बाप-ने कत्या हे बाप पूंजी-मां-हूं जो म्हारी पांति होवै म्ह–ने द्यो। जद वां-वां ने आपकी पूंजी बांट दीदी। थोड़ा दन नहीं हुया के लहौड़ क्यों बेटो सग को धन भेको करहर परदेश परो-गयो अर उठे लुच्चापण-मां दन गमांवतां हुवां आपको सग को धन उड़ाय दीदो। जद ऊ सगको उड़ा चुक्यो तदवीं देसमां भारी काळ पड़यो हर ऊ टोटायलो हों-गयो। हर ऊ जाय-नेंवा देस का रहवावा का-मां-हूं एक के नखे रहवा लाग्यो। वां वां-नें आप-का खेत-मां सूर चरावा-ने मेल्यो। हर ऊ वां छूंतरा-हूं या-ने सूर खावा-हा आप-को पेट भरवौ चावो हो। हरवा-ने कोई भी कांई नहीं देतो हो। जदवां चेत हुयो हर वीं कह्यो के म्हारा बाप-के कतर ही दान कर्यां-ने खावा-हूं बदतीं रोटी मिले है हर हूं भरवां मरू। हूं उठर म्हारा बाप नरमें जाऊंलो हर वां-ने कहूं रमे के है बाप बैकुण्ठ हूं-उलटो हर आप-के देखतां पाप कीदो है। हूं फेरूं आपको बेटो कुहावा जोगो नही हूं। म्हन्ने आपका दान कर्यां मां हूँ एक के सरीखो कर-द्यो।

अजमेरी हिन्दी (अजमेर)

कस्या आदमी का दो बेटा था। वां दोयां या छोटो छोवो बाप-नै कियो बाप म्हारे पांती आवै जो धन महने दे-दे। ओर आपको धन वांने बांट दियो। अर घणा धन कौन हुआ के छोटो बेटो सबे धन भेजो कर दूर देस चल्या गयो। ओर उंन्डें दाय दाम लुचापण में खो दियो। अर जद वै सगलो खरच कर चुक्यो व मुलक में जंगी काल पड़यो अर वै मुंगतो होवा लाग्यो। पर वठें का रहवाला सू मल्यो अर ऊं को खेत में शूर चरावा भेज्यो। अर अं शूर खाता छा जीं छोड़ा सूं पेटभरवा को त्यार छो। पण कोई अं ने दीना नहीं। अर जद अं नै चेत हुयो व कह्यो म्हारा बाप के कत्ताक चाकरां के रोटी घणी छ अर में तो भूका मरूं छू। मैं अंठकर म्हारा बाप कनेजाअ लो अर अंने कहस्यूं बाप मैं राम जी को अर थारी दोन्या कै आगे पाप कस्यों छ अर थारो बेटो कहवा जिस्यो नहीं रहयो। म्हने थारा नोकर ज्यान एक नोकरा राख ले। अर वै ऊंठ्यो आर बाप कोड़े आयो। वे दूर ही छो कै ऊंको बाप ऊंनै देख लियो अर अंबै दियो आ गई। अर दौड़ कर अंको गलासूमियो अर चाट्यो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लियौ। अर बेटो बाप ने कही यै परमेसर अर थारी आख्यां मैं गुणी कास्यो छै अर थारो बेटो कहबा जिस्यो नहीं रह्यो। पण बाप आप का नोकरां ने हुक्म कियो कै आछा हूं आछा कपड़ा लाओ अर ईनै मैराधोअर ई का पग में पग रखी आप तो खाओ अर मजा करों। क्यांकै वैं म्हारो बेटो मर गयो छो अर पाछै जी गयो छै ऊ गम गयो छा अर पाछो लाधायो। अर पै खुशी कर बालायो।

मालवी [रांगड़ी] हिन्दी झाबुआ रियासत।

एक सरवण नाम करीने आदमी थो। वणी रा मा-बाप आंखा-ऊँ आंदा था। सरवण वणा ने तोक्यों फ़रतो थो। चालतां चालतां आँदा आंदीने रस्ता-में तरस लागी। जदी सरवण-ने कीदो के बेटा पाणी पावा महने तरस लगी जादीऊं सरवण ने बठे बेठाये ने पाणी भरवाने भरवा ऊं देख्यो। तो जाग्यो के कोई हरण्यो पाणी भरवा लगा। जदी राजा दशरथू थे तालाव ऊपर गियो। वणी तलाव ऊपर राजा दशरथ-की चोकी थीं। जणी वखत सरवण पाणी भरवा लागो जदी राजा दशरथ दूरा-ऊं देख्यो तो जाण्यो के कोई हरण्यो पाणी पीवे हैं। एसो जाणी ने राजा एक-ए बाण मार्यो। जो सरवण रे छाती में लागो। जो सरवण वणी वखत राम राम करवा लागो। जदी राजा ए जाण्यो के ये तो कोई मानस है। एसो जाणीने राजा दशरथ सरवण कने गयो। तो देखे तो अपणाभाणेज। राजा सोच करवा पड्यो। जद सरवण बोल्यो के खेर मारी मोत थाण। हाथ से-जलखी थी। अब मारा मा बाप ने पाणी पावजो। अतरोकेइ-ने सरवण तो मरि गियो। ने राजा दशरथ पाणी भरने वेन वेनाई-ने पावा-ने आयो। जवीं आंदा आंदी वे त्यां के तू कूंण है। दशरथ बोल्यो के थाणे कांई काम है। थें पाणी पीयो जदी वीनबोली में तो सरवण सिवाय दूसरा का हाथ कोपाणी नी पीय। दशरथ बोल्यो के हूं दशरथ हूं। ने मारा हाथ अजाण में सरवण मरी गयो। आदाआदी सरवण को मरण हुणी ने हा! हा!! करीनेराजा दशरथ ने हराप दीदो के जणी वाणूं तूमरने। एसो हराप हुहै ने आदा आदी बीगारी गियो।

मालवी सोंद्वाड़ी स्टेट झलावर

बना जी थां के गले घुंगर माल। पांवा का तेवर बाजणा रेवन ड़ा वना जी थां का हाथ में हथ्यों रुमाल। पावां की मेंदी राचणा रे वनड़ा वना जी यें तो वड़ चाल्या पग अघरात। मारी सूती नगरी आजकी रे वन ड़ा।

ककड़ माथे पीपल रे बीरा। अणी पर चड़ जोऊं थारी वाट। माड़ा जायों चूनर लावीयो। लावीतो हगरा सारू बानजेरे बीरा। नाइ तर रोजे थारे देश माड़ी जावियां चूनर लावीयो। मेलूं वोढाल भराई बीरा। ओड़ तो हीरा झरपड़े माड़ो जावीगो चूनर लावोयो। नापूं तो हाथ पचास। तोलूं तो तोला तोह। मांडी जायों चूना लावीयो।

स्टेट दिवास।

कोई आदमी के दो छोरा था, उन में से छोटा छोरा जेआ का बाप से कियो के दाय जीस्ह के म्हारो धन को हिस्सो दे लाख, और ओने उनमें अपना मालताल को बांटो कर दियो फिर थोड़ाई दिन में छोटो छोरो सब अपनी माल मत्ता एकठी करीने कोई एक दूर देस में चल्यो गयो। ओखां चंनमेंरैने ओने सब अपनोध्र व उडै दियो। सब रवर चहु आ पर उनादेस में भोत बड़ो काल पड्यो ओर ओ केरवा की मोत अडचन पडवा लागी जदेऊ उना देस में कोई एक आदमी के पास जे ने दिया। ऊ आदमी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ के सूडला चरावा के अपना खेत में से जाया करे। और सूडला जो कोई फतरा खाता था ओ वो ऊपर जऊ खुसी से रेतो पन ऊवी ओ के कोई ने दियो नीजदे ऊसूद में आयो तो केन लग्यो म्हारा वाप के घरे तो सुकता जमेनत मजूरी करवा वाला केवी पेट भरी ने बचे इतरोखावा के मिले ओर हूं यां भूक से मरूं। अवयां सेहूं उठी ने वाप क वांजे ने कूंगा के दाय जी हूं तमारो ओर भगवान को गुनागार हूं ओर ए के उपरान्त हूं थारो छोटो के वावा के लायक नीरियो। म्हारी गिनती तूं अपना नोकर मेंकर फिर ऊवांसे उठी ने अपना बाप के पास आयो ओका वाप ने ऊ दूर छेटी वैं होते ज ओके देख्यो ओर ओ के दया आई ओर भाग्यो आर ओ के गला से चोटाई लियो ओर ओ वो मट्ठी दी। फिर उन छोराने ओका वाप से कियो के दाय जी हूं भगवान को ओर तमारो गुनागार हूं ओर हूं तमारो छोरो के वावा के लायक नी हूं। पन वाप ने ओका नोकर होने से कियो के एक भोत अच्छे अंग अगोलाव ओर एके पेराव ओर एकाहात में अंगूठी पेराव पग में जूतों पेराव। ओर आज जीमो चूठो ने वड़ो हरक अपना मना वांगा क्यों के म्हारो यो मन्यो हुओ छोरो आज जीवतो हुओ यो खोवई गयो थो पनफिर मिल्यो जेदंवी वड़ो हर कमनावा लाग्या अव ओका वड़ो छोरो खेत में थो ओर जदेऊ चल्योओर घरके पास आयो ओ के नाच वाको ओर गावा को आवाज सुनानो फिर ओने नोकर होन में से एक के बुली ने पूछ्यो इन बात को अरथ कै हे फिर ओने कि कं थारा भाई आयो हे ओर थारा वाप से ऊंखुसी मजा में मिल्यो जेसे ओने सेल दीवे हे फिर ऊ के घुस्सो धाया ओर घर में जावेनी। जेसे ओ को वाप वाहेर ऐने ओ के समजावाला ग्यो पन ओने ओका वाप से कियो के देख हूं थारी इतरा वरस से सेवा करूं ओर थारो मने केनी कदी वी उलाग्योनीं एसो होते वीथने म्हके म्हारा मिंतर वरोवर चेनकर घाके वास्ते कदीषी वकरी को वच्चो दियोनी। ओर जेने थारो माल राम जनी के साथ उडे दियो उना छोरा के वास्ते सेल दीवी। फिर ओने ओसे कियो कि बेटा तूं हमेशा म्हारे जपा सरेह ओर जो कोई म्हारे पास हे ऊ सव थारो जहोंयो थारो भाई मन्यो थो ओर पाछो जीवतो हुओ। खोवाई गयी थी ओर पीछो पायो एके वास्ते अपन नेहरक वतानो योजोग है।

गढ़वाली।

एक नौनू जैके नाम रामचन्द्र छयो। वो स्कूल मा पढ़शी छयो, लेकिन चोर बहुत छायों शुरु दिन वैला एक नौना की कलप चोर द्याया, और तिसर दिन एक कियाव चोर द्याया, इनी इनी कैकी वो बड़ो चोर वोई गया, जब एक दिन चोरी करनो छयो, ता कोई आदमिन वेथई पकड़ी द्याया जव वैक नई कैव हौणी छई तव बल वाला कि मेरी मां को बुला द्यावा जब वैकी मां आ ग्याया तव वैल ब्याला कि मि त्यार कंदूड़ पर एक बात बुल दो जब वैकि मां वेक पास गया ता, वैला अपनी मां को कंदूड़ काटि द्याया वैल ब्वालो कि अगर मेरि मां मितई पहिला शिक्षा देदीं दी त मिल चोरि कितौ काणि छई. ई बात पर सब खुश होइ गीना, और वैतई कैद से छोड़ द्याया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्दू भाषा का संक्षिप्त इतिहास ।

यह बात प्रत्येक व्यक्ति को विदित है कि उर्दू भाषा भारतवर्ष की पूर्वकालीन भाषा नहीं है। यह भाषा व्रज भाषा से निकली है जिसकी वयस ८०० वर्ष की दी है। इसलिये उर्दू भाषा का इतिहास लिखनेसे पूर्व हिंदुस्तानकी प्राचीन भाषाओं का उल्लेख करना उचित है।

आजकल की तरह सर्व प्रथम भारतवर्ष की भाषा एक न थी, किसी प्रान्त में कोई और किसी में कोई। सम्भवतः सर्व प्रथम भारत वासियों की भाषा वह थीं जिसके लक्षण चिह्न-वशेष, त्यकिल उड़िया, और तिलङ्ग आदि अवतक वर्तमान है। यह भाषायें संस्कृत से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखतीं।

भारतवर्ष में सब से पहली आक्रमणकारी क़ौम आर्य्य थी। इसकी भाषा वह थी जो अपने प्राकृतिक रूप से भिन्न होकर अब संस्कृत कहलाती है। इस आर्य्य जाति ने पंजाब में होते हुए, सारे देश पर अपना प्रभुत्व जमा लिया। पूर्ववर्त्ती अधिवासी अंशतः लड़ाई में काम आये, कुछ भाग कर पर्व्वतों के शरणागत हुए और कुछ विजयी जनों की दासता धीउ हुए और शूद्र नाम से विदित हुए। इसी प्रकार भारतवर्ष में चार वर्णों का उदय हुआ। रक्त-वमैल्य की पूर्णतया रक्षा करने के पश्चात् इसे विजयी जाति को ध्यान हुआ कि शूद्रों के साथ आठों पहर वार्त्तालाप करने में पुराचीन भाषा दोगली हो जायेगी। अतः उन्होंने अपनी भाषा को देवनागरी के नाम से प्रचलित किया और शूद्रों से सम्भाषण करने की नितान्त धर्म्म-सम्बन्धी निषेध किया गया। अतएव अपनी स्वभाविक दशा में रही और इस की स्वच्छता ने परशब्दों की फालिया से अपने विमल वस्त्र को परहित नहीं किया इसी मित्ति पर इन विजेताओं ने अपनी भाषा का नाम संस्कृत स्थिर किया जिसके अर्थ पवित्र एवं परिष्कृत हैं।

यहां पर यह लिखना अप्रसंगोचित न होगा कि यही आर्य्य जाति ईरान् में भी फैल गयी थी और सम्भवतः ईरान नाम ही इसी कारण पड़ा हो। ईरानियों की धार्म्मिक रीति-नीति और अन्य चाल ढाल हिंदुस्तानियों से मिलते जुलते थे परन्तु उनकी भाषा और विष-भूषा में कालचक्र ने परिवर्त्तन कर दिया जब कि भारतीय भाषा सम्प्रदायियों के भीषण आक्रमण से मृतप्रायः होने पर भी पुनरुज्जीवित हो गयी।

रहन-सहन का प्रभाव अवश्य ही पड़ता है। संस्कृत भाषा की उत्पत्ति और उच्चारण ने यहां के लोगों के स्थान पर घर कुछ और ही रूप धारण कर लिया। इसलिये घरों और बाज़ारों में बातचीत करने के लिये पृथक् २ रूप से प्राकृत भाषायें स्वयं उत्पन्न हो गयीं। राजा भोज के समय की नाटक पुस्तकें परिलक्षित करती हैं कि साहित्यिक ग्रन्थिक, एवं राजकीय भाषायें तो संस्कृत थीही किन्तु मामला साधारण जनता से पड़ता है इसलिये लस्भाषणायें पंडितों को भी प्राकृत ही बोलनी पड़ती थी। प्राकृत स्पष्टतया संस्कृत की आत्यजा मालूम होती है क्योंकि उसमें सहस्रों शब्द संस्कृत के हैं और इसी प्रकार व्याकरण के नियम भी है।

हयत् ५४३ बी० सी० में बुद्ध-धर्म्म के प्रवर्त्तक शाक्यमुनि का प्रादुर्भाव हुआ। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगधदेशसे उठे और वहीं प्राकृत में धर्मोपदेश किया। उन की प्रभावशाली वक्तृता से देश में धर्म्म दावानल की तरह प्रवर्तित हो गया। फलतः मगध देश की प्राकृत समग्र राजदर्बार और कार्यालयों की भाषा हो गयीं। सैंकड़ों किताबें इस भाषा में रचित हुई। चारों ओर मागधी मागधी ही फैल गई। फिर तो यह दावा होने लगा कि मागधी भाषा ४ समस्त भाषाओं की मूल है। किन्तु ज़माना गिरगट है। प्रायः१५०० वर्ष के पश्चात् बौद्धधर्म अपनी भाषा के साथ २ अन्तर्धान हुआ। शंकराचार्य की पुण्यगरिम्य से ब्राह्मणों का सितारा डूबा हुवा फिर चमका। और संस्कृतकी प्रभा-आभा फिर उदित हुई। यहां तक कि राजा विक्रमादित्य के समय में उसकी ज्योति दिन दूनीरात चौगुनी बढ़ती गई। दरबारियों और उच्च कोटि को लोगों में संस्कृत गौरव के साथ, वार्त्तालाप में व्यवहार की जाती थी।

ग्यारहवीं सदी बी० सी० के पूर्व-राजा भारत के समय में ब्रज में वह भाषा बोली जाती थी जिसको हम आजकल ब्रज-भाषा की मूल कह सकतेहैं। इस समय भिन्न २ स्थानों की भाषायें वहां की आवश्यकतायें पूरी करतीं थीं। अचानक समय ने फिर पलटा खाया और यवन धर्म्म का पदार्पण हिंदुस्तान में हुआ और उसने इसके धर्म और भाषा में परिवर्तन करना आरम्भ कर दिया। संस्कृत और मौलिक फ़ारसी की भाषा आर्य्यों के सम्बन्ध से जैसा कि हम ऊपर कोष्ठों में लिख आये हैं एक ही दादा की भाषायें हैं। किन्तु समय की उलट फेर ने इन दोनों बहनों की वेष भूषा में आकाश और पाताल का अन्तर उत्पन्न कर दिया प्रचलित फारसी के अब भी कुछ शब्द संस्कृत से सादृश रखते हैं, जैसे पिदर-पित, मादर-मातृ, जानु-जानु, अस्प-अश्व, ब्रादर-भ्रातृ, दुख़्तर-दुहितृ, पा-पाद इत्यादि।

यहां पर जो मुसलमान आये वह उस समय की प्रचलित फारसी भाषा बोलते थे और हिन्दूओं हिन्दी के शब्द मिलाजुला कर गुज़ारा करते थे। संस्कृत तो देवानागरी भाषा उसमें म्लेक्षों को हस्ताक्षेप करनेकी शक्ति स्वभावतः ब्रज-भाषा ने इस अतिथि को शरण दी। फलतः इन भाषाओं से क्रमश; एक नवीन भाषा की उत्पत्ति हुई जिसको उर्दू कहते हैं।

अब कुछ उदाहरण देकर यह बतलाया जायगा कि उर्दू भाषा यह परिवर्तन कैसे हुआ और वर्तमान रूप उसे मिला। सन् ११९२ ई० चन्द कवि ने पृथिवी राज रासो की रचना कीं जिसकी भाषा में अरबी और फारसी की झलक को देखकर आश्चर्य होता है चौदहवीं सदी में अमीर खुसरू ने ब्रज भाषा के नियमों के आधार पर ही भांति २ के छन्द लिखवा कर आरम्भ किया। जैसेः——

१ ज़हाले मिस्कीं मकुन तग़ाफ़ुल।
  बराय नैना बनाए बतियां॥
सखि पिया को जो मैं न देखूं।
  तो कैसे काटूं अंधेरी रतियां॥
२ लोध फिर करी मुरदा संग।
  हल्दी ज़ीरा एक एक टंग॥

खुसरो की पहेलियों में छन्द दोहरों के ढंग की हैं पर फ़ारसी अपना ज़ोर दिखा रही है। खुसरू के बाद सुलतान उसेन शर्क़ी ने जो गान विद्या में निपुण था ध्रुपद चार पंक्तियों के बदले २ कर दीं।

पन्द्रहवीं सदी में लोदी के शासन काल में कायस्थों ने फारसी का पढ़ना शुरू किया। काशी निवासी सुप्रसिद्ध कवि कबीर इसी समय में हुए। उनके दोहरों में फारसी अरबी शब्द देखिये! कबीर सरीर सराय है क्योंकि सोये सुख चैन कूच नकारा सांस का बाजत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है दिन रैन। गुरू नानक की रचना ये जिनका १५ शदी के अन्त में देहान्त हुआ भी अरबी फारसी के शब्दों की बहुत झलक है।

सांस मास सब जीव तुम्हारा,
तू है खरं पियारा।
नानके शायर एव कहत है,
सच्चे परवर दिगारा॥

१६ सदी में शेरशाह के शासन काल में मलिक मुहम्मद जांसी एक कवि हुये उसने पदमावती की कथा पद्य में लिखी। जिससे यह जाना जाता है कि मुसलमान इस देश में रह कर यहां की भाषा किस प्रेम से बोलने लगे थे

जब हिमायूं ने गुजरात (दक्खिन) पर आक्रमण किया तो वहां का बादशाह सुलतान बहादुर था। हिमायूं ने उसका क़िला जिस पर विजय प्राप्त करना अत्यन्त ही दुष्कर था, सुलतान बहादुर के विशेष निवासी आदमी रुमीख़ां के षड़यन्त्र से जीत लिया। तथा लूट में हुमायूं का नरेश का प्यारा और बुद्धिमान् तोता जो कि सोने के पिंजरे में रहता था, हाथ आया जब हुमायूं के दर्बार में तोता लाया गया, उस समय रुमीख़ां भी वहां था। तोते ने देखकर पहचाना और कहा "फट पापी रुमीख़ां नमक हराम! सब को ताज्जुब हुआ और रुमीख़ां लज्जा से नतमस्तक हो गया। सारांश यह हुआ कि उस समय भी लोगों की जबान पर अरबी फारसी के शब्द चढे हुए तब हा तो तोते की जबान से 'नमकहराम' का शब्द निकला। पक्षी जो सुनता है वही बोलता है। १७वीं सदी ईस्वी में गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामायण रची। इस ग्रन्थ में भी कहीं २ अरबी व फारसी के शब्द हैं।

माया को माया मिलै कर कर लम्बे हाथ।
तुलसीदास ग़रीब को कोई न पूछे बात॥

इन्हीं दिनों में सूरदास जी ने श्रीकृष्ण भगवान की साहित्य में कविता थी। इनकी रचना में कोई ही पद्य ऐसा हो जो अरबी या फारसी के शून्य हो। जैसे:—

खेत बहुत काहे तुम तान सैन सुनी *आवाज*।
देव न जात पार उतराई चाहत चढ़न *जहाज*॥

स्पष्ट है कि धर्मधुरन्धर विद्वान् अपने छन्दोवद्ध वाक्यों में फारसी शब्द बोलते थे तो बातचीत, में साधारण हिन्दूजनता इससे अवश्य ही बोलते होंगे। अन्त में ब्रजभाषा था लालिता और गरिमा राजा जयसिंह सवाइकी गुण-ग्राहक से प्रकृति हुई। उन्होने एक एक अशर्फी दोहे के रचयिताओं और गुणवान पडितों को दे कर देहली और निकटवर्ती स्थानों में उसके प्रति अनुराग पैदा कर दिया।

अब ज़रा इस ज़माने के मुसलमानों की भाषा का आलोचन करना चाहिये। मुसलमानों को यहां आये हुये कई सौ वर्ष बीत गये थे। इसलिये उन्हें संसारी धन्धोंके कारण हिन्दुओं से ब्रजभाषा बोलनी पड़ी होगी।

यद्यपि वह आधी अपनी और आधी उनकी किलाकर टूटी फूटी बोलते होंगे। इस ज़माने में किसी प्रकार का गद्य ग्रन्थ तैयार नहीं हुआ सिर्फ अमीर खुसरू की ग़ज़ल पहेलियां इत्यादि जिनका उल्लेख ऊपर हो चुका है सूचित करती हैं कि मुसलमान भली भांति यह भाषा बोलने लगे थे। यह अवश्य है कि हिंदुओं की अपेक्षा उनकी भाषा में फारसी व अरबी शब्द अधिक थे। ज्यों २ दिन बीतते गये त्यों २ फारसी तुरकी का ह्रास और यहां की भाषा का उत्थान होता गया। यहां तक कि शाहजहां का समय आया इस समय नई दिल्ली तैयार होकर राजधानी बनी। बादशाह, दरबारी और प्रत्येक कला कौशल के लोग दूर २ से वहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर रहने लगे। तुरकी भाषा में उर्दू लश्कर के बाज़ार को कहते हैं। क्योंकि शाही लश्कर के बज़ार और दरबार में मिले जुले शब्द अधिक बोले जाने लगे इस लिये वहां की बोली का नाम उर्दू हो गया।

इस भाषा को रेख़ता भी कहते हैं। रेख़ता अर्थ गिरीपड़ी व तितर बितर चीज़ के हैं। इस में अनेक शब्दों की खिचड़ी है इसी से रेख़ता कहने लगे। इस में अरबी, फारसी तुरकी इत्यादि कई भाषाओं के शब्द सम्मिलित हैं। और अब अंग्रेज़ी का भी प्रवेश होता जाता है वास्तव में इस भाषाकी प्रकृति इतनी मिलनशील है कि हर भाषा से मिलजाती है।

यह तो रही बोलचाल की बात। लिखने पढ़ने के विषय में यह है कि आरम्भ में उर्दू में कोई पुस्तक गद्य में नहीं लिखी गई। कवियों ने जो कुछ कहा पद्य में कहा सरकारी दफ़्तरों के काम फ़ारसी में होते थे इसलिये शुरू में गद्य न बढ़ सकी। लेकिन सरल होने के कारण व इस का भी समय आगया मीर मुहम्मद ताहुसेन खां तहसीन ने चार दर्वेश का क़िस्सा उर्दू गद्य में लिखा। शुजाउद्दौला के समय में गद्य रचना का आरम्भ हुवा और सन् १७६८ ई० में नवाब आसिफ़िद्दौला के समय में अंत हुआ। १७९९ में मीर शेर अली अफ़सोस ने बाग़े उर्दू और सन् १८०५ ई० में आरायशे महफ़ल लिखी। मीर अमन देहलवी ने सन् १८०४ में बाग़ो बाहर बनाई। इन्ही दिनों में अख़्लाक़े महसनी का तर्जुमा हुआ। साथ ही जान गिलग्रिस्ट साहब ने अंग्रेज़ी में क़वायद उर्दू लिखी। सन् १८०३ ई० में श्रीलल्लू जी लाल कवि ने प्रेम सागर बनाया। और वैताल पचीसी जो मुहम्मद शाह के समय में संस्कृत से ब्रजभाषा में आई थी अब सरल भाषा में लिखी गई। सन् १८०७ मीर इन्शा अल्लाख़ा ने क़वायदे उर्दू लिखी और सन् १८७० में मोलवी शाह अब्दुल क़ादिरने कुरान का अनुवाद किया। इसके बाद मौलवी इस्माइल साहब ने कुछ रिसाले उर्दू में लिखे।

सन् १८३५ ई० में सरकारी दफ्तरों में भी उर्दू शुरू हो गई, अख़बारों को आज़ादी मिली। सन् १८३० में उर्दू का पहिला अख़बार निकला उर्दु ने धीरे २ फारसी को पीछे हटाना और अपने को आगे बढ़ाने शुरू किया।

तब सरकार ने यह उचित समझा कि लोगों को इसी भाषा में अंग्रेज़ी विद्या व कला सिखाई जावे। अतः सन् १८४२ ई० से देहली में सोसाइटी क़ायम होकर तरजुमे होने लगे। फल यह हुआ उर्दू भाषा की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होती गई सम्भव है कि यह भी साहित्यिक भाषाओं में स्थान पाने के योग्य हो जावे।

गुजराती भाषा

गुज़राती गुजरात देश की भाषा है पर यह काठियावाड़ में भी बोली जाती है। यह कच्छ देश में भी कचहरी और व्यापार की भाषा है। सिंध के कुछ भाग में भी इस भाषा ने अपना प्रभुत्व जमा लिया है। गुजरात गुर्जरों का देश है प्राचीन गुजरात व गुर्जराष्ट्र में वर्तमान गुजरात का वह भाग शामिल था जो माही नदी के उत्तर में है अर्थात् जिसने कैरा, अहमदाबाद, माहिकंठ पालनपुर और बड़ौदा का कादि है। देश को यह नाम अन्हलवाडा चावड़ें के शासन काल में ७८० और ९५६ ई० के बीच प्राप्त हुआ माही के दक्षिण के प्रदेश को संस्कृत के लेखक लाट नाम से पुकारते थे। यवन काल में शायद वर्तमान नाम पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुर्जर या गूजर यूं तो पंजाब, काश्मीर संयुक्त प्रान्त व मालवामें भी मिलते हैं। पंजाब के शहरों के नाम गुजरात व गुजरानवाला इन्हीं के कारण पड़ गये।

प्रधान गुजरात प्रदेश की उर्वरा भूमि जिसे साबरमती माही नर्बदा और ताप्ती नदियों ने प्रदान किया है सुराष्ट्र व सौराष्ट्र कहलाने लगी इस सौराष्ट्र देश भाषा भी सौराष्ट्रा नाम से प्रसिद्ध हुई। सौराष्ट्र देश उपजाऊ व धन धान्य पूर्ण होने से यूनानी, पार्थ, सिदियन, पारसी, पुर्चगीज़, अरबी, हवशी, डच, फ्रांसीसी और अंग्रेज़ादि अनेक जातियों का समय २ पर व्यापार स्थल बन गया। मौर्य, क्षत्रप, गुप्त, गुर्जर मुगल, मरहटे और अंग्रेज शासक भी इस देश ने देख डाले। इन व्यापारिक और राजनैतिक तबदीली का भाषा पर भी पूरा २ असर पड़ा। आजकल की गुजराती फिर भी हिन्दी से बहुत मिलती है।

भाषा उत्तर की ओर गुजराती पालनपुर रियासत के सिरे तक चली गईहै जिसके आगे सिरोही और मारवाड़ राज्य की भाषा मार वाड़ी है। गुजराती ने सिन्ध के थर पार्कर ज़िले को भी अपना लिया है जिसके उत्तर में मारवाड़ी है। पच्छिम की ओर इसकी सीमा कच्छ की खाड़ी व अरब सागर से बनती है कच्छ में यह लोगों के बोलचाल की भाषा नहीं है केवल राजकाज और साहित्य में ही इसका प्रयोग होता है। हां काठिय वाड़ में इसी गुजराती भाषा का राज्य है। दक्षिण में गुर्जराती सूरत जिले के दक्षिणी सिरे तक चली गई है जहां से आगे डामन इसका मराठी से मेल होता है। इस सीमा के दोनों ओर द्विभाषा प्रदेश है। गुजराती और महाराष्ट्री मिल जुल कर बसे हैं फिर भी प्रत्येक ने अपनी अपनी भाषा को सुरक्षित रक्खा है पूरब की ओर धरमपुर की रियासत गुजराती भाषा ही के अन्दर है फिर पहाड़ियों के किनारे २ यह सीमा उत्तर में पालनपुर तक चली गई है। अरावली पर्वत अजमेर तक चला गया है और मारवाड़ को मेवाड़ से अलग करता है इस के दोनों ओर भील रहते हैं कुछ भील पहाड़ों के नीचे मैदान में रहते हैं। इनकी भाषा भीली है। इन से आगे जैपुरी और मालवी हैं जिसका गुजराती से घनिष्ट सम्बन्ध है। पर यहां गुजराती और हिन्दी का मिलाने वाली कड़ी भीली ही भाषा हैं। अहमदाबाद, महिकंठ, पालनपुर, कच्छ काठियावाड़; कस्बे; कैरा पंचमहल, रेवा कंठ, सूरत और बड़ौदा भाषा हैं, बोलनेवालोंकी संख्या ६३ लाखसे कुछ ऊपर है, इस के अतिरिक्त उद्यमी गुजराती लोग हिन्दुस्तान के बरमा, अंडमन, काश्मीर बिलो-चिस्तान आदि सभी प्रान्तों में व्यापार तथा अन्य काम से फैले हुए हैं। इन प्रान्तों में भी इनकी संख्या १३ लाख से ऊपर है।

यदि गुजराती लिपि के ऊपर लकीर खींच दीजाया करे तो दो ही चार अक्षर देवनागरी से भिन्न रहें इस भाषा का विकास १५ वीं सदी से आरम्भ हुआ उस से पहिले कवि व अन्य लेखक संस्कृत में ही अपनी रचना करते थे अन्य आर्य भाषाओं की भांति इसका पुराना साहित्य भी पद्यमय तथा संस्कृत प्रायः रूपान्तर है थोड़ा पर है सारगर्भित आजकल गुजराती को महात्मा गान्धी सरीखे कर्मयोगी को प्राप्त करने का गौरव है जिनके उच्च विचारों के सामने संसार सिर झुकाता है फिर यदि गुजराती साहित्य में तेज आजावे तो आश्चर्य ही क्या है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरमी भाषा

छिन, शान और कछिन प्रदेश को छोड़ समस्त अपर व लोअर बरमा में बरमी भाषा बोली जाती है। बरमी तथा इसी से मिली हुई ग्रू भाषा के सब बोलने वालों की संख्या ७१ लाख के लगभग है। हां इस की अनेक उपभाषायें हैं जिन में अराकानी प्रधान है। बरमी बड़े विद्याव्यसनी हैं इसी से इन का साहित्य भी विशाल है यह एक ऐसी लिपिबद्ध है जिस का पाली द्वारा देवनागरी से घनिष्ट सम्बन्ध है। यद्यपि इस लिपि में भी द्राविड़ लिपि के समान बहुत मोड हैं। बुद्ध भगवान की कृपा से इनकी भाषा और भाव दोनों भारतीय ढांचे में ढलगये उच्च कोटि के लेख में संस्कृत के बिगड़े हुए अथवा पाली के शब्दों की भरमार रहती है। वैसे शायद ही कोई राजनैतिक व धार्मिक व्याख्यान या समाचार पत्र हो जिसमें निरन्तर पाली का उल्लेख न हो। गत जून मास में भामो से लौटती बार इरावदी स्टीमर पर मुझे एक बरमी मित्र अपनी बरमी भाषा के म्येमा रिव्यू नाम बरमी अख़बार सुनाने लगे जिस का एक छोटा उल्लेख यह है:—

मोता वेरी पिता तत्रु येन बालो न तेखिता
वैरी शत्रु शिक्षिता
तभा मिज़ो न तोभन्ति हन्ता मिज्ये वकोयथा
(सभा) (मध्ये) (शोभन्ति) (हस मध्ये)

पर बोलचाल की भाषा इतनी सरल नहीं है।

जैसे:—

खेमिया	वेमा	त्वारेला
आप	कहां	जांयगे

अन्य भाषाओं में विवरण कर देनेके बाद शेष भारत की भाषा हिन्दी है। बोलने वालों की संख्या तथा बोलने वाले प्रदेश के क्षेत्र फल के अनुसार हिन्दी ही भारत की राष्ट्र भाषा है। यदि पचास वर्ष पहिले से ही हिन्दी-प्रेमी अब का सा उत्साह हिन्दी प्रचार में दिखलाते तो आज सिन्धी पंजाबी काश्मीरी आदि भाषायें अरबी व फारसी कोष व लिपि की शरण न लेतीं। अब भी हिन्दी प्रचारकों का ध्यान दूर पड़े हुये जंगली व पहाड़ी गारो खासिया व कछिन, कोल, भील आदि बिछुड़े हुये हिन्दुस्तानी भाइयों की बोलचाल की भाषा रोमन या अंगरेज़ी अक्षरों के पिंजड़ों में बन्द होने से बच जावे। अगर ईसाई पादरी लोग हिन्दी पर दया करें तो भारत के राष्ट्र निर्माण में बहुत कुछ सहायता पहुंचा सकते हैं। यह माना प्रत्येक मिशान स्टेशन के एक दो या अधिक से अधिक दस मिशनरियों को हिन्दी लिपि सीखने में कुछ अधिक समय लगाना पड़ेगा। पर वे तो थोड़े हैं उनकी इस थोड़ी सी बचत के बदले उनके नये हिन्दुस्तानी चेलों को जो उनसे कई गुनी संख्या में हैं यह भार उठाना पर भी देश ही में विदेशी निवेश बढ़ते जाते हैं। देवनागरी लिपि नष्ट करना प्राय:असम्भव है। पर देश के लोगों को कई लिपि सीखने का भार अधिक हो जाता है यदि न सीखें तो भाई में भेद बढ़ता है।

हिन्दी भाषा के साहित्य, उत्पत्ति आदि पर अच्छी पुस्तकें उपलब्ध हैं इस लिये "भूगोल" उनको दुहराने का दुस्साहस व व्यर्थ परिश्रम न करेगा हां हिन्दी भारत वर्ष की भर का निर्विवाद राष्ट्र भाषा है। जो प्रान्त हिन्दी भाषा भाषी नहीं हैं। उन में भी यदि कोई भाषा समझी जाती है या टूटी फूटी रीति से बोली जाती है तो वह हिन्दी ही है। चाहे मैं रामेश्वरमें गया चाहे खैबर प्रदेश में चाहे चित्रगढ़ सादिया या द्वार का गया यहां तक कि बिलोचिस्तानकी पहाड़ियों और बरमा के बुद्ध मन्दिरों में भी हिन्दी के शब्द सुनाने का सौभाग्य हुआ। हिन्दी द्वारा अपना अभिप्राय समझाने में तो मैं हिन्दुस्तान के किसी भाग में असफल न रहा सिन्ध बिलोचिस्तान सीमा प्रान्त व काश्मीर में फ़ारसी के और दक्षिण भारत व बङ्गाल बरमा आदि में सस्कृत के शब्द अधिक लाने पड़े। स्टेशन पर अंग्रेजी की अधिकता है पर पुर्तगीज़ गोआ प्रदेश में रेलवे पर भी मैंने अंग्रेज़ी की हार और हिन्दी ही की जीत होते देखी। मोरम गोआ मोवागोआ आदि स्थानों में शिक्षित लोगोंके लिये भी अंग्रेज़ी बेकार थी। हिन्दी को वे समझते थे। और कुछ बोलने में उन्हे कोई कठिनाई न हुई। त्रिवना पली में मुझे एक अंग्रेज़ी पोशाक वाला मनुष्य मिला मुझे जल्दी गाड़ी छूटने के बारे में एक दो बात अंग्रेज़ी में पूछी। उसने कहा हिन्दी में पूछो।

मुझे बड़ी लज्जा आई पर मेरे मन में यह बात सदा के लिये घरकर गई कि भिन्न २ भाषा वाले हिन्दुस्तानी एक दूसरे से हिन्दी ही द्वारा बात चीत करते हैं। यही बात बरमी, बंगाली, गुजराती, मद्रासी आदि की बातचीत में भी पुष्ट होतेदेखी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाली भाषा।

हिन्दी को छोड़ भारत की भाषाओं में बंगाली बोलने वालों की सख्या सब से अधिक अर्थात् साढ़े चार करोड़ के लगभग है ये प्रायः ...ब क सब बंगाल प्रान्त तथा आसाम के सिलहट व कछार ज़िलों में रहते हैं। केवल ढाई लाख ही बगाली ऐसे हैं जो बगालके बाहर क्लर्की तथा अन्य सरकारी नोकरी पर भारत के दूसरों प्रान्तों में मिलते हैं। पर समस्त बंगाल प्रान्त भर में एक सी बगाली नहीं बोली जाती। यदि पूर्वी बंगाल के मुसलमानों को छोड़ दिया जावे तो साहित्यक भाषा अवश्य एकसी है। किताबें भी बंगाली में सस्कृत शब्दों की अधिकता है बोलचाल में अपभ्रंश अधिक है एत ५० वर्षों से बगाल-साहित्य ने इतनी उन्नति की है जिसे देख दंगरह जाना पड़ता है। पहिले पहल यह विहारी हिन्दी ही सी थी पर वर्तमान-बंगाल दूसरी ओर को जा रही है। शब्द लगभग ६० सैकड़ा सस्कृत कोष से लिये जाते हैं पर लिपि और व्याकरण भिन्न होने से हिंदी और बङ्गाली का सम्बन्ध छूट सा रहा है। वैसे बङ्गाली बड़ी मधुर भाषा है और बङ्गाली-भाषी बड़े ही संगीत-प्रिय हैं। आज कल श्री रबीन्द्र नाथ टैगोर की अलौकिक कविता का रसा स्वाद न करने के लिये संसार के और देशों के कोई विद्वान् बङ्गला का अध्ययन करने लगे हैं।

बंगाली तीन भागों में बांटी जा सकती है पच्छिमी या प्रधान पूर्वी और उत्तरी। पूरब की ओर सिलहट और कछार ज़िलों में दक्खिन की ओर चिटगांव के आगे भी बंगला ही भाषा बोली जाती है। चर चिटगांव की बंगाल अशुद्धतया कलकत्ते के निवासी बगाली के लिये दुर्बोध है। आगे चलकर अधिक भीतरी चिटगांव के पहाड़ी प्रदेश में चाकमा भाषा है जिसकी लिपि बरमी से मिलती है। उत्तरी बंगला गंगा जी के उत्तरी भाग तथा आसाम घाटी के निचले सिरे में बोली जाती है। यह बिहारी हिन्दी और आसामी दोनों ही से मिलती है। दक्खिन पच्छिम में बंगला भाषा उड़िया और रांची की हिन्दी से मिलती है।

बगला और आसामी लिपि एक दूसरे से बहुत मिलती हैं यह देव नागरी ही का रूपान्तर है। पर १६वीं ईस्वी से बगलिपि स्वतन्त्र रूप से चली जाती है।

सम्पादकीय-समाचार।

यह भाषा सम्बन्धी लेख केवल हिन्दी प्रेमियों का ध्यान इस ओर आकर्षित करने के लिये लिखे गये हैं। इन में भाषा-सम्बन्धी सब बातों का दे देना एक दम "भूगोल" के लिये कई कारणों से असम्भव था। केवल दिग्दर्शन मात्र कराया गया है।

यदि हिन्दी प्रेमियों ने इस ओर रुचि दिखला कर "भूगोल" की सहायता की तो अगले हिन्दी सम्मेलनपर सम्भवतःकुछ और प्रयत्नकियाजावेगा

पृष्ठ संख्या पूरी हो जाने तथा सम्मेलन की तिथि समीप होने से "भूगोल" के स्थायी शीषर्क संक्षिप्त समाचार प्रश्नोत्तरी और तार क्रम इस मास न निकल सके, हो सका तो दूसरे मास के कोई पत्र में ये लेख भेज दिये जावेंगे॥

आगामी दिसम्बर में "भूगोल" संसार शासन नामका विशेषांक निकालेगा इस अंक में संसार के समस्त देशों की शासन प्रद्धति का विवरण रहेगा।

इस के तैयार करने में श्रीयुत रहस बिहारी बोस श्रीमान राजा महेन्द्र प्रतापसिंह जी आदि सरीखें महानुभावों ने भी जो इन बातों का निजी अनुभव रखते हैं सहयोग दिया है। इस अंक का मूल्य साधारण अंक के समान (।) चार आना रक्खा गया है और अलग बेचने का प्रबन्ध किया है पर नियत ही संख्या में यह अंक निकलेगा इस भावा ग्राहक तथा शीघ्र मैनेजर के पास पांच आने के टिकट अथवा साल भर का ३) मूल्य नवम्बर के अन्त तक भेज दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DO YOU WANT TO
INCREASE YOUR TRADE?

THE EAST & WEST TRADE DEVELOPER.

The only Commercial Monthly of its kind in the East specially devotee to the promotion & consolidation of the International trade connections.

Subscription Rs. 10 or £ 1.

THE INDIAN MERCANTILE DIRECTORY.

Giving names & addresses of the Merchants, Manufacturers, Exporters, Importers, Agents and Industrial establishments, located everywhere in India, Burma, Ceylon, China, Federated Malay States, Netherland, Philippines, Siam and Straits Settlements dealing in each class of goods, and an up-to-date list of Associations, Colleges, Schools, Hospitals, Newspapers and Libraries. Rs. 10/- or Sh. 15/.

THE MERCANTILE DIRECTORY OF GERMANY.

Gives an up-to-date list of prominent Manufacturers, Merchants Exporters, Importers etc, in Germany, dealing in each class of goods, classified under alphabetical trade headings. Rs. 10/- or Sh, 15/.

THE MERCANTILE DIRECTORY OF JAPAN.

This publication contains an up-to-date list of Merchants, Manufacturers, Importers, Exporters, etc. in Japan, dealing in each class of goods classified under alphabetical trade headings, as also useful facts and figures concerning Japanese trade and industry. Rs. 10-or Sh. 15.

PUBLISHERS—

THE EAST & WEST TRDAE DEVELOPER,

RAJKOT, INDIA.

मारवाड़ जैन सुधारक

मासिक

(निबन्धमाला)

मारवाड़ी जाति का यह एक ही इकलौता मासिक पत्र है। जिस में समाजिक,धार्मिक,नैतिक,ऐतिहासिक, उद्योगिक,व्यापारिक लेख तथा नवीन आविष्कार,हुन्नर और संसारिक घटनाओं पर प्रकाश डाला जाता है। यह मासिक पत्र अपने ढंग का एक ही है। इस की प्रशंसा सर्व पत्रों ने की है। इसका प्रचार भारत के सर्व प्रान्तों में है। वार्षिक मूल्य पेशगी रु० २॥) भेट में उपयोगी पुरुष के। भेजी जाती है। नमूने की प्रति मंगाने से फ्री भेजी जाती है। नाम पता साफ़ २ लिखना चाहिये।

पताः— **मैनेजर—मारवाड जैन सुधारक, सिरोही(राजपूताना)**

स्व० लोक० तिलक के धार्मिकऔर राजनैतिक विचारों का प्रचारक विश्व बन्धुत्व का उपदेशक, स्वराज्य का प्रतिपादक, हिन्दु संघटन का समर्थक, हिन्दुधर्म और हिन्दुजीवन में जागृति पैदा करने वाला सर्वांग सुन्दर राष्ट्रीय साप्ताहिक।

भारतधर्म का नया स्वरूप

विशाल आकर ! नये सुधार !!

बड़े बड़े २० कालम। सुपाठ्य लेख, ऊंचे दर्जे का विनोद, गम्भीर सम्पादकीय विचार, विचारपूर्ण राजनीतिक चर्चा, स्व० लोकमान्य की उत्तेजक स्मृतियां, हिन्दुओं में जाग्रति पैदा करने वाला धर्मविवेचन, मधुर और उत्तेजक कविताएँ व्यापार, कला स्त्री शिक्षा, विज्ञान आदि विषयों का भरपूर ऊहापोह। ये सब बातें नये स्वरूप के 'भारतधर्म' में केवल ३) वार्षिक चन्दा देकर ता० २ जून से पढ़िये। विज्ञापनदाताओं के लिये खास सुभीता रक्खा गया है।

मैनेजर "भारतधर्म" स्टेशन रोड [illegible]रस सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BHUGOL.

The only Geographical monthly in India.

Bhugol aims at enriching the geographical section of the Hindi literature so that Hindi may become the medium of instruction.

Bhugol contains valuable articles on all geographical topics such as Current History Astronomy, Industry, Survey, Trade, Fair, Tour, Exhibition Plant and Animal life. The articles usually follow in series so that they may form the ground work of a series of books on various geographical branches in due course. Climatic chart, brief diary of the month and questions and answers of the **Bhugol** interest even the dullest mind.

In order to furnish first-hand, accurate and reliable information regarding every part of the globe, foreign tours are arranged annually by the Travel Department of the **Bhugol.**

The price of the **Bhugol** covers just the cost of paper, printing, blocks and maps; its workers are all honorary.

Bhugol circulates largely in all parts of India, Burma, Siam, Africa Germany, Turkey, Scotland, America etc. though it is specially sanctioned as a periodical for use in High, Normal and Middle Schools of C. P. & Berar by the Director of Public Instruction and recommended for reading rooms and libraries of High, Normal and Middle Schools of U. P. by the Secretary Text Book Committee U. P.

Subscription Rates			Advertisement Rates	
Single copy Annas	4	Per insertion	Ordinary full one page	Rs. 10
One year Rs.	3		3rd page of the cover	Rs. 12
Foreign Rs.	5		4th page of the cover	Rs. 15
Patrons Rs.	10			

Bhugol insures success to the student in his Examination, pleasure to the teacher and news paper reader, guidance to the tourist, profits to the trader and fresh openings to the unemployed.

Whatever your vocation in life may be, **Bhugol** is sure to interest and instruct you.

Just remit Rs 3 (one year's subscription) by money order or as. 4 (four) for a single copy and you will realise the truth of every word said here.

Write to the:—

MANAGER BHUGOL,

Meerut. (U. P.)

INDIA.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

...lished by The Editor and Printed by B. Bankey Lall Kshatrya at the Sahitya Press, Meerut.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
(Regd. No. A—1333)

भारतीय भाषाएं।

[हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन अंक]

वर्ष २] नवम्बर १९२५ [संख्या ७

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एक मात्र सचित्र मासिक पत्र।

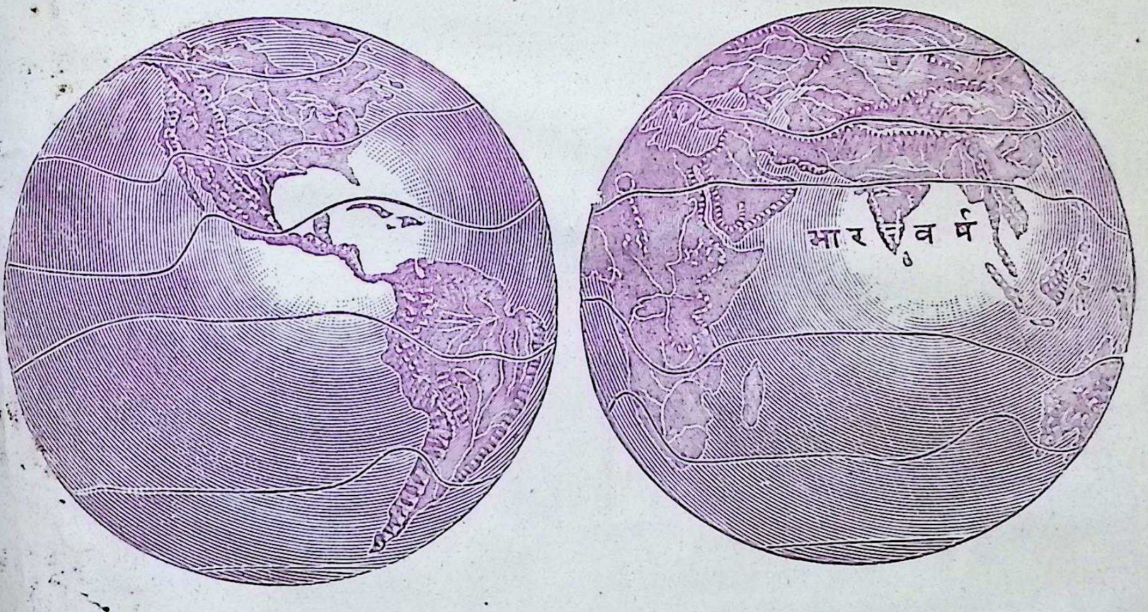

भूगोल अनुभव हेतु यह, "भूगोल" पत्र अमोल है।
"भूगोल" कहता है निरख, भू गोल है भू गोल है।

सम्पादक—
रामनारायण मिश्र बी० ए०

वार्षिक मूल्य
सर्व साधारण से ३)] संरक्षकों से १०) एक प्रति का मूल्य [चार आने।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची ।

१-इरानी भाषाएं श्रीयुत रामप्रकाश जी	१	५-हिन्दी भाषा के अनेक रूप	१३
२-तिब्बति भाषा	५	६-उर्दू भाषा का संक्षिप्त इतिहास श्री० रघुनाथ सहाय जी शातिर बी० ए०	२०
३-कूकी चीन भाषा	७	७-सम्पादकीय समार्चार	२६
४-उड़िया भाषा	९		

भूगोल की नियमावली ।

(१) 'भूगोल' प्रत्येक मास की १० तारीख तक प्रकाशित होगा ।

(२) इसका अग्रिम वार्षिक मूल्य सर्व साधारण से मेरठ में २॥), बाहर ३) और विदेशों में ५) है । एक प्रति का मूल्य ।) है, नमूने की कापी बिना मूल्य किसी को नहीं दी जायगी ।

(३) संरक्षकों से उनके सम्मानार्थ १०) वार्षिक है। आजन्म संरक्षकों से केवल एक बार १००)

(४) पत्र व्यवहार के समय, चन्दा भेजते समय अथवा कार्यालय से किसी प्रकार की लिखा पढ़ी करने के समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये ।

(५) लेख, कविता, समालोचनार्थ पुस्तकें और बदले के पत्र सम्पादक 'भूगोल' मेरठ के पते से आने चाहियें ।

और मूल्य तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र मैनेजर 'भूगोल' मेरठ के पते से आने चाहियें ।

(६) किसी लेख या कविता को घटाने बढ़ाने, प्रकाशित करने या न करने, लौटाने या न लौटाने का अधिकार सम्पादक को हैं । सम्पादक जिन लेखों का लौटाना उचित समझते हैं उनका डाक और रजिष्ट्री का व्यय प्राप्त होने पर वे लौटाये जायेंगे अन्यथा नहीं ।

(७) इस पत्र में प्राय: सब लेख भूगोल सम्बन्धी ही होंगे ।

(८) सचित्र लेखों के चित्रों का प्रबन्ध लेखक महाशय को करना होगा ।

सम्पादक—'भूगोल' मेरठ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

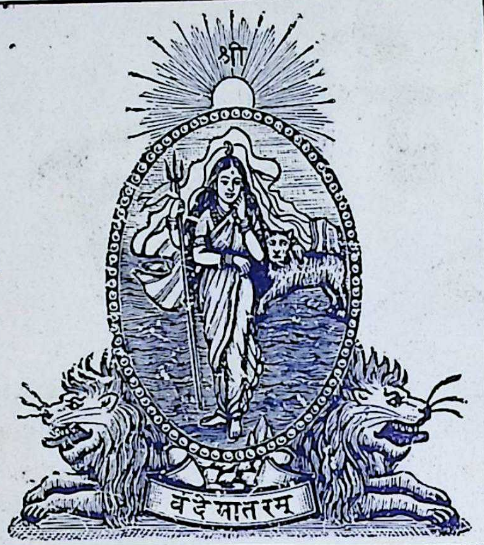

ब्रजभाषा (सूरदास)

व्रज घर घर सव भोजन साजत ।
सव के द्वार वधाई बाजत ॥
सकट जोरि लै चलै देव वलि ।
गोकुल व्रजवासी सव हिलिमिलि ॥
दधि-लोनी मधु साजि मिठाई ।
कहँ लगि कहउं सबै बहुताई ॥
घर-घर तें पकवान चलाये ।
निकसि गांव के गोइंडे आये ॥
व्रजवासी तहँ जुरे अपारा ।
सिन्धु समान न वार न पारा ॥
पैंड़े चलन नहीं कोउ पावत ।
सकट चले सव भोजन आवत ॥
सहस सकट चले नंद महर-के ।
अवर सकट कितने घर घर के ॥
सूरदास प्रभु महिमा सागर ।
गोकुल प्रकटे हैं हरि नागर ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

{ Sanctioned as a Periodical for use in High, Normal and Middle Schools of Central Provinces and Berar by the Director of Public Instructions C.P. }
Also recommended for reading rooms and libraries by the Secretary Text Book Committee U. P.

वर्ष २ } मार्गशीर्ष–१९८२–नवम्बर सन् १९२५ ई० { सं० ७

ईरानी भाषायें ।

(लेखक—श्रीयुत रामप्रकाश जी)

पूरब की ओर बढ़ते २ ईरानी लोग यारकन्द तक पहुँच गये। किन्तु उनकी भाषा जो जातीय भाषा थी केवल पामीर में ही रही। और सैरीकोल पूर्वी सीमा बन गई। उन मनुष्यों ने जिन्हों ने पच्छिम की ओर यात्रा की थी सर्व को ही नहीं जीता किन्तु ईरान् विलोचिस्तान तथा लगभग सम्पूर्ण अफगानिस्तान उनके हाथ में आया। आरम्भ काल में ईरानी भाषा दो विभिन्न भाषाओं में जो साधारणतया परसी और मिडिया कहलाती थीं बटी हुई थी। इसका लिखित प्रमाण मिलता है। फारसी रेकमन्डियों की सरकारी भाषा थी। इसको दारा प्रथम ने भी अपनी सरकारी भाषा बनाया था। जिसका प्रमाण वहिस्तों के लेखों से पाया ।

तीसरी शताब्दी से सातवीं शताब्दी तक यह अर्ध फारसी या सस्निदियों की पहलवी में परणित होती रही। और अंत में आधुनिक फारसी भाषा बन गई। फ़ारसी भारतीय भाषा नहीं है। किंतु मुसलमानी राज्य में यह भारतीय साहित्य की प्रधान माध्यम हो गई। तौ भी फारसी की सब से ज्यादा मशहूर पुस्तकें और कोष भारतवर्ष में ही बनाये गए थे। इसके विपरीति मिडिया खस्ता की भाषा थी। यह केवल मिडिया (उत्तर पच्छिमी फारसी) में ही नहीं किन्तु सम्पूर्ण पूर्वी ईरान में भी बोली जाती थी। इसी से दो विख्यात ईरानी भाषायें अर्थात् बलोची व पश्तो जो भारतीय भाषाओं में से निकली है। इनके अतिरिक्त पामीर और सैरीकोल की ग़लचाभाषायें भी इसी से निकलीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलोच ।

दक्खिन की ओर से इनमें सब से प्रथम बलोच भाषा आती है समस्त ईरानी भाषाओं में इसका बाहरी रूप अत्यन्त विलक्षण है। इस में शब्दों के वे रूप अब भी प्रचलित हैं जिन को फारिस में नष्ट हुवे १००० वर्ष बीत चुके हैं। जैसा इसके नाम से ही प्रगट होता है यह बिलोचिस्तान की प्रधान भाषा है । भूगोलानुसार यह मध्य पहाड़ियों के द्राविड़ भाषा के बोलने वाले बरूहियों से दो भाषाओं में बांट दी गई है। एक भाग उत्तर का और दूसरा भाग मकरान के दक्खिन पच्छिम का है । इस की दक्खिनी सीमा अरब का सागर है जो लगभग सिन्ध नदी के मुहाने से ५८ अंश पूर्व देशान्तर तक है। उत्तर की ओर यह क्वैटा तक फैली हुई है। और पच्छिम की ओर यह हलमन्द की घाटी तक पहुँच गई है। सिन्ध नदी की घाटी आर्य भाषाओं के बोलने वालों से भर हुई है। किन्तु बलोच की पूर्वी सीमा इसी नदी के किनारे २ पच्छिम की ओर डेरा गाज़ीखां तक पहुँच गई है । मकरानी की अपेक्षा उत्तरी बिलोच भाषा ने भारत से बहुत से शब्द लेकर अपना कोष बढ़ाया है। वैसे तो दोनों भाषाओं में ही अरबी और फ़ारसी के अपभ्रंश पाये जाते हैं। बलोच शायद ही लिखी हुई भाषा कही जा सकती है यद्यपि फारसी और रोमन लिपि का प्रयोग इसके लिखने में हुवा है। गत मनुष्य गणनानुसार बलोच भाषा भाषियों की संख्या लगभग डेढ़ लाख थी।

पश्तो ।

बलोच के उत्तर में पश्तो है जो ब्रिटिश और स्वतन्त्र अफगानिस्तान की मुख्य भाषा है। स्वतन्त्र अफग़ानिस्तान में यह हज़ारा अर्थात् वह प्रदेश जो काबुल नदी के उत्तर में है, और जिसमें लघमान और काफिरस्तान शामिल है, की देशी भाषा नहीं है। पर अन्यत्र पर साधारणतया प्रयोग की जाती है। यह स्वात, बूनर और उस प्रदेश की जो सिन्ध नदी के पच्छिम से लेकर डेराइस्माईलखां के दक्खिन तक फैला हुआ है, प्रधान भाषा है । सिन्ध नदी प्राय इसकी पूर्वी सीमा के निकट है । किन्तु यह नदी इसकी पूर्वी सीमा नहीं कही जा सकती क्योंकि इसकी घाटी के नीचे का भाग आर्य भाषा भाषियों से भरा है। उत्तर की ओर पश्तो भाषा ने सिन्ध नदी को पार करके हज़ारा और रावल पिंडी के कुछ भागों में अपना अधिकार जमालिया है। पर यह भाषा बोल चाल में उस स्थान तक प्रयोग में आती है जहां कान्दिया नदी सिन्ध से मिलती है और जहां सिन्ध नदी दक्खिन की ओर को मुड़ती है। गत मनुष्य गणनानुसार ब्रिटिश भारतवर्ष में इसके बोलने वाले बारह लाख के लगभग थे। इसमें वह क्षेत्रफल भी सम्मिलित है जिसमें दो भाषायें बोली जाती हैं। पठान पश्तो भाषा को बोलते हैं। किन्तु हिन्दू आर्य भाषा को जो वहां हिन्दुको कहलाती है, बोलते हैं।

बलोच से भिन्न, पश्तो लिपिबद्ध भाषा है । इसमें लिपि स्वतन्त्र है। इसका आधार फारसी है। इसका साहित्य भी काफ़ी बढ़ा हुवा है। इसका अध्ययन न केवल अंग्रेज़ी विद्वानों ने वरन् रूसी, फ्रांसीसी और जरमनों ने भी किया है। इस भाषा के चुभने वाले स्वर इसके बोलने वालों तथा उनके पहाड़ी घरों के अनुकूल ही है पर और लोगों के लिये वे अत्यन्त कर्णकटु प्रतीत होते हैं। यद्यपि इस भाषा का उच्चारण मधुर नहीं है, तौ भी यह एक प्रबल और मानवी भाषा है। इसको कोई मनुष्य शुद्धता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ठीक तरह से बोल सकता है। यह बलोच के समान विलक्षण नहीं है । इस भाषा ने दूसरी भाषाओं के शब्द तो लिये ही हैं किन्तु इसने भार तीय भाषाओं का व्याकरण भी मिला लिया है। इस भाषा की दो प्रधान शाखायें हैं अर्थात् उत्तरी पूर्वी भाषा या पर्वती और दक्खिनी पच्छिमी भाषा या पश्तो हैं। इनमें उच्चारण के अतिरिक्त बहुत कम भेद है। इनमें एक नाम दो भिन्न प्रकार से बोला जाता है। इनमें से प्रत्येक उपभाषा है जिनमें अन्तर केवल स्वर के उच्चारण में होता है। उदाहरणार्थ अफरीदी उपभाषा में दीर्घ आकारान्त शब्द बहुतायत से मिलते हैं। पर वज़ीरी उपभाषा में आ के स्थान में ओ उ के स्थान में इ आदेश होता है।

औरमुरी।

पश्तो से मिलती हुई पर पृथक एक दूसरी भाषा औरमुरी है। यह एक छोटी जाति से बोली जाती है। ये अपने को बारकियों की जिन्होंने महमूद गज़नी को भारत के आक्रमण के समय साथ दिया था, सन्तान कहते हैं। यह कहा जाता है कि इन बारकियों ने सोमनाथ के विख्यात फाटकों को लूटने में बड़ा पराक्रम दिखलाया था। और इस से प्रसन्न होकर सुल्तान ने करीगोराम के चारों ओर का प्रदेश इनको सदा के लिये जागीर के तौर पर दे दिया था। पश्तो के सामान ही यह ईरानी भाषा मिडिया का अंग है यह पश्तो से भी अधिक स्वर रहित है इसमें एक ऐसा व्यञ्जन है जो ख़ के समान है और जिसका उच्चारण पठान भी कठिनता से कर सकते हैं।

गलचा

पामीर की ग़लचा भाषायें भी ईरानी से निकलने वाली हैं। इन भाषाओं के जन्म-स्थान बाक़ी, शिगनी, सरीकौली, इश्काशमी और मुनजानी अङ्गरेज़ी सीमा से बाहर हैं। किन्तु मुनजानी भाषा ने दोरा दर्रे द्वारा हिन्दुकुश को पार कर दिया है। यह भाषा चितराल की लियुतकूह घाटी में भी बोली जाती है जहां यह युदगाह के नाम से प्रसिद्ध है। यह मनजानी भाषा से भिन्न है और यह स्वतन्त्र भाषा बन गई है। हिन्दुकुश के पठार में ईरानी भाषाओं का प्रचार नाम मात्र को है। जब पहिले पहल आर्य पामीर में बसगये तब उन में से कुछ ने दर्रों को पार करके लघमान, काफिरस्तान, चितराल गिलगिट और काशमीर में अपना घर बनाया। वे ऐसे समय में आये जब ईरानी भाषाओं की जड़ जमने न पाई थी। और उनके इस नये देश में उनकी भाषा कुछ २ ईरानी तथा आर्य पद्धती के अनुसार स्वन्तत्र रूप से आगे बढने लगी। भारतवर्ष के आर्य जो पंजाब में काबुल की घाटी से घुसे यहाँ की रहने वाली जातियों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। और उनका पिशाच अर्थात् मांसाधारी नाम रक्खा। समय के बीतने पर इस नाम में कई कहावतें जुड़ गईं।

पिशाच।

एक समय पिशाच जाति के मनुष्य वर्तमान् समय की अपेक्षा अधिक भाग में फैले हुवे होंगे। संस्कृत लेखक उनके उपनिवेशों को पच्छिमी पंजाब और सिन्ध में बतलाते हैं। और पिशाच भाषा कहे उदाहरण जिनका उन्होंने प्रयोग किया था उन शब्दों में पाया जाताहै। जिनको यूनानी लोगों ने उत्तरी पच्छिमी भारत में बोले जाने वाले नामों का अपनी पुस्तकों में उल्लेख किया है। दूसरा महाराजा अशोक के उस प्रदेश के शिला लेखों से मिलता है। सचमुच सिन्ध नदी के नीचे की घाटी में वहां की भाषा में इस भाषा का बहुत अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभाव है,वर्तमान् समयमें इन भाषाओंका अधिक प्रयोग पंजाब और सिन्ध में है। इनकी एक बडी अद्भुत लिपि है। वैदिक मन्त्रों के कुछ शब्द आजकल भी यहां अपने प्राचीन रूपमें मिलतेहैं। जो भारतवर्ष में बहुत बिगाडकर बोले जातेहैं।

वास्तव में ये भाषाएँ न ईरानी हैं न आर्य। किन्तु इसमें दोनों के बीच की हैं। इसके दक्खिन की ओर पिशाच भाषाओं में हिन्दुस्तानी मुहाविरे मिल गये हैं। यह परिवर्तन काश्मीरी भाषा में विशेष रूप से हुवा है जिसमें पिशाच शब्द नाम मात्र को रह गये हैं। और इस का प्रधान अंग आर्य भाषाओं से बना है जिस से काश्मीरी भाषा की काया इस प्रकार पलट गई है कि इसको आर्य भाषा कहना अनुचित न होगा। क्योंकि इसमें पिशाच भाषाओं के चिह्न अब भी नहीं आते।

वर्तनमान समय में असली पिशाच भाषाओं की शाखायें ये हैं पशाई जो अफग़ानिस्तान के लघमान में बोली जाती हैं। क़ाफिरी जिसकी प्रधान उपशाखायें बसग़हली, वेई और कहलसा है; चित्राल की भाषा ख़ोवार, और गिलगिट तथा इस के आसपास की शीनहा हैं। शीनहा ही काश्मीरी भाषा का आधार है। इस से कई और भी मिली हुई भाषायें निकली हैं जो सिन्ध नदी की घाटी और स्वात कोहिस्तानों में बोली जाती हैं इनके स्थान पर आजकल पश्तो का प्रचार बढ़ रहा है दूसरों की अपेक्षा ख़ोवार की स्थिति लगभग स्वतन्त्र है. और क़ाफिरी जो कई भागों में विभक्ति हो गई आपस में एक दूसरे से अधिक भिन्न हैं। समस्त पच्छिम की ओर वेसिन वैरी ईरानी मुनजानी से उच्चारण में मिलती है। सम्पूर्ण पिशाच भाषायें साहित्य से शून्य है। हाल में योरुपिय विद्वानों ने इन्हें लिपिवद्ध करना आरम्भ करदिया है इस प्रसंग में प्राचीन प्रचलित कथाओं के अनुसार जानने योग्य बात यह है कि बहद्दकथा नामी अमूल्य पुस्तक जिसकी अब कोई प्रति प्राप्त नहीं है! पहिलेपहल इसी पिशाच भाषामें रचीगईथी।

सिन्धी।

सिन्ध व उस के अड़ोस पड़ोस की भाषा सिन्धी है इस भाषा का लहंडा अर्थात् पच्छिमी पंजाबी से घनिष्ट सम्बन्ध है। एकान्त भाग में होने से इस भाषा की पुरानी विशेषताएं अब भी ज्यों की त्यों हैं कभी सिन्ध में पिसाचों का एक उपनिवेश था उन की भाषा के चिन्ह अब भी कुछ २ सिन्धी में पाये जाते हैं। इस में बहुत कम साहित्य है जो है वह भी नवीन और विशेष कर मुसलमान पीरों का बनाया हुवा ब्रिटिश शासन में आने के बाद यहां अब से लगभग ६५ वर्ष पूर्व फ़ारसी लिपि का प्रयोग हुआ। यदि हिन्दी प्रेमियों में इस समय जाग्रति होती तो वे वैदिक ऋषियों को प्राणप्यारी सिन्धु की घाटी में देवनागरी के बदले यवन लिपि को कभी भी न टिकने देते। फ़ारसी लिपि तथा मुसलमानों की अधिकता होने से फ़ारसी के शब्द सिन्धी एक दम बढ़ गए। इस भाषा की चार शाखायें हैं। सिरैकी अपर सिन्ध की लाड़ी लोअर सिन्ध की, थरेली, थर व रेगिस्तान की और कच्छी कच्छ की भाषा है। सिरो की लहंडा या पंजाबी से मिलती है। थरेली मारवाड़ी से मिल गई है। कच्छी भाषा सिन्धी और गुजराती का मिश्रण है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भारतीय भाषाएं

नोट:- इस रेखा ---- के उत्तर की ओर आर्य भाषाएं और दक्षिण की ओर द्राविड़ है।

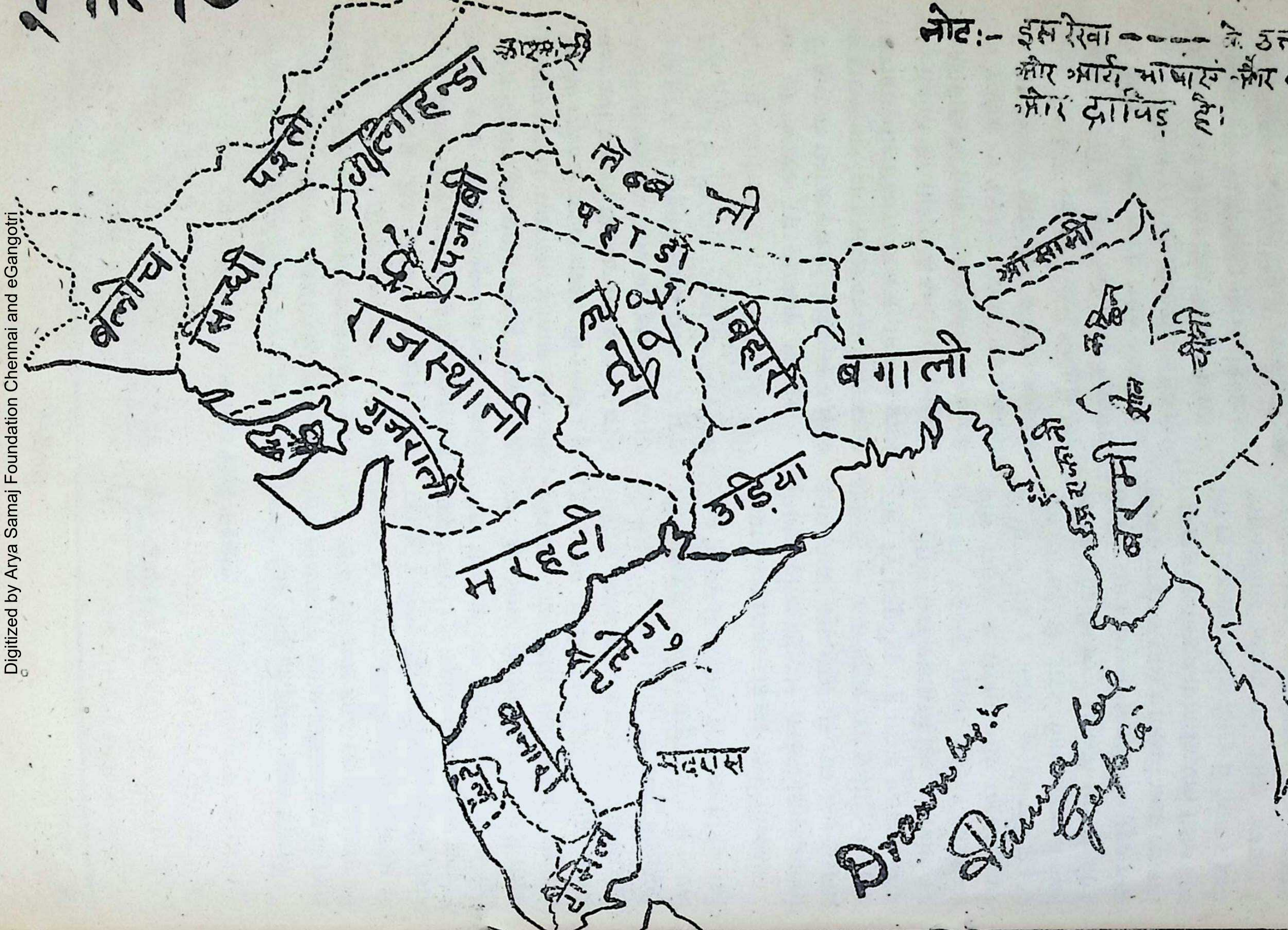

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिब्बती भाषा ।

तिब्बत तथा तिब्बत को छूने वाले हिन्दुस्तान के कुछ पर्वतीय प्रान्तों की भाषा तिब्बती है। वास्तव में इस भाषा के बोलने वाले कुछ ही सहस्र हैं पर इसकी उपभाषाओं के बोलने वालों की संख्या अधिक है इसलिये इसका विवरण करना भी आवश्यक है। तिब्बत शब्द वेदों के त्रिविष्टिप शब्द का अपभ्रंश जान पड़ता है पर तिब्बत निवासी अपने देश को बोद-युल और अपनी भाषा को बादस्कद अथवा भोका कहते हैं । इसी से बदल कर भोटिया नाम पड़ गया है । आजकल भोटिया केवल इस सीमा के निवासियों को कहते हैं तिब्बत के लोग बहुधा हणिया कहलाते हैं। फिर भी तिब्बत शब्द प्रचलित हो गया है।

तिब्बती तथा इसकी उपभाषाएं समस्त तिब्बत, बालतिस्तान, लद्दाख आदि में बोली जाती हैं। श्रीनगर से द्रास तक जाने वाले मार्ग का ज़ोज़िल दर्रा आर्य्य-भाषा को तिब्बती भाषा से अलग करता है। यहीं पूरब की ओर एक अनिश्चत ठेढ़ी विभाजक रेखा खींची जा सकती है। लाहौल, स्पिती, कुनावर, गढ़वाल, नैपाल, सिकम और भूटान के उत्तरी भाग हो इस रेखा को छू सकेंगे । इन प्रान्तों में तिब्बती-भाषा भाषी उत्तर से आकर यहां बसने ही वाले मिलेंगे। पूरब की ओर अधिक आगे बढ़ने पर चीन के सेचूआन प्रान्त में भी तिब्बती भाषा मिलेगी। समस्त प्रदेशों में बोली जाने वाली तिब्बती भाषा एकसी न रह सकी। भिन्न २ भागों में इसके अनेक रूपान्तर हो गये हैं। उच्च कोटि की प्राचीन साहित्य-भाषा बहुत ही सीधी सादी तथा रूढ़-शब्द-प्रधान थी। धीरे २ इस में तद्धित और विभाक्त आदि भाग मिले और विलीन हो गये। मध्यभाग ही इस मूल भाषा का केन्द्र है। उपभाषायें पच्छिम से लेकर पूरब तक क्रमशः स्पिटी, न्यामक जद्द, गढ़वाली कागती, शर्पा, दंजोंका और ल्होका हैं। दार्जिलिंग के उत्तरी पश्चिम वाले तिब्बत प्रदेश में मंग्यूल, खोरसूम और मर्युल उपभाषाएं हैं मंग्युल नैपाल की पच्छिमी सीमा तक बोली जाती है। खोरसूम, कमायूं, गढ़वाल और बशार की सीमा तक पहुँचती है । मर्युल भाषा की प्रधानता पच्छिमी तिब्बत विशेषकर काश्मीर की लद्दाख और बालतिस्तान रियासतों में हैं। इस प्रकार तिब्बत की उपभाषाएं हिन्दुस्तान की पहाड़ी भाषाओं से बहुत कुछ मिली हुई हैं।

तिब्बती वर्णमाला का आधार क, ख आदि देवनागरी लिपि है। सातवीं शताब्दी में इस भाषा में सुन्दर साहित्य का समावेश होने लगा, तिब्बती भाषा की उत्पत्ति और उन्नतिके इतिहासमें दो काल विशेष प्रसिद्ध हैं सातवीं सदी के मध्य में थोन्मी सम्भोट नामी स्रोंगत संगापो महाराज का मन्त्री भारतवर्ष में संस्कृत का अध्ययन करने के लिये भेजा गया कई सदियों तक अनुवाद द्वारा भारतीय ज्ञान का स्रोत तिब्बत में बहता रहा तिब्बती विद्यार्थियों का घोर परिश्रम और अदम्य उत्साह दोनों ही देशों के लिये हितकर हुआ। उन्होंने संस्कृत के अक्षय कोष की सहायता से तिब्बती व्याकरण की नींव डाली। इस प्रकार नींव पड़जाने पर कुछ समय के पीछे इतिहास और पुराण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्धी तिब्बती सहित्य स्वतन्त्र रूप से वृद्धि पाने लगा।

दूसरा काल १२०५ ई० से आरम्भ होता है। मुसलमानों द्वारा मगध की उदन्तपुरी और विक्रम शिला नामी बौद्ध पाठशालाओं के नष्ट भ्रष्ट हो जाने तथा बख्तयार ख़िलजी के हाथों में बंगाल और बिहार की राज्य श्री आ-जाने के पश्चात् काश्मीर के पंडित शाक्य श्री जी महाराज तिब्बत लौट आये। इसी समय दंडिन काव्यादर्श और क्षेमेन्द्र के अवदान कल्प-लता नामी संस्कृत ग्रन्थों का तिब्बती भाषा में छन्दो बद्ध अनुवाद हुआ।

इसके उपरान्त भारत में मुसलमानी राज्य ज़ोर पकड़ता ही गया भारत से आध्यात्मिक ज्ञान का द्वार कदाचित सदा के लिये बन्द होते देख जिज्ञासु तिब्बती लोग चीन की ओर बढ़े। बौद्ध साहित्य की चीन में कमी न थी। इससे तिब्बत की प्यास तो बुझी पर भारतीय भाषा और भाव की छाप जो तिब्बत के साहित्य पर बैठ गई थी दिनों दिन मन्द पड़ती गई। अठार-हवीं सदी के आरम्भ में चीन का यहां पूरा २ अधिकार जम गया तब से बोधि सत्व की छत्रच्छाया में तिब्बती भाषा की काया ही पलट गई, और उच्च प्रदेश में सर्वत्र इसी का प्रयोग होने लगा।

फिर भी हिन्दी भाषा-भाषियों के लिये यह भाषा कठिन न होगी। उपभाषाओं में अधिकतर उच्चारण में ही भेद है। दार्जिलिंग में मुझे कई ऐसे लामा मिले जो पाली के विद्वान् थे और संस्कृत बोल सकते थे साथ ही साथ उन्हें हिन्दी समझने और कुछ २ बोलने का अभ्यास हो गया था। एक पंजाबी महाशय जो तिब्बत से लौटकर आये थे तिब्बती भाषा ऐसी सुगमता से बोलते थे मानों यह उन की मातृभाषा हो। इस भाषा को सीखने का सबसे सस्ता और सरल उपाय तो ऐसे दुभाषियों द्वारा है। वैसे पाली व संस्कृत भाषा द्वारा भी तिब्बती का अध्ययन हो सकता है।

योरप के विद्वानों ने भी कई कोष व व्या-करण अंग्रेज़ी फ्रांसीसी आदि अपनी २ भाषाओं में बनाये हैं उनकी सूची ग्रियर्सन महाशय के लिंग्विस्टिक सर्वे आफइंडिया नामी पुस्तक की तीसरी जिल्द के प्रथम खण्ड में भिन्न २ अध्यायों के अन्त में दी हुई है। बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी का मुख पत्र अक्सर तिब्बती भाषा पर लेख निकालता रहा है। कलकत्ता में इस के दफ्तर से और भी कुछ पुस्तकें अंग्रेज़ी में उपलब्ध हो सकती हैं।

मराठी।

गुजराती भाषा के दक्षिण प्रायः डामन से लेकर गो आतक अरब सागर के किनारे २ महाराष्ट्र अथवा मराठी भाषा का प्रदेश है। बम्बई प्रान्त में दक्खिन पठार का उत्तरी भाग तथा पच्छिमी घाट और अरब सागर के बीच की तट-स्थली मराठी भाषा भाषी है। दक्षिण में मध्य प्रान्त के उस पार उड़िया व तेलिगू से घिरी है। उत्तर में गुजराती और हिन्दी से इसकी सीमा बनी है पूरब की ओर यह छत्तीस गढ़ी हिन्दी से मिल जाती है। दक्षिण की ओर इसे द्राविड़ भाषायें घेरे हुए हैं।

मराठी में उच्च कोटि का प्रचुर साहित्यहै। मरहटों ने मुसलमानों को अपने देश से शीघ्र ही निकाल बाहर कर दिया था इस लिये इस भाषा में यवन शब्द बहुत ही कम हैं। यह देवनागरी लिपि ही में लिखी जाती है। इस की तीन शाखाएं हैं देशी मराठी पूना के चारों ओर तथा उत्तरी कोनकन में बोली जाती है। दक्खिनी कोनकन की भाषा कोनकणी है। तीसरी शाखा बरार और मध्य प्रान्त में हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूकी चीन भाषा।

कलकत्ता से २२० मील उत्तर पूर्वी बंगाल के मैदान से एक बड़ी पर्वत माला उठती है। यह पूर्व की ओर चौड़ी होती जाती है और क्रमशः गारो खासिया और नागा नामों से प्रसिद्ध है। इनकी ऊंचाई तीन हज़ार से बढ़ते बढ़ते मनीपुर में ६००० फ़ीट हो गई है। पूर्व की ओर आसाम प्रान्त में हिमालय की श्रेणियों से इनका संगम होता है यहां से दक्षिण की ओर फिर एक पर्वत समूह आरम्भ होता है जो मनीपुर की घाटी को घेरे हुए है और पच्छिम की ओर सिलहट के दक्षिण तक फैला है। चीन, लूशाई, टिपरा और चिटगांव के पहाड़ी प्रदेश में होती हुई यह पहाड़ी चली गई है। आगे और दक्षिण की ओर अराकान योमामें होती हुई नीग्रेस अन्तरीप तक पहुँचती है। इस प्रकार श्रेणी की पूरी लम्बाई ७०० मील है।

सब से अधिक ऊंचाई मनीपुर के उत्तर में है। वहां से आगे दक्षिण की ओर क्रमशः नीची होती गई है। अराकान के उत्तर में श्रेणी की ऊंचाई फिर कहीं कहीं ८००० फीट तक हो जाती है। यही पर्वत शाखाएं चारों ओर को फैल गई हैं दक्षिण की ओर पच्छिमी शाखाएं दब गई हैं जिससे इनके और समुद्र के बीच उर्वरा प्रदेश निकल आया है पूर्व की ओर अराकान योमा इरावदी के किनारे तक चले गये हैं।

कूकीचीन का यही निवास है इस भाषा के बोलने वालों की संख्या ढाई तीन लाख के लगभग है यह भाषा उदित बरमी भाषा से मिलती जुलती है लिखित से बहुत भिन्न है। तिब्बती से इसका जोड़ बहुत कम बैठता है।

आसामी भाषा।

लखीमपुर और ग्वालपाड़ा ज़िलों के बीच आसाम घाटी में बोली जाने वाली आर्य भाषा का नाम आसामी है। ग्वालपाड़ा ज़िले में यह रंगपुर ज़िले की पच्छिमी बंगाली से मिल जाती है। जिस ज़िले में यह बोली जाती है वहां की एक मात्र भाषा आसामी ही नहीं कहला सकती क्योंकि इसके साथ ही साथ कई अनार्य भाषाओं का भी प्रचार है। यह केवल घाटी की भाषा है। ब्रह्मपुत्रा के उत्तर व दक्षिण में पच्छिमी सिरे पर पहाड़ियां हैं जहां अन्य भाषाएं बोली जाती हैं। आसामी लोगों की कुछ टोलियां सिलहट कछार और मनीपुर में अपने पूर्वजों की भाषा को किसी न किसी रूप में अब तक रक्खे हुये हैं।

आसाम शब्द संस्कृत के असम (अद्वितीय) शब्द से बिगड़ कर बना है जिसे अहोम भी कहते हैं। अंग्रेज़ों ने इसे आसाम बना दिया इसीसे इनकी भाषा को असमिय या अहमिय न कहकर आसामी ही पुकारते हैं।

आसामी भाषा ही ऐसी आर्य भाषा है जो सब से अधिक पूर्वी सिरे पर बोली जाती है। केवल इसके पच्छिम में ही दूसरी आर्य भाषा अर्थात् बंगला है वैसे तीन ओर यह तिब्बती खासिया आदि अनार्य भाषाओं से घिरी हुई है। आसामी स्वतंत्र भाषा है अथवा बंगाली ही का अंग है यह एक विवाद-पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसंग है कुछ लोगों के मत से यह एक बंगला ही का अङ्ग गिनी जानी चाहिये। पर आसामी नवयुवक बंगला की यह प्रधानता स्वीकार करने को तय्यार नहीं हैं। आसामी व्याकरण के ७८ पृष्ठ पर निकोल महाशय लिखते हैं।

जैसा बहुत लोग समझ बैठे हैं आसामी बंगाली का अपभ्रंश मात्र नहीं हैं। यह एक प्रथक और स्वतन्त्र भाषा है जिसका शब्द कोष बंगाली के समान एक ही निकास स्थान अर्थात् संस्कृत से लिये गये हैं। पर यह संस्कृत भी बंगाल से नहीं आई वरन् उत्तरी भारत से आई है।

आसामी व्याकरण और साहित्य वृहत तथा प्राचीन हैं। इसकी प्राचीनता बंगला से कुछ भी कम नहीं, उन्नीसवीं सदी तक आसामी साहित्य बंगला की अपेक्षा किसी रूप में कम न था।

हाल में निस्संदेह शिवसागर में छापेख़ाने को ऐसी सफलता न हुई जो कलकत्ते में हुई। पर इससे आसामी भाषा की राष्ट्रीयता में कुछ भी अन्तर न पड़ा यह सदा से राष्ट्रीय भाषा रही है और आगे भी रहेगी। प्रधान आसामी भाषा शिवसागर के आसपास बोली जाती है।

समस्त आसामी बोलने वालों की संख्या १५ लाख के लगभग है। चूंकि आसामी लोग बहुधा घर पर ही रहना पसन्द करते हैं इस लिये आसामी भाषा भाषी अन्य प्रान्तों में बहुत कम पाये जाते हैं। गत मनुष्य गणना में इस प्रकार थे।

बंगाल की देशी रियास्तों में	६७३
बम्बई में	५
बरमा में	१
संयुक्त प्रान्त में	१६
पंजाब में	१
राजपूताना में	१६
मध्यभारत में	३५
कुल जोड़	७४७

आसामी लोगों को अपनी भाषा पर अभिमान है। इतिहास में यह खूब बढ़ी चढ़ी भाषा है। यहां भारत के कुरु पांचाली के समकालीन ने भगदत्त के विषय में इतिहास ग्रन्थ हाल में मिले हैं।

इसके अतिरिक्त धर्म सम्बन्धी ७० ग्रन्थ हैं। एक प्राचीन व लोकाप्रिय कवि श्री हंकार नाम के थे राजा नरनारायण के समय में अब से साढ़े चारसौ वर्ष पूर्व हुए इन महाराज ने भी अनेक ग्रन्थ रचे हैं। रामाहर सरस्वती महाराज ने रामायण व महाभारत का अनुवाद आसामी भाषा में किया है। चिकित्सा व नाटकों पर भी अनेक ग्रन्थ आसामी भाषा में उपलब्ध हैं। १८१३ में इन्जील का अनुवाद भी इस भाषा में हो गया।

आसामी वर्णमाला देवनागरी ही की भांति है।

आसामी—एइ मकद्दमा मिसा। मै तार घरत कोनो वस्तु सुर

हिन्दी—यह मुकद्दमा (मिथ्या) झूठा। मैं उसके घरमें कोई वस्तु चोरी

आसामी—
करिबालाई। ज़ोबा नासिलो कथा हैसी एई

हिन्दी—
करने के लिये गया नहीं था कथा है यह,

इस प्रकार यह भाषा यदि धीरे २ बोली जावे अथवा देवनागरी लिपि में ही लिखी जावे तो हिन्दी भाषा भाषियों को समझने में विशेष कठिनाई न पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़िया-भाषा ।

उत्कल या उड़ीसा प्रान्त की भाषा उड़िया है। उड़िया भाषा प्रायः ८२,००० वर्गमील क्षेत्र-फल में बोली जाती है इसके बोलने वालों की संख्या लगभग ९० लाख है। इस भाषा का शुद्ध नाम उत्कलीव ओड्री है। सब से पुराने लेख महाराज नरसिंह देव द्वितीय के समय (१२९६ ई०) के इस भाषा में मिलते हैं। नरसिंह देव चतुर्थ के शिला लेख में बहुत से ऐसे वाक्य हैं जो उड़िया भाषा की प्रौढावस्था को सूचित करते हैं। उस समय की उड़िया भाषा वर्तमान उड़िया से लेखन-शैली व व्याकरण में बहुत कुछ मिलती है।

वास्तव में उड़िया भाषा आजकल के उड़ीसा प्रान्त ही में परिमित नहीं है। मिदनापुर और बालासोर ज़िलों के कुछ भागों में भी उड़िया ही बोली जाती है। सिंहभूम ज़िले तथा छोटा नागपुर के अन्तर्गत कई छोटी २ देशी रियासतों में उड़िया का प्रचार है। दक्षिण की ओर मद्रास प्रान्त के गञ्जाम और विज़ीगापट्टम के ज़िलों और उन से लगी हुई देशी रियासतों में अधिकतर उड़िया ही बोली जाती है। इस प्रकार आजकल के चार सरकारी प्रान्तों अर्थात् मद्रास मध्यप्रान्त बिहार और बंगाल में उड़िया भाषा बोली जातीहै

राजनैतिक सीमा।

उड़िया के पूरब की ओर बंगाल की खाड़ी. उत्तर पूरब की ओर हल्दी नदी है जो मिदनापुर के कंटाई ताल्लुके को भी अलग करती है फिर यह बांकुड़ा ज़िले तक काली घाई के लगे लगे उत्तर पच्छिम को मुड़ जाती है। और उड़िया भाषा क्षेत्रफल में मिदनापुर के दाहन, गोपीबल्लभ पुर, झरगांव और बिनपुर थानों को सम्मिलित करती है। फिर यह सिंहपुर ज़िले की पूरबी सीमा की ओर मुड़ती है जहां केवल दालभूम का परगना बंग भाषा भाषी बच जाता है इसके बाद यह सिंहभूम और मयूर भांज रियासत की सीमा सरायकाला रियासत तक बनाती है। यहां फिर एक बार उत्तर को मुड़कर यह सिंहभूम ज़िले को पार करती है रांची के ऊंचे पठार से रुक जाती है। रांची ज़िले के दक्षिण ओर बढ़ती हुई जशपुर रियासत तक पहुंचता है इस रियासत को यह दो भागों में बांटती है दक्षिणी भाग उड़िया भाषा भाषी है। फिर इस भाषा की सीमा दक्षिण की ओर जशपुर और उदयपुर के बीच होती हुई रायगढ़ और सारनगढ़ रियासतों तथा सम्भलपुर और रायपुर ज़िलों को काटती है। विज़िगा पट्टम की जयपुर एजेन्सी व बस्तर रियासतों को पार करके विज़िगापट्टम और गञ्जाम ज़िलों की दूसरी ओर वरवा बन्दरगाह में समुद्र तट पर उड़िया प्रान्त की सीमा समाप्त हो जाती है।

भाषा की सीमा।

उत्तर की ओर उड़िया भाषा की सीमा बंगला, तथा बिहारी हिन्दी पच्छिम की ओर छत्तीस गढ़ी हिन्दी, दक्षिण की ओर तेलिगू भाषा से बनती है। उक्त विशाल प्रान्त की भाषा एक मात्र उड़िया ही नहीं हैं। हां आर्यभाषा यही अकेली है। उड़ीसा के कुछ भागों में ऐसी जातियां हैं जो उड़िया भाषा बिलकुल नहीं जानतीं उनकी बोली एक प्रकार की द्राविड़ व मुंडा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा है। इन में कांभी बोली के बोलने वाले सब से बड़ी संख्या में है। उड़िया भाषा का व्याकरण बंगाली से बहुत कुछ मिलता है।

प्राय: इस के बंगला की तरह संज्ञा के एक वचन व बहुवचन का रूप एकसा रहता है। अधिकतर बहुवचन सूचक संज्ञा के पहिले अनेक संख्या वाची विशेषण जोड़ देते हैं। बंगाली क्रिया के समान इस भाषा की क्रिया के उत्तम व मध्यम पुरुष में एक वचन का बहुत कम प्रयोग करते हैं सों भी या तो अशिक्षित लोगों द्वारा अथवा अनादर प्रगट करने के लिये होता है। बंगला भाषा की अपेक्षा उड़िया में एक विशेषता यह है कि हिन्दी के समान यह भाषा भी जैसी लिखी जाती है वैसी पढ़ी जाती हैं। शब्द के प्राय: प्रत्येक अक्षर का स्पष्ट उच्चारण किया जाता है। यह भाषा सुनने में बहुत ही प्रिय व मधुर और सीखने में अत्यन्त सुगम है। उड़िया भाषा की क्रियायें सीधी सादी तथा पूर्ण हैं। कालवाची रूपों की भरमार है पर यह रूप पेचीदा नहीं हैं और साधारण रीति से समझ में आ जाते हैं। इस भाषा में धातु (In finitive mood) का अत्यन्ताभाव है।

इस प्रकार उड़िया ही वर्तमान अर्द्ध भाषाओं में एक ऐसी भाषा है जो प्राचीन वैदिक काल की संस्कृत से मिलती जुलती है। भाषा की इस शुद्धता का कारण इसकी भौगोलिक स्थिति हैं। उड़ीसा पुराने समय से एक प्रथक देश रहा है। इसके पूरब में समुद्र पच्छिममें पहाड़ी प्रदेश जहां मूल वासियों का निवास था और जहा की जल वायु बदनाम हो चुकी थी। दक्षिण की ओर द्राविड़ भाषा है जो इस से सर्वथा भिन्न है उत्तर की ओर वंगला है। पर उड़ीसा का बंगाल से बहुत कम राजनैतिक सम्बन्ध रहा है।

इस के अतिरिक्त उड़ीसा एक विजित प्रान्त रहा है। आठ शताब्दियों तक यह तिलंगों के आधीन रहा। वर्तमान काल में पचास वर्ष तक यहां भोंसला महाराज का राज्य रहा दोनों ने, अपनी २ छाप देश में लगा दी भाषा में बहुत से तेलिगू और मराठी शब्द व कहावतें भर दी गईं जो अब तक प्रचलित हैं। वास्तव में उड़िया भाषा पर यही विदेशी प्रभाव रहा है उत्तरी भारत की तरह यवन भाषा के शब्दों का मिश्रण नहीं है। हां अब अंग्रेज़ी भाषा के शब्द धीरे २ प्रवेश कर रहे हैं। पर यह अधिकतर शासन सम्बन्धी व कचहरी के शब्द हैं। दूसरी भाषाओं की अपेक्षा उड़िया में एक और विशेषता यह है कि यहां शहरी और गवांरी भाषा में अन्तर नहीं हैं भारत के अन्य स्थानों के विषय में कहा जाता है कि हर दस कोस पर भाषा बदलती जाती है पर उड़ीसा की भाषा में ऐसा रूपान्तर नहीं होता।

उड़िया साहित्य की उत्पत्ति उपेन्द्र भंज से होती है। यह दक्षिण उड़ीसा की गुमसर नाम छोटी सी पहाड़ी रियासत के राजा के छोटे भाई थे। गुमसर रियासत आज कल भी शुद्ध उड़िया का उत्पत्ति स्थान समझी जाती हैं। इन्हों ने अनेक धार्मिक काव्यों की रचना की जो अब भी आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं। उनके जन्म काल का पता नहीं चलता। पर अनुमान किया जाता है कि वे अब से तीन सौ वर्ष पहिले जीवित थे। उनके तीस ग्रन्थ तो अब भी मिलते हैं। दो पद्य कोष हैं। अन्य ग्रन्थों का आधार पुराण आदि ग्रन्थों पर है। इसके सिवा रामायण भगवत गीता आदि प्राचीन ग्रन्थों का भी भाषान्तर हो गया है। आधुनिक उड़िया में बंगाल व अंग्रेज़ी भाषा के अनुवाद बढ़ रहे हैं। मूल ग्रन्थों का अभाव है। पर अब उड़िया लोगों से जाग्रति हो रहे हैं।

उड़िया की वर्ण माला देवनागरी ही के समान है पर शायद ताड़-खजूर की पत्तियों पर सीधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्रा का बनना कठिन था इस लिये लोगों ने देवनागरी की सीधी २ मात्रा के स्थान में मोड़-दार सिरे चलाये जिन से उड़िया लिपि देवनागरी लिपि से बिल्कुल भिन्न प्रतीत होने लगी। इस भाषा के बोलने वालों की संख्या नव्वे लाख के लगभग है जिन में एक लाख के लगभग उड़िया भाषा भाषी लोग भारत के अन्याय भागों में बिखरे हुए हैं।

उड़िया—कौनासी मनुसर जोड़िय पुआ शिला
हिन्दी—किसी मनुष्य के दो पुत्र थे।
उड़िया—सान पुआ बापकु कहिल,
हिन्दी—छोटा पुत्र बाप से कहने लगा।
उड़िया—पे बुआ यह धनमाबे घर अछी ताहामते बहादे।
हिन्दी—छोटे पुत्र ने पिता से कहा हे पिता में जो माल मता है व मुझको दीजिए।
उड़िया—औ से आपना जीना से मानन का वाटि देला और उसने अपनी जीवि का उनको बांट दी।

उदाहरण—अधिक बढ़ाने से लाभ क्या ? हिन्दी और उड़िया का सम्बन्ध इन्हीं दो एक वाक्यों से स्पष्ट है। दोनों भाषाओं का उत्पत्ति-स्थान तो एक है ही वाक्य रचना भी सुबोध हैं।

द्राविड़ भाषा।

द्राविड़ जाति में द्राविड़ और मुंडा दो भाषाओं का प्रचार है पहिले कुछ लोग इन्हें एक ही समझते थे। पर अब उनके उच्चारण, लिंग, संज्ञा के रूप, क्रिया और कर्ता के सम्बन्ध, गणना शैली, निषेध वाची अव्यय धातु और कोष की तुलना करने पर बहुत अन्तर पाया गया है समता कुछ ही कुछ है। ये भाषाएं दक्षिण भारत में और मध्य भारत की पहाड़ियों में बोली जाती हैं। इनकी दो उपशाखायें मुंडा के साथ छोटा नागपुर और संथाल परगना ज़िलों में भी पहुंच गई है बरूही तो बलोचिस्तान में भी प्रवेश कर गई। इस बरूही भाषा से शायद संस्कृत के लेखक भी परिचित न थे क्योंकि जहां संस्कृत पुस्तकों में आन्ध्र या तेलेगू तथा द्राविड़ भाषा का प्राय: उल्लेख आता है वहां बरूही का नाम भी नहीं मिलता। भाषा का यह पुराना विभाग नवीन विभाग से भी मिलता जुलता है जो निम्न प्रकार हैं:—

द्राविड़ समुदाय	बोलने वालों की संख्या
तामिल	१,६५,२५,५००
मलयालम	६०,२६,३०४
कनाड़ी	१,०३,६५,०४७
कोड़गू	३६,१६१
तूलू	५,३५,२१०
तोदा और कोटा	२,१०५
कुरुख	५,६२,३५१
मल्तो	६०,७७७
बीच की गोंड आदि भाषाएं	११,२३,६७४
आन्ध्र-तेलिगू	२,०६,६६,८७२
कन्ध	४,६४,०६६
कोलामी	१,५०५
बरूही	४८,५८६
जोड़	५,६५,१४,५२४

द्राविड़ भाषाओं में निर्जीव पदार्थों के लिंग की गणना नपुंसक लिंग में होती है। पुलिंग और स्त्रीलिंग का भेद सर्वनाम और विशेषण ही में प्रगट रूप से होता है वैसे संज्ञा के पहिले लिंग सूचनार्थ नर और मादा जोड़ देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्राविड़ भाषा के नपुंसक लिंग वाली संज्ञा का बहुवचन बहुत कम होता है। इस में कर्म प्रधान का अभाव है। संयोजक शब्दों की अपेक्षा क्रियाद्योतक संज्ञा अधिकतर प्रयोग में आती है

तामिल।

तामिल अथवा अर्व भाषा दक्षिणी भारत के समस्त भाग को घेरे हुये है। जो मैसूर व पच्छिम की ओर पच्छिमी घाट और उत्तर की ओर मद्रास शहर के बीच में है।

उत्तरी लङ्का की भाषा भी तामिल ही है इसी प्रकार भारतवर्ष के और भागों में भी बाहर जाने वाले कुलियों ने इस भाषा को फैलाया है। घरेलू नौकर व ख़ानसामे की हैसियत से तो भारतवर्ष के दूर २ भागों में भी यह लोग पाये जाते हैं। कुछ तामिल भाषी खानसामे मुझे क्वेटा के आगे चमन सरीखे स्थानों में भी मिले द्राविड़ भाषाओं में तामिल सब से अधिक प्राचीन संगठित, और परिपूर्ण है। इसका विकास बहुत प्राचीन समय से हुआ है इस में शब्दों की अच्छी अधिकता है। इस का साहित्य भी बहुत बढ़ा चढ़ा है साहित्य-भाषा शेन है बोल चाल की कोडुम या कोदून है तामिल व द्राविड शब्द द्रामिड से बिगड़ कर बने हैं। इस भाषा की लिपि भी स्वतन्त्र है।

मलयालम भाषा।

मलयालम तामिल की आधुनिक शाखा है जिस का जन्म नवीं सताब्दी में हुआ। यह माला बार-तट की भाषा है इसकी यरवा नाम उपशाखा कुर्ग में बोली जाती है इस में संस्कृत शब्दों की भरमार है। इसका साहित्य विशाल हैं तथा दक्षिणी भारत की ग्रन्थ लिपि में वद्ध है।

कनारी भाषा।

कनारी मैसूर, घाट प्रदेश तथा बम्बई प्रान्त के दक्षिणी सिरे की भाषा है। इसका साहित्य भी प्राचीन हैं इसकी लिपि तेलिगू लिपि से मिलती जुलती हैं। बदग और कुरुम्ब नाम इसकी दो शाखाएं नीलगिरि पर्वत पर बोली जाती हैं। कुर्ग की कोडगू भाषा भी बहुतों के मत से इसी कनारी की शाखा गिनी जाती है। कोडगू भाषा कनारी और तुलू के बीच की है। तुलू दक्षिणी कनारा की भाषा है। टोडा और कोटा बहुत छोटी छोटी भाषाएं हैं जिन्हें नीलगिरि की कुछ जातियां बोलती हैं।

कुरुख भाषा।

कुरुख या ओराओं भाषा छोटा नागपुर व उसी के निकटवर्त्ती प्रदेश में रहने वाले द्राविड लोगों की भाषा हैं यह प्राचीन कनारी व तैमिल से बहुत कुछ समानता रखती है। यहां के लोगों का कहना है कि उन का और मलेरों का कुटुम्ब कनारा ही से आया था।

मलेर जाति और आगे राजमहल के निकट गंगा तट पर बसी हुई है इस जाति की भाषा मल्तो है। कुरुख तथा मल्तो भाषा में न कोई साहित्य है न लिपि है। मिशनरी लोगों के पहुंचने से उनकी बोली में रोमन लिपि का प्रयोग होने लगा है।

गोंड

मध्य भारत के पहाडी प्रदेश में गोंड भाषा बोली जाती है बहुत से गोंडों ने अपनी भाषा को छोड़ आर्य भाषा को ग्रहण कर लिया हैं। पर असली गोंड तो आन्ध्र और द्राविड़ भाषाओं के बीच की भाषा है। जिसकी कई उपभाषाएं हैं। यह भी साहित्य से शून्य तथा बोलचाल ही की भाषा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी भाषा के अनेक रूप।

(रांची हिन्दी)

कोनो आदमी केर दूझन बैठा रहैं। ऊ मधे छोटा का बाप के कहलक ए बाप खुरजी मधे जे हमर बटवारा है से हम के दे। तब ऊऊ मन के अपना खुरजी बांइट देलक। थोर को दिन नइ थेलक कि छोटका बेटा सोब कुछ जमा कइर के दूर देश चइल गेलक और उहां लुचपनई में दिन बिताते अपन खुरजी उड़ये देलक। जय ऊ सोब उड़ाये चुकलक तब ऊ मुलक में बडडा अकाल झेलक और ऊ गरीब होए गेलक और ऊ जाय के ऊ मुलक केर आदमी मन मधे एक झन ठिन रहे लागलक, जे ऊ के अपन खेत में सुवइर चरायक भेजक। और ऊ ऊ भूसा से जेके सुवमन खात रहैं अपन पेट भरे खोजत रहे और के ऊ ऊ के कोनो गई देत रहैं। तब ऊ के चेत चढ़लक और ऊ कहलक कि हमर बाप केर केत केतइ धांगर मन के खायक से पूरे रोटी होयला और हम भूके मोरत्थी। हम उईठ के अपन बाप ठिन जाब और ऊके कहब ए बा हम सरग केर विरुध और राउर आगु पाप करली हई। हम फेर राउर बेटा कहायक लायक नाखी। हम के राउर धांगर मन मधे एक झन नियर कइर देऊ। तब ऊ उइठ के अपन बाप ठिन चलक मगर ऊ दूरे रहे कि ऊकर बाप ऊके कहलक देइख के ऊकर ऊपर माया करलक और कुइद के ऊके घेचामें लब इट के चुमा करलक। बेटा ऊ के कहलक ए बा हम सरग केर विरुध और राउर आगु पाप करली हई और फेर राउर बेटा कहायक लायक नखी। मगर बाप अपना नोकर यन के कहायक' सोवा से बेस लुगा निकलाए के ऊ के पिंधावा और ऊकर हाथ में अंगूठी और गोड़ में जुता पिंधावा और मोटोल बचरू लाइन के मारा और लगे हमारे खाव और आनन्द करब, काहे किई हमर बेटा मोइर रहे फेर जिलक है। हेराय जाय रहे फेर मिलक है। तब ऊ मन आनन्द करे लागलैं॥

गोरखपुर जिलेकी भोजपुरी हिन्दी।

एक जने के दुइठों बेटा रहैं। ओहिमें से छोटका अपने बाप से कहलस, कोहे बाबूजी घर के धन दौलति में जवन हमार बखरा होय तवन हमकें बांटि दे। तब ओकर बाप ओकर बखरा ओ-कें बांटि दिहलस। थोरिक दिन में छोटका बेटा आपन कुलि धन एकठ्ठ के के परदेस निकसि गइल। और उहां आपन कुलि धन कुकरम में उड़ा दिहलस। जब ऊ आपन सर्बस उड़ा चुकल तब ओहि देस में बड़ा अकाल पडल। तब ऊ बड़ा दरिद्दर हो गइल। तब ऊ ओहि देसके एक धनो अदिमी के इहां जाके रहै लागल। ऊ धनि अदिमी ओकें अपने खेतें सुअरि चरावै के भेजि दिहलस। उहां ओकर मन ओहि घास पात के देखि के जवन सूअरि खाति रहलीं डोलि गइल और मन में कहै लागल की हम कें जोई हो मिलत तंखातीं। लेकिन ओकें केहू किछु नाहीं देत रहल। तब ओकरे सूझल और ऊ अपने मन में कहलस की देख हमरे बाप के केतना मजूरनकें एकतां पुतनाखायेकें मिलत बाकी ऊ भरिपेटखाइबो करै-लैं, अवर हम इहां भुक्खन मरतबांटी, आवँचलीं। अब अपने बापै किहां आउन सें कहीं की हे बाबूजी। हम भगवान् के परतिकूल अवर तुहरे अगाडीं पाप कै चुकलीं, अब हम यह लायक नाहीं बाटीं कि तोहार बेटवा कहाई। से अब तूं हम कें अपने एक चकरिहा के तरें राख। एइसन सोचिके ऊ अपने बाप के लगें चलल। जब लामहीं रहल तब्बे ओकर बाप ओ के देखि के मारे छोह के दौरि के ओकरे लगें गइल और भेंट अँकवारि लिहलस और चुम्मै चाटै लागल तब बेटा कहै लागल की हे बाबू जी हम भगवान् के परतिकूल अवर तोहरे अगाडी पाप के चुकलीं अवर अब एह लायक नाहीं बांटीं की तोहार बेटा कहाइ से अब हम के अपने एक मजूर के तरें राखें। ओकर बापई सुनि के अपने एक नौकर से कहलस की सब से नीक कपड़ा निकारि लै अवं और इन के पहिरावं। अवर इनके हाथ में अंगूटी अवर गोड़े में पनही पहिराव। अवर चल सभें खईं पीईं अवर सुखी करीं। तब सब जनें खुसी मनाव लग लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेलिगू ।

तेलिगू अत्यन्त प्रसिद्ध आन्ध्र भाषा हैं। मद्रास शहर से लेकर उड़ीसा तक भारत के पूर्वी तट की यहीं प्रधान भाषा है। निज़ाम हैदराबाद रियासत के पूर्वी भाग और मध्यप्रान्त व बरार के अत्यन्त दक्षिणी भाग में भी यह भाषा बोली जाती है। इसका विस्तृत साहित्य है और अपनी स्वतन्त्र लिपि से बद्ध है। यह लिपि देवनागरी से मिलती है। पर उड़िया के समान आरम्भ में ताड़ पत्र पर लिखी जाने के कारण इसमें भी बहुत मोड़ हैं उड़ीसा पहाड़ियों में बसे हुए खोंड लोगों की भाषाएं कन्ध और कोलामी हैं पर इन भाषाओं का कुछ भी संस्कार नहीं हुआ।

बरुही भाषा भी असंस्कृत ही है और बिलोचिस्तान के उच्च प्रदेश में सुनने में आती है। एक ओर पड़ जाने से इसका विकास स्वच्छन्द रीति से हुआ है। बलोची लोगों का आकार द्राविडों से बिल्कुल भिन्न हैं। पर भाषा विज्ञान विशारदों का अनुमान है कि दोनों की भाषाएं एक ही स्रोत से निकली हैं।

एक समुदाय का यह भी मत है कि हिन्द महासागर के स्थान में एक महाद्वीप था जहां द्राविड जातिका निवास था कालान्तरमें जातिके कुछ लोग उत्तर बिलोचिस्तान पहुंचे कुछ दक्षिण भारत में। पर यह सन्देह का विषय है जिस का अनुसन्धान भविष्य ही में सम्भव है।

मुंडा ।

मुंडा भाषा भारत की अत्यन्त पुरानी भाषा मानी जाती है। छोटा नागपुर इसका केन्द्र है वैसे बंगाल, उडीसा, मद्रास, मध्यप्रान्त में इस भाषा का अधिकार है। इसका उपनिवेश बरार के उत्तर महादेव पर्वत पर भी है इसमें खेरवाडी कूकूं, खड़िया, जुआंग, सवर औगदावा भाषाएं शामिल हैं। इन भाषाओंकी भी अनेक उपभाषाएं हैं। इन में हो सिंह भूमि के लड़ाकू कोल लोगों की भाषा है। सन्ताली सन्ताल परगना की पहाडी जाति की बोली है। कूर्कू महादेव पर्वत की भाषा है खड़ियो रांची ज़िले के दक्खिनी पच्छिमी कोने व पास की जशपुर और गंगापार रियासतों में बोली जाती है।

सवरे उड़ीसा के निकट मद्रास प्रदेश में बोली जाती हैं। सवर जाति बहुत प्राचीन हैं वैदिक काल में आर्य भी उन से परिचित थे। प्लाइनी और पलोमी नामी प्रसिद्ध प्राचीन विदेशी इतिहास ने भी इनका उल्लेख किया है मुंडा भाषा बोलने वाले सब मिलकर ३२ लाख के लगभग हैं।

राजस्थानी ।

कोई मांणस गा बेटा हा। वां मांय सूं छोडिकिये बाप ने कयो क ओ बावां घर गे धन माल मेंगा म्हारे बट आवे जको म नें दे द्यो। जकाग बाप घर गा धन माल गा बांटा करगे वां नें बांट दियो। थोडा सा दिन पाछे छोडकियो बेटो आप गो सो धन मेलो करगे अलग मुलक में पर गयो ओर वटे कुमारग में सा कई खोय दियो।

सगलो विगाण पछे वीं मुलक में जबरो भारी कूसमो हुवो और व कंगाल हुय गयो। और वोवीं मुलक रे रहिणे आले एक मानस कने जाय गे वीं गे मेले हरण लागो। और वी उन ने आप गा खेती में सूर चरावण वेई हड्यो। ओर वो सूरां गा खावण गां छोडां सूं घणी देरी पेट भराई करतो हो। ओर वीं नें कोई कूंही नहीं देता। जणां वीं ने चेतो हुयो ओर आप गे मन में कयो कि म्हारे बाप गे तो घणाई मांनस है और वां माणसां गे रोवि आंगण पांगाण पडी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे है ओर हूं मरतो मरू हूं। सूं अठियां चाल गे म्हारे बाप कने जासूं ओर वी ने कसूं यो बावा में भगवान गे आगे और थारे मूंढा गे पाप करया है। उकगा अब थारो बेटो कवोवण जोगों नहि रहूयो। पण में ने थारे माणसां में एक माणस बनाय ले। ओर वो उठि गे आप मे बाप गे कने आयो वीं णें घणीं सारी दूर सू वीरे बाप देख्यो जरां दयां कर गे भाग कर सा में जायर घीं ने गलागे लगायो ओर बाला लिया न। ओर बेटे क ओ बावा भगवान गे सांमने ओर थांरी आख्यां में पाप करयां है ओर थारो बेटो वजण जोगी नहीं हूं पण बावे आप गे आगे माणसां नें घयो सग लां सु चोखा गामां और आपां जमीण जीमा ओर भगा करां ईवेई क म्हारे ओ बेटो मर गयो फेरु जायो हैं गूम गयो हा फेरु थाधो है ओर येकोड करण लागा।

बुन्देली (राघो बन्सी)

कोई आदमी के दो लडके थे। वो में से छोटे ने अपने दादा से कहा के दादा धन में से जो मेरो हिस्सा बैठे सा मेहें देव। तब उन के बाप ने अपना सब धन बाट दआ बहोत दिन नहीं बीते कि छोटे लडके ने अपना सब धन जमा करके दूर देस को निकल गयो।

हावड़ौटी हिन्दी (कोटा)

एक सहर में दुरबल बरामणछा। वोरोजी नाकण भिग-श्या कर के आपका उदर-पुरण करे छा। एक गांव में जावे तो भी तीन सर बेकरड़ी आवे। दो गांव जावे जब भी वोही आवे। ओर अंबरामण के एक लड़की कुवांरीछो। जब बरामण की अस्त्री ने कहा के म्हाराज आपणों भाग तो ई मुजब छे और ई कन्न्या का पेला हात कां ई सूं करांगा।

कांगड़ा ज़िले की पंजाबी बोली।

इकसी बुड्ढी पजह रुपये इकसी कराड़ बाल थैनी रक्खे थे। कने तिसते कद्दी २ बुड्ढी थोड़ा २ सौदा लेदी थी। जा इकदिन बुड्ढो कराड़ेते अपनी थैनी मांगी ता कराड़े लेखा करो।

पंज रुपय्ये बाकी देना कढ्ढे। फिर भी बुड्ढी तिसते पाव २ सौदा कद्दी २ लेदी रहीं। जा फिरि लेखा होइया ता पंज रुपय्ये बाकी भी बुड्ढीया दे मुकी गये। इस गल्लादा गल्लान लोंका इह केता जे "पंज पजाहा लाइ गये, पंजा की ल परुओ दम्म कराड़ा बस येई, ता बुड्ढी आवो जाओ"।

मेरठ की जाट-भाषा।

एक दिन अकबर बादसा-ने बीरबल-तें पुच्छा ओ बीरबल तू हमें बलद का दूध ला-दे और नहीं तेरी खाल कढ़वाई जागी। बीरबल-कूं बहोत रंज हुइया ओर हुन्तर प्राण-के अपने घरूं पड़- रहा। बीरबल की लोन्डी ने अपणे मन-में कहा की आज तो मेरा बाप बहोत- सोच में पड़ा हैं आज के जाणे इस-का के ढब हुआ जिब उन ने अपणें बाप कूं पूच्छा अरे बाप आज तेरा के ढब है। बीरबल ने कहा को बेटी कुछ ना है। फेर लोंन्डी ने पूच्छा कि बाप्पू अपने मन का भेद बताणा चाहिये। जिब-उन ने कहा कि बादसा ने कहा कि के-तो बलद का दूध लादे नहीं तझें कोल्हू में पिड़वाऊंगा। मेरे-ते कुछ नहीं कहा गया और हाम्भी भर के आया हूं और कुछ राह नही पाता लोन्डी ने कहा की बाप्पू या तो कुछ भी बात ना हैं। तुम बेफिक्र रहो। बीरबल उठ खड़ा हुआ।

खेर जिब तड़का हुआ तो उस लोन्डी ने के काम करा की अपणा सब सिंगार करा और बहुत अच्छी पुसाक पहर के ओर कुछ लत्ते हाथ में लेके किले के आगे-कूं लिकड़ जमना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर गई । बादसाह किले-पे चढ़ के जमना की सेल कर रहे थे। अकबर ने देखा की बीरबल की लोन्ड़ीं लत्ते धो-रही-है। बादशा ने लोन्ड़ी ते पुच्छा की ऐ लोन्डी आज क्यों तड़के ही तड़के लत्ते धोवण आई-है जब उस लोन्ड़ी ने कहा की बादसा आज. मेरे बाप के लोन्डा हुआ है। बादसा ने छोह में आके कहा की अरी लोन्ड़ी भला कहीं मरद के भी लोंडे होते सुणे हैं। लोंडी ने कहा कि बादसा भला कहीं बलद के भी दूध होता सुणा है। जिय बादसा-कूं कुछ बोल नहीं आया और लान्ड़ी कूं कहदिया की तडके हीतड़के बीरबल कू कचहरी में भेज-दे। बीरबल तड़के ही कचहरी-में गया। बादसा ने पुच्छा की बीरबल लाया बलद का दूध। बीरबल-ने कहा की बादसा सलामत में तो कल तड़के ही लोन्डी के हाथ भेज दिया था। बादसा कू कुछ बोल न आया।

ग्वालियर रियासत की बोली

किसू मानस के दो मोड़ा हते। बिन में से लुहरे भैया ने बाप से कही बाप मेरो बट मोई दे घाल। और बा ने अपणी जागीर बिन में बाट दई, और बहुत दिनन बाद लुहरो मोडा संग को भेलो करके दूर के देस को चल दियो और भेठेनी सगरो माल वाहियात में उडा दियो और जबसगरो माल उडाय चुको मेंठोनी में बडो अकाल पड़ो और तंगी में है गयो। और बा देस की बस्ती के एक मानस से मिलो। और बा ने बिस को सुअरिया चराने आपने खेत में पठै दियो, और मैं वाने मोथा से जो सुअरिया चत्त ही अपनो पेट भरयो। जब वाके में मूड़ लगी तौ सोचो और जी में कह उठो मेरे बाप के बहुत से महीन्दार खूबरोटी खात हैं और बचाय लेते हैं और हूं भूखन मत्त हो, हू अपने बाप के ढिग जाओगे और कहोगे हू ने राम जी की मर्जी के गैर काम कियो और तेरे सामने कियो और अब तेरो मोडा कहलायवो के लायक नानें हू को अपने महीन्दारण में राखले और ठाडो है के अपने बाप के ढिग को चलो॥

करौली और ग्वालियर रितासत की (ब्रजभाषा)

काऊ आदमी के दो मोंडा हे तिन में ते लहौरे अपने बाप ते कही बाप मों को सांभा में ते अपनो बट है-चुको। और वा-नै बिन को अपनी सामा बांट दई। और बौत दिनन के पीछे लहौरो मोडा सब जोर-के दूर प्रदेस में निकर गयौ और भेठानी सगरी सामां उडाय दई।

आगरा ज़िले की देहाती बोली।

एकु आदमी-के दो पूत हे उनि-मैं से लौहरे ने बाप-तें कही कै ऐकाका मेरे बांट कौ मालू मोइ दै दे। तब बाने मालु बिनि कूं बाटि दियो। कछुक दिन बीत लौहारौ छौरा सबु इकठ्ठौ करि करि कै दूरि देस कू चल्यो गयौ महां बाघें अपनौ मालकुसग मैं उडायौ जब सब निबटाई चुक्यौ वा देस में अकाल परयौ। बहु गरीबु होन लग्यौ। तब वा देस के एकु बड़े आदमी के जहां जाइ बग्यौ वा-नैवाक अपने खेतनि में सूगर चराइवे कू भेज्यौ।

मुजफ्फर नगर जिलेको देहाती भाषा

एक सकारी छोटे मुंह के बासनह में थोडी मिठाई घाल के जगल में बोल्ला बोल्ला घर आया। एक बन्दर ने उसने देख लिया। धोरे गया मिठाई देक्खी जिभी बासनह में हथ दे दिया और मुठी भर के मठाई काढणी चाही। इब जीं लिकड़े तो किस ढाल लिकड़े न तो वर्तन का मुंह चौड़ा होता है। और न ओह मुट्ठी खोलता है, न तो ओह लोभ ते हटता, न तूं उसे अकल रस्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
113725

बताती अक मिठाई ने छोड दे ओर अपणी जान बचाने, होत्ते २ यह हुआ अक सकारी आगया हर बन्दर पकड लिया नेठम याही उन लोगों पे हे जी माल के लोभ में पड जाते हैं। आखीर में उन्हें बडा सकारी मौत गिरफ्दार करके ले जाता है।

बीरभूम ज़िले की मुसलमानी (हिन्दी)

एक आदमी का दो लडका रहा। उस लोक के बीच में छोटा लडका आपना बापको बोला, बाप जी बिसय का जो भाग हाम को मिलेगा ओ भाग हाम को दोओ। ओर उस लोकको बिसय भाग कर दिया। थोडा दिन बाद छोटा बेटा सब कुछ बिसय एक जायगा कर के दूर देश चला गिया अर उस जामगा में सो अपना खाराप खियाल में बिसय को उडा दिया।

बुंदेली हिन्दी जिले छिंदवारा।

कोई आदमी के दो छोकरा हते। वो में से नाने छोकरा ने अपने बाप से कहा दादा में धन को जो हिस्सा मेरा है सो मेंहें देदे तो ओ के दाश ने हिस्सा बांटा कर दो। सुत के दिन नहीं भये हते के छोटे छोकरा ने अपने हिस्सा को सबरो धन जमाकर के दूर देस को चली गओ।

मेवाड़ हिन्दी (उदैपुर)

कुणीं मनख के दोय बेटे हा। वां-मां-हूं व्होड़क्यों आप-का बाप-ने कह्यो हे बाप पूंजी-मां-हूं जो म्हारी पांति होवे म्ह-ने द्यो। जद वां-वां ने आपकी पूंजी बांट दीदी। थोड़ा दन नहीं हुया के व्होड़ क्यों बेटो सग को धन भेको करहूर परदेश परो-गयो अर उठै लुच्चापण-मां दन गमांवतां हुवां आपको सग को धन उड़ाय दीदो। जद ऊ सगको उड़ा चुक्यो तदवीं देसमां भारी काळ पड़यो हर ऊ टोटायलो हों-गयो। हर ऊ जाय-नैवा देस-का रहवावा का-मां-हूं एक कै नखे रहवा लाग्यो। वां वां-ने आप-का खेत-मां सूर चरावा-ने मेल्यो। हर ऊ वी छू तरा-हूं या-ने सूर खावा-हा आप-को पेट भरवो चावो हो। हरवा-ने कोई भी कांई नहीं देतो हो। जदवां चेत हुयो हर वीं कह्यो कै म्हारा बाप-के कतर ही दान क्यां-ने खावा-हूं बदती रोटी मिळे है हर हूं भरवां मरू। हूं उठर म्हारा बाप नरमें जाऊंलो हर वां-ने कहूं रमै के है बाप वैंकुण्ठ हूं-उलटो हर आप-के देखतां पाप कीदो है। हू फेरूं आपको बेटो कुहावा जोगो नहीं हूं। म्हन्ने आपका दान क्यां मां हूँ एक के सरीखो कर-द्यो।

अजमेरी हिन्दी (अजमेर)

कस्या आदमी का दो बेटा था। वां दोयां या छोटो छोवो बाप ने कियो बाप म्हारे पांती आवै जो धन महने दे-दे। ओर आपको धन वांने बांट दियो। अर घणा धन कौन हुआ के छोटो बेटो सबै धन भेजो कर दूर देस चल्यो गयो। ओर उन्डे दाय दाम लुचापण में खो दियो। अर जद वै सगलो खरच कर चुक्यो व मुलक में जंगी काल पड्यों अर वै मुंगतो होवा लाग्यो। पर वठैका रहवाला सू मल्यो अर ऊ को खेत में शूर चरावा भेज्यो। अर अं शूर खाता छा जीं छोडा सूं पेटभरवा को त्यार छो। पण कोई अं नै दीना नहीं। अर जद अं नै चेत हुयो व कह्यो म्हारा बाप के कत्ताक चाकरां के रोटी घणी छ अर में तो भूका मरूं छू। मैं अंठकर म्हारा बाप कनेजाअ लो अर अंने कहस्यूं बाप मैं राम जी को अर थारो दोन्या के आगे पाप कस्यो छ अर थारो बेटो कहवा जिस्यो नहीं रह्यो। म्हने थारा नोकर ज्यान एक नोकरा राख ले। अर वै ऊंठ्यो अर बाप कोड़े आयो। वै दूर ही छो कै उंको बाप ऊंनें देख लियो अर अंपै दिया आ गई। अर दौड़ कर अंकी गलाझूमियो अर चाच्यो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लियौ। अर ब्रैटो बाप ने कहौ सै परमेसर अर थारी आख्यां मैं गुणी कास्यो छै अर थारो बेटो कहबा जिस्यो नहीं रह्यो। पण बाप आप का नोकरां ने हुकम कियो कै आछा हूं आछा कपड़ा लाओ आर ईनै पैराद्योअर ई का पग में पग रखी आप तो खाओ अर मजा करों। क्यांकै वैं म्हारो बेटो मर गयो छो अर पाछै जी गयो छै ऊं गम गयो छो अर पाछो लाघायो। अर पै खुशी कर बालाग्यो।

मालवी [रांगड़ी] हिन्दी
झाबुआ रियासत।

एक सरवण नाम करीने आदमी थो। वणी रा मा-बाप आंधा-ऊँ आंधा था। सरवण वणा ने तोक्यों फरतो थैा। चालतां चालतां आँदा आंदीने रस्ता-में तरस लागी। जदी सरवण-ने कीदो के बेटा पाणी पावा महने तरस लगी जादीऊं सरवण ने वठे वेठाये ने पाणो भवाने भरवा ऊं देख्यो। तो जारायो के कोई हरण्यो पाणी भरवा लगा। जदी राजा दशरथू थे तालाव ऊपर गियो। वणो तलाव ऊपर राजा दशरथ-की चोकी थी। जणी वखत सरवण पाणी भरवा लागो जदी राजा दशरथ दूरा-ऊं देख्यो तो जाण्यो के कोई हरण्यो पाणी पीवे हैं। एसो जाणी ने राजा एक-ए बाण मार्यो। जो सरवण रे छाती में लागो। जो सरवण वणी वखत राम राम करवा लागो। जदी राजा ए जाण्यो के ये तो कोई मानस है। एसो जाणीने राजा दशरथ सरवण कने गयो। तो देखे तो अपणाभाणज। राजा सोच करवा पंडयो। अद सरवण बोल्यो के खेर मारी मोत थाणा हाथ से-जलखी थी। अब मारा मा बाप ने पाणी पावज्रो। अतरोकेइ-ने सरवण तो मरि गियो। ने राजा दशरथ पाणी मरीने वेन वेनोई-ने पावा-ने आया। जदीं आंदा आंदी बोल्या के तू कूण है। दशरथ बोल्यो के थाणे काई काम है। थें पाणी पीयो जदी वीनबोली में तो सरवण सिवाय दूसरा का हाथ कोपाणी नी पीया। दशरथ बोल्यो के हूं दशरथ हूं। ने मारा हाथ अज्ञाण में सरवण मरी गयो। आदाआदी सरवण को मरण हुणी ने हा। हा!! करीनेराजा दशरथ ने हराप दीदो के जणी वाणू तूमरने। एसा हराप इहै ने आदा आदी बीगारी गियो।

मालवी सोंद्वाड़ी स्टेट झलावर

वना जो थां के गले घुंगर माल। पांवा का तेवर वाजणा रेवन ड़ा वना जी थां का हाथ में हुय्यो रुमाल। पावां की मेंदी राचणा रे वनड़ा वना जी यें तो वड़ चाल्या पग अधरात। मारी सूती नगरी आजकी रे वन ड़ा।

ककड़ माथे पीपल रे बीरा। अणी पर चड़ जोऊं थारी वाट। माड़ा जायो चूनर लावीया। लावोतो हगरा सारू वानजेरे बीरा। नाइ तर रीजे थारे देश माडी जावियो चूनर लावीयो। मेलूं वोढाल भराई बीरा। ओड़ तो हीरा झरपड़े माड़ो जावीगो चूनर लावीयो। नापूं तो हाथ पचास। तोलूं तो तोला तोह। मांडी जायो चूना लावीयो।

स्टेट दिवास।

कोई आदमी के दो छोरा था, उन में से छोटा छोरा जेओ का बाप से कियो के दाय जीम्ह के म्हारो धन को हिस्सो दे लाख, और ओने उनमें अपना मालताल को बांटो कर दियो फिर थोड़ाई दिन में छोटो छोरो सब अपनी माल मत्ता एकट्ठो करीने कोई एक दूर देस में चलयो गयो। ओखां चैनमेंरैने ओने सब अपनोभ्र व उडे दियो। सब रवर चहु आ पर डनादेस में भीत वड़ो काल पड्यो ओर ओ करवा की मोत अडचन पडवा लागी जदेऊ उना देस में कोई एक आदमी के पास जे ने दिया। ऊ आदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ के सुडला चरावा के अपना खेत में से जाया करे। और सूडला जो कोई फतरा खाता था ओ वो ऊपर जऊ खुसी से रेतो पन ऊवी ओ के कोई ने दियो नीजदे ऊसूर में आयो तो केन लग्यो म्हारा वाप के घरे तो सुकता जमेनत मजूरी करवा वाला केवी पेट भरी ने वचे इतराखावा के मिले ओर हूं यां भूक से मरूं। अवयां सेहूं उठी ने वाप क वांजे ने कूंगा के दाय जी हूं तमारो ओर भगवान को गुनागार हूं ओर ए के उपरान्त हूं थारो छोटो के वावा के लायक नीगियो। म्हारी गिनती तूं अपना नोकर मेंकर फिर ऊवांसे उठी ने अपना वाप के पास आयो ओका वाप ने ऊ दूर छेटी बैं होते ज ओके देख्यो ओर ओ के दया आई ओर भाग्यो आर ओ के गला से चोटई लियो ओर ओ वो मट्ठी दी। फिर उन छोराने ओका वाप से कियो के दाय जी हूं भगवान को ओर तमारो गुनागार हूं ओर हूं तमारो छोरो के वावा के लायक नी हूं। पन वाप ने ओका नोकर होने से कियो के एक भोत अच्छे अंग अंगोलाव ओर एके पेराव ओर एकाहात में अंगूठी पेराव पग में जूतों पेराव। ओर आज जीमो चूठी ने वड़ो हरक अपना मना वांगा क्यों के म्हारा यो मन्यो हुओ छोरो आज जीवतो हुओ यो खोवई गयो थो पनफिर मिल्यो जेदवी वड़ो हर कमना।ा लाग्या अव ओका वड़ो छोरो खेत में थो ओर जदेऊ चल्योओर घरके पास आयो आ के नाच वाको ओर गावा को आवाज सुनानो फिर ओने नोकर होन में से एक के वुलो ने पूछ्यो इन वात को अरथ कै हे फिर ओने कि के थारा भाई आयो हे ओर थारा बाप से ऊंखुसी मजा में मिल्यो जेसे ओने सेल दीवे हे फिर ऊ के घुस्सो धायो ओर घर में जावेनी। जेस ओ को वाप वाहेर ऐने ओ के समजावाला ग्यो पन ओने ओका वाप से कियो के देख हूं थारी इतरा वरस से सेवा करूं ओर थारो मने केनी कदी वी उलाग्योनीं एसो होते वीथने म्हके म्हारा मिंतर वरोवर चेनकर वाके वास्ते कदीवी वकरी को वच्चो दियोनी। ओर जेने थारो माल राम जनी के साथ उडै दियो उना छोरा के वास्ते सेल दीवी। फिर ओने ओसे कियो कि वेटा तूं हमेशा म्हारे जपा सरेहू ओर जो कोई म्हारे पास हे ऊ सव थारो जहोयो थारो भई मन्यो थो ओर पाछो जीवतो हुओ। खोवाई गयी थी ओर पीछो पायो एके वास्ते अपन नेहरक वतानो योजोग है।

गढ़वाली।

एक नौनू जैके नाम रामचन्द्र छयो। वो स्कूल मा पढ़दी छयो, लेकिन चोर वहुत छायों शुरु दिन वैला एक नौना की कलप चोर द्याया, और तिसर दिन एक कियाव चोर द्याया, इनो इनी कैकी वो बड़ो चोर वोई गया, जव एक दिन चोरी करनो छयो, ता कोई आदमिन वेथई पकड़ी द्याया जव वैक नई कैव हौणी छई तव वल वाला कि मेरी मां को वुला द्यावा जव वैकी मां आ ग्याया तव वैल व्वाला कि मि त्यार कंदूड़ पर एक वात वुल दो जव वैकि मां वेक पास गया ता, वैला अपनी मां को कंदूड़ काटि द्याया वैल व्वालो कि अगर मेरि मां मितई पहिला शिक्षा देदीं दी त मिल चेरि कितौ काणि छई, ई वात पर सव खुश होइ गीना, और वैतई कैद से छोड़ द्याया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्दू भाषा का संक्षिप्त इतिहास।

यह बात प्रत्येक व्यक्ति को विदित है कि उर्दू भाषा भारतवर्ष की पूर्वकालीन भाषा नहीं है। यह भाषा व्रज भाषा से निकली है जिसकी वयस ८०० वर्ष की दी है। इसलिये उर्दू भाषा का इतिहास लिखनेसे पूर्व्व हिंदुस्तानकी प्राचीन भाषाओं का उल्लेख करना उचित है।

आजकल की तरह सर्व प्रथम भारतवर्ष की भाषा एक न थी, किसी प्रान्त में कोई और किसी में कोई। सम्भवतः सर्व प्रथम भारत वासियों की भाषा वह थीं जिसके लक्षण चिह्न-वशेष, त्यकिल उड़िया, और तिलङ्गु आदि अवतक वर्तमान है। यह भाषायें संस्कृत से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखती।

भारतवर्ष में सब से पहली आक्रमणकारी क़ौम आर्य्य थी। इसकी भाषा वह थी जो अपने प्राकृतिक रूप से भिन्न होकर अब संस्कृत कहलाती है। इस आर्य्य जाति ने पंजाब में होते हुए, सारे देश पर अपना प्रभुत्व जमा लिया। पूर्ववर्त्ती अधिवासी अशतः लड़ाई में काम आये, कुछ भाग कर पर्व्वतों के शरणागत हुए, और कुछ विजयी जनों की दासता धीउ हुए और शूद्र नाम से विदित हुए। इसी प्रकार भारतवर्ष में चार वर्णों का उदय हुआ। रक्त-वमैल्य की पूर्णतया रक्षा करने के पश्चात् इसे विजयी जाति को ध्यान हुआ कि शूद्रों के साथ आठों पहर वार्त्तालाप करने में पुराचीन भाषा दोगली हो जायेगी। अतः उन्होंने अपनी भाषा को देवनागरी के नाम से प्रचलित किया और शूद्रों से सभाषण करने की नितान्त धर्म्म-सम्बन्धी निषेध किया गया। ...... भाषा स्वभाविक दशा में रही और इस की स्वच्छता ने परशब्दों की फालिया से अपने विमल वस्त्र को परहित नहीं किया। इसी भित्ति पर इन विजेताओं ने अपनी भाषा का नाम संस्कृत स्थिर किया जिसके अर्थ पवित्र एवं परिष्कृत हैं।

यहां पर यह लिखना अप्रसंगोचित न होगा कि यही आर्य्य जाति ईरान् में भी फैल गयी थी और सम्भवतः ईरान नाम ही इसी कारण पड़ा हो। ईरानियों की धार्म्मिक रीति-नीति और अन्य चाल ढाल हिंदुस्तानियों से मिलते जुलते थे परन्तु उनकी भाषा और विष-भूषा में दालचक्र ने परिवर्त्तन कर दिया जब कि भारतीय भाषा सम्प्रदायियों के भीषण आक्रमण से मृतप्रायः होने पर भी पुनरुज्जीवित हो गयी।

रहन-सहन का प्रभाव अवश्य ही पड़ता है। संस्कृत भाषा की उत्पत्ति और उच्चारण ने यहां के लोगों के स्थान पर घर कुछ और ही रूप धारण कर लिया। इसलिये बरों और बाज़ारों में बातचीत करने के लिये पृथक् २ रूप से प्राकृत भाषायें स्वयं उत्पन्न हो गयीं। राजा भोज के समय की नाटक पुस्तकें परिलक्षित करती हैं कि साहित्यिक ग्रान्थिक, एवं राजकीय भाषायें तो संस्कृत थीही किन्तु मामला साधारण जनता से पड़ता है इसलिये सम्भाषणायें पंडितों को भी प्राकृत ही बोलनी पड़ती थी। प्राकृत स्पष्टतया संस्कृत की आत्यजा मालूम होती है क्योंकि उसमें सहस्रों शब्द संस्कृत के हैं और इसी प्रकार व्याकरण के नियम भी है।

हयत् ५४३ बी० सी० में बुद्ध-धर्म्म के प्रवर्तक शाक्यमुनि का प्रादुर्भाव हुआ। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगधदेशसे उठे और वहीं प्राकृत में धर्मोपदेश किया। उन की प्रभावशाली वक्तृता से देश में धर्म्म दावानल की तरह प्रवर्तित हो गया। फलतः मगध देश की प्राकृत समग्र राजदर्बार और कार्यालयों की भाषा हो गयीं। सैंकड़ों किताबें इस भाषा में रचित हुई। चारों ओर मागधी मागधी ही फैल गई। फिर तो यह दावा होने लगा कि मागधी भाषा ४ समस्त भाषाओं की मूल है। किन्तु ज़माना गिरगट है। प्रायः१५०० वर्ष के पश्चात् बौद्धधर्म अपनी भाषा के साथ २ अन्तर्धान हुआ। शंकराचार्य की पुण्यगरिम्य से ब्राह्मणों का सितारा डूबा हुवा फिर चमका। और संस्कृतकी प्रभा-आभा फिर उदित हुई। यहां तक कि राजा विक्रमादित्य के समय में उसकी ज्योति दिन दूनीरात चौगुनी बढ़ती गई। दरबारियों और उच्च कोटि को लोगों में संस्कृत गौरव के साथ, वार्त्तालाप में व्यवहार की जाती थी।

ग्यारहवीं सदी बी० सी० के पूर्व-राजा भारत के समय में ब्रज में वह भाषा बोली जाती थी जिसको हम आजकल ब्रज-भाषा की मूल कह सकते हैं। इस समय भिन्न २ स्थानों की भाषायें वहां की आवश्यकतायें पूरी करतीं थीं। अचानक समय ने फिर पलटा खाया और यवन धर्म्म का पदार्पण हिंदुस्तान में हुआ और उसने इसके धर्म और भाषा में परिवर्तन करना आरम्भ कर दिया। संस्कृत और मौलिक फ़ारसी की भाषा आर्य्यों के सम्बन्ध से जैसा कि हम ऊपर कोष्ठों में लिख आये हैं एक ही दादा की भाषायें हैं। किन्तु समय की उलट फेर ने इन दोनों बहनों की वेष भूषा में आकाश और पाताल का अन्तर उत्पन्न कर दिया प्रचलित फारसी के अब भी कुछ शब्द संस्कृत से सादृश रखते हैं, जैसे पिदर-पित्, मादर-मातृ, जानु-जानु, अस्प-अश्व, ब्रादर-भ्रातृ, दुखतर-दुहितृ, पा-पाद इत्यादि।

यहां पर जो मुसलमान आये वह उस समय की प्रचलित फारसी भाषा बोलते थे और हिन्दूओं हिन्दी के शब्द मिलाजुला कर गुज़ारा करते थे। संस्कृत तो देवानागरी भाषा उसमें म्लेक्षों को हस्ताक्षेप करनेकी शक्ति स्वभावतः ब्रज-भाषा ने इस अतिथि को शरण दी। फलतः इन भाषाओं से क्रमश; एक नवीन भाषा की उत्पत्ति हुई जिसको उर्दू कहते हैं।

अब कुछ उदाहरण देकर यह बतलाया जायगा कि उर्दू भाषा यह परिवर्तन कैसे हुआ और वर्तमान रूप उसे मिला। सन् ११६२ ई० चन्द कवि में पृथिवी राज रासो की रचना की जिसकी भाषा में अरबी और फारसी की झलक को देखकर आश्चर्य होता है चौदहवीं सदी में अमीर खुसरू से ब्रज भाषा के नियमों के आधार पर ही भांति २ के छन्द लिखवा कर आरम्भ किया। जैसेः——

१ ज़हाले मिस्कीं मकुन तग़ाफ़ुल।
बराय नैना बनाए बतियां॥
सखि पिया को जो मैं न देखूं।
तो कैसे काटूं अंधेरी रतियां॥
२ लोध फिर करो मुरदा संग।
हल्दी ज़ीरा एक एक टंग॥

खुसरो की पहेलियों में छन्द दोहरों के ढंग की हैं पर फ़ारसी अपना ज़ोर दिखा रही है। खुसरू के बाद सुलतान उसेन शरक़ी ने जो गान विद्या में निपुण था ध्रुपद चार पंक्तियों के बदले २ कर दीं।

पन्द्रहवीं सदी में लोदी के शासन काल में कायस्थों ने फारसी का पढ़ना शुरू किया। काशी निवासी सुप्रसिद्ध कवि कबीर इसी समय में हुए। उनके दोहरों में फारसी अरबी शब्द देखिये! कबीर सरीर सराय है क्योंकि सोवे सुख चैन। कूच नक्कारा सांस का बाजत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है दिन रैन। गुरू नानक की रचना ये जिनका १५ शदी के अन्त में देहान्त हुआ भी अरबी फारसी के शब्दों की बहुत झलक है।

सांस मास सब जीव तुम्हारा,
तू है खपं पियारा।
नानक शायर एव कहत है,
सच्चे परवर दिगारा॥

१६ सदी में शेरशाह के शासन काल में मलिक मुहम्मद जांसी एक कवि हुये उसने पद्मावती की कथा पद्य में लिखी। जिससे यह जाना जाता है कि मुसलमान इस देश में रह कर यहां की भाषा किस प्रेम से बोलने लगे थे

जब हिमायूं ने गुजरात (दक्खिन) पर आक्रमण किया तो वहां का बादशाह सुलतान बहादुर था। हिमायूं ने उसका क़िला जिस पर विजय प्राप्त करना अत्यन्त ही दुष्कर था, सुलतान बहादुर के विशेष निवासी आदमी रुमीख़ां के षड़यन्त्र से जीत लिया। तथा लूट में हुमायूं का नरेश का प्यारा और बुद्धिमान् तोता जो कि सोने के पिंजरे में रहता था, हाथ आया जब हुमायूं के दर्बार में तोता लाया गया, उस समय रुमीख़ां भी वहां था। तोते ने देखकर पहचाना और कहा "फट पापी रुमीख़ां नमक हराम! सब को ताज्जुब हुआ और रुमीख़ां लज्जा से नतमस्तक हो गया। सारांश यह हुआ कि उस समय भी लोगों की जबान पर अरबी फारसी के शब्द चढे हुए तब हा तो तोते की जबान से 'नमकहराम' का शब्द निकला। पक्षी जो सुनता है वही बोलता है। १७वीं सदी ईस्वी में गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामायण रची। इस ग्रन्थ में भी कहीं २ अरबी व फारसी के शब्द हैं।

माया को माया मिले कर क़र लम्बे हाथ।
तुलसीदास ग़रीब को कोई न पूछे बात॥

इन्हीं दिनों में सूरदास जी ने श्रीकृष्ण भगवान की साहित्य में कविता थी। इनकी रचना में कोई ही पद्य ऐसा हो जो अरबी या फारसी के शून्य हो। जैसेः—

खेत बहुत काहे तुम तान सैन सुनी आवाज।
देव न जात पार उतराई चाहत चढ़न जहाज॥

स्पष्ट है कि धर्मधुरन्धर विद्वान् अपने द्वन्दोवद्ध वाक्यों में फारसी शब्द बोलते थे तो बातचीत में साधारण हिन्दूजनता इससे अवश्य ही बोलते होंगे। अन्त में ब्रजभाषा था लालिता और गरिमा राजा जयसिंह सवाइकी गुण-ग्राहक से प्रकृति हुई। उन्होने एक एक अशर्फ़ी दोहे के रचयिताओं और गुणवान पंडितों को दे कर देहली और निकटवर्ती स्थानों में उसके प्रति अनुराग पैदा कर दिया।

अब ज़रा इस ज़माने के मुसलमानों की भाषा का आलोचन करना चाहिये। मुसलमानों को यहां आये हुये कई सौ वर्ष बीत गये थे। इसलिये उन्हें संसारी धन्धोंके कारण हिन्दुओं से ब्रजभाषा बोलनी पड़ी होगी।

यद्यपि वह आधी अपनी और आधी उनकी किलाकर टूटी फूटी बोलते होंगे। इस ज़माने में किसी प्रकार का गद्य ग्रन्थ तैयार नहीं हुआ सिर्फ अमीर खुसरू की गज़ल पहेलियां इत्यादि जिनका उल्लेख ऊपर हो चुका है सूचित करती हैं कि मुसलमान भली भांति यह भाषा बोलने लगे थे। यह अवश्य है कि हिंदुओं की अपेक्षा उनकी भाषा में फारसी व अरबी शब्द अधिक थे। ज्यों २ दिन बीतते गये त्यों २ फारसी तुरकी का ह्रास और यहां की भाषा का उत्थान होता गया। यहां तक कि शाहजहां का समय आया इस समय नई दिल्ली तैयार होकर राजधानी बनी। बादशाह, दरबारी और प्रत्येक कला कौशल के लोग दूर २ से वहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर रहने लगे। तुरकी भाषा में उर्दू लश्कर के बाज़ार को कहते हैं। क्योंकि शाही लश्कर के बज़ार और दरबार में मिले जुले शब्द अधिक बोले जाने लगे इस लिये वहां की बोली का नाम उर्दू हो गया।

इस भाषा को रेख़ता भी कहते हैं। रेख़ता अर्थ गिरीपड़ी व तितर बितर चीज़ के हैं। इस में अनेक शब्दों की खिचड़ी है इसी से रेख़ता कहने लगे। इस में अरबी, फारसी तुरकी इत्यादि कई भाषाओं के शब्द सम्मिलित हैं। और अब अंग्रेज़ी का भी प्रवेश होता जाता है वास्तव में इस भाषाकी प्रकृति इतनी मिलन-शील है कि हर भाषा से मिलजाती है।

यह तो रही बोलचाल की बात। लिखने पढ़ने के विषय में यह है कि आरम्भ में उर्दू में कोई पुस्तक गद्य में नहीं लिखी गई। कवियों ने जो कुछ कहा पद्य में कहा सरकारी दफ्तरों के काम फारसी में होते थे इसलिये शुरू में गद्य न बढ़ सकी। लेकिन सरल होने के कारण व इस का भी समय आगया मीर मुहम्मद इताहुसेन खां तहसीन ने चार दर्वेश का क़िस्सा उर्दू गद्य में लिखा। शुजाउद्दौला के समय में गद्य रचना का आरम्भ हुवा और सन् १७९८ ई० में नवाब आसिफ़ुद्दौला के समय में अंत हुआ। १७९९ में मीर शेर अली अफसोस ने बाग़-उर्दू और सन् १८०५ ई० में आरायशे महफल लिखी। मीर अमन देहलवी ने सन् १८०४ में बाग़ो बाहर बनाई। इन्ही दिनों में अख़ला के महसनी का तर्जुमा हुआ। साथ ही जान गिलक्रिस्ट साहब ने अंग्रेज़ी में क़वायद उर्दू लिखा। सन् १८०३ ई० में श्रीलल्लू जी लाल कवि ने प्रेम सागर बनाया। और बैताल पच्चीसी जो मुहम्मद शाह के समय में संस्कृत से ब्रजभाषा में आई थी अब सरल भाषा में लिखी गई। सन् १८०७ मीर इन्शा अल्लाखा ने क़वायदे उर्दू लिखी और सन् १८७० में मौलवी शाह अब्दुल क़ादिरने कुरान का अनुवाद किया। इसके बाद मौलवी इस्माइल साहब ने कुछ रिसाले उर्दू में लिखे।

सन् १८३५ ई० में सरकारी दफ्तरों में भी उर्दू शुरू हो गई, अख़बारों को आज़ादी मिली सन् १८३१ में उर्दू का पहिला अख़बार निकला उर्दु ने धीरे २ फारसी को पीछे हटाना और अपने को आगे बढ़ाने शुरू किया।

तब सरकार ने यह उचित समझा कि लोगों को इसी भाषा में अंग्रेज़ी विद्या व कला सिखाई जावे। अतः सन् १८४२ ई० से देहली में सोसाइटी क़ायम होकर तरजुमे होने लगे। फल यह हुआ उर्दू भाषा की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होती गई सम्भव है कि यह भी साहित्यिक भाषाओं में स्थान पाने के योग्य हो जावे।

गुजराती भाषा

गुजराती गुजरात देश की भाषा है पर यह काठियावाड़ में भी बोली जाती है। यह कच्छ देश में भी कचहरी और व्यापार की भाषा है। सिंध के कुछ भाग में भी इस भाषा ने अपना प्रभुत्व जमा लिया है। गुजरात गुर्जरों का देश है प्राचीन गुजरात व गुर्जराष्ट्र में वर्तमान गुजरात का वह भाग शामिल था जो माही नदी के उत्तर में है अर्थात् जिसने कैरा, अहम-दाबाद, माहिकंठ पालनपुर और बड़ौदा का कादि है। देश को यह नाम अन्हलवाडा चावड़ों के शासन काल में ७८० और ९५६ ई० के बीच प्राप्त हुआ माही के दक्षिण के प्रदेश को संस्कृत के लेखक लाट नाम से पुकारते थे। यवन काल में शायद वर्तमान नाम पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुर्जर या गूजर यूं तो पंजाब, काश्मीर संयुक्त प्रान्त व मालवामें भी मिलते हैं। पंजाब के शहरों के नाम गुजरात व गुजरानवाला इन्हीं के कारण पड़ गये।

प्रधान गुजरात प्रदेश की उर्वरा भूमि जिसे साबरमती माही नर्बदा और ताप्ती नदियों ने प्रदान किया है सुराष्ट्र व सौराष्ट्र कहलाने लगी इस सौराष्ट्र देश भाषा भी सौराष्ट्री नाम से प्रसिद्ध हुई। सौराष्ट्र देश उपजाऊ व धन धान्य पूर्ण होने से यूनानी, पार्थ, सिदियन, पारसी, पुर्चगीज़, अरबी, हबशी, डच, फ्रांसीसी और अंग्रेज़ादि अनेक जातियों का समय २ पर व्यापार स्थल बन गया। मौर्य, क्षत्रप, गुप्त, गुर्जर मुगल, मरहटे और अग्रेज शासक भी इस देश ने देख डाले। इन व्यापारिक और राजनैतिक तबदीली का भाषा पर भी पूरा २ असर पड़ा। आजकल की गुजराती फिर भी हिन्दी से बहुत मिलती है।

भाषा उत्तर की ओर गुजराती पालनपुर रियासत के सिरे तक चली गईहै जिसके आगे सिरोही और मारवाड़ राज्य की भाषा मारवाड़ी है। गुजराती ने सिन्ध के थर पार्कर जिले को भी अपना लिया है जिसके उत्तर में मारवाड़ी है। पच्छिम की ओर इसकी सीमा कच्छ की खाड़ी व अरब सागर से बनती है कच्छ में यह लोगों के बोलचाल की भाषा नहीं है केवल राजकाज और साहित्य में ही इसका प्रयोग होता है। हां काठियावाड़ में इसी गुजराती भाषा का राज्य है। दक्षिण में गुजराती सूरत जिले के दक्षिणी सिरे तक चली गई है जहां से आगे डामन इसका मराठी से मेल होता है। इस सीमा के दोनों ओर द्विभाषा प्रदेश है। गुजराती और महाराष्ट्री मिल जुल कर बसे हैं फिर भी प्रत्येक ने अपनी अपनी भाषा को सुरक्षित रक्खा है पूरब की ओर धरमपुर की रियासत गुजराती भाषा ही के अन्दर है फिर पहाड़ियों के किनारे २ यह सीमा उत्तर में पालनपुर तक चली गई है। अरावली पर्वत अजमेर तक चला गया है और मारवाड़ को मेवाड़ से अलग करता है इस के दोनों ओर भील रहते हैं कुछ भील पहाड़ों के नीचे मैदान में रहते हैं। इनकी भाषा भीली है। इन से आगे जैपुरी और मालवी हैं जिसका गुजराती से घनिष्ट सम्बन्ध है। पर यहां गुजराती और हिन्दी को मिलाने वाली कड़ी भीली ही भाषा हैं। अहमदाबाद, महिकंठ, पालनपुर, कच्छ काठियावाड़, कम्बे; कैरा पंचमहल, रेवा कंठ, सूरत और बड़ौदा भाषा हैं, बोलनेवालोंकी संख्या ९३ लाखसे कुछ ऊपर है, इस के अतिरिक्त उद्यमी गुजराती लोग हिन्दुस्तान के बरमा, अंडमन, काश्मीर बिलोचिस्तान आदि सभी प्रान्तों में व्यापार तथा अन्य काम से फैले हुए हैं। इन प्रान्तों में भी इनकी संख्या १३ लाख से ऊपर है।

यदि गुजराती लिपि के ऊपर लकीर खींच दीजाया करे तो दो ही चार अक्षर देवनागरी से भिन्न रहें इस भाषा का विकास १५ वीं सदी से आरम्भ हुआ उस से पहिले कवि व अन्य लेखक संस्कृत में ही अपनी रचना करते थे अन्य आर्य भाषाओं की भांति इसका पुराना साहित्य भी पद्यमय तथा संस्कृत प्रायः रूपान्तर है थोड़ा पर है सारगर्भित आजकल गुजराती को महात्मा गान्धी सरीखे कर्मयोगी को प्राप्त करने का गौरव है जिनके उच्च विचारों के सामने संसार सिर झुकाता है फिर यदि गुजराती साहित्य में तेज आजावे तो आश्चर्य ही क्या है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरमी भाषा

छिन, शान और कछिन प्रदेश को छोड़ समस्त अपर व लोअर बरमा में बरमी भाषा बोली जाती है। बरमी तथा इसी से मिली हुई मूल भाषा के सब बोलने वालों की संख्या ७१ लाख के लगभग है। हां इस की अनेक उपभाषायें हैं जिन में अराकानी प्रधान है। बरमी बड़े विद्यावासनी हैं इसी से इन का साहित्य भी विशाल है यह एक ऐसी लिपिबद्ध है जिस का पाली द्वारा देवनागरी से घनिष्ट सम्बन्ध है। यद्यपि इस लिपि में भी द्राविड़ लिपि के समान बहुत मोड़ हैं। बुद्ध भगवान की कृपा से इनकी भाषा और भाव दोनों भारतीय ढांचे में ढलगये उच्च कोटि के लेख में संस्कृत के बिगड़े हुए अथवा पाली के शब्दों की भरमार रहती है। वैसे शायद ही कोई राजनैतिक व धार्मिक व्याख्यान या समाचार पत्र हो जिसमें निरन्तर पाली का उल्लेख न हो। गत जून मास में भामो से लौटती बार इरावदी स्टीमर पर मुझे एक बरमी मित्र अपनी बरमी भाषा के म्येमा रिव्यू नाम बरमी अख़बार सुनाने लगे जिस का एक छोटा उल्लेख यह है:—

माता वेरी पिता तत्रु येन बालो न तेखिता
वैरी शत्रु शिक्षिता
तभा मिज़ो न तोभन्ति हन्ता मिज्ये बकोयथा
(सभा) (मध्ये (शोभन्ति) (हस मध्ये)

पर बोलचाल की भाषा इतनी सरल नहीं है।

जैसे:—

खेमिया	बेमा	त्वारेला
आप	कहां	जायंगे

अन्य भाषाओं में विवरण कर देनेके बाद शेष भारत की भाषा हिन्दी है। बोलने वालों की संख्या तथा बोलने वाले प्रदेश के क्षेत्र फल के अनुसार हिन्दी ही भारत की राष्ट्र भाषा है। यदि पचास वर्ष पहिले से ही हिन्दी-प्रेमी अब का सा उत्साह हिन्दी प्रचार में दिखलाते तो आज सिन्धी पंजाबी काश्मीरी आदि भाषाएं अरबी व फारसी कोष व लिपि की शरण न लेतीं। अब भी हिन्दी प्रचार कों का ध्यान दूर पड़े हुये जंगली व पहाड़ी गारो खासिया व कछिन, कोल, भील आदि पिछुड़े हुये हिन्दुस्तानी भाइयों की बोलचाल की भाषा रोमन या अंगरेज़ी अक्षरों के पिंजड़ों में बन्द होने से बच जावे। अगर ईसाई पादरी लोग हिन्दी पर दया करें तो भारत के राष्ट्र निर्माण में बहुत कुछ सहायता पहुंचा सकते हैं। यह माना प्रत्येक मिशन स्टेशन के एक दो या अधिक से अधिक दस मिशनरियों को हिन्दी लिपि सीखने में कुछ अधिक समय लगाना पड़ेगा। पर वे तो थोड़े हैं उनकी इस थोड़ी सी बचत के बदले उनके नये हिन्दुस्तानी चेलों को जो उनसे कई गुनी संख्या में हैं यह भार उठाने पर भी देश ही में विदेशी निवेश बढ़ते जाते हैं। देवनागरी लिपि नष्ट करना प्रायः असम्भव है। पर देश के लोगों को कई लिपि सीखने का भार अधिक हो जाता है यदि न सीखें तो भाई में भेद बढ़ता है।

हिन्दी भाषा के साहित्य, उत्पत्ति आदि पर अच्छी पुस्तकें उपलब्ध हैं इस लिये "भूगोल" उनको दुहराने का दुस्साहस व व्यर्थ परिश्रम न करेगा हां हिन्दी भारत वर्ष की भर का निर्विवाद राष्ट्र भाषा है। जो प्रान्त हिन्दी भाषा भाषी नहीं हैं। उन में भी यदि कोई भाषा समझी जाती है या टूटी फूटी रीति से बोली जाती है तो वह हिन्दी ही है। चाहे मैं रामेश्वरमें गया चाहे खैबर प्रदेश में चाहे गिरगढ़ सादिया या द्वार का गया यहां तक कि बिलोचिस्तानकी पहाड़ियों और बरमा के बुद्ध मन्दिरों में भी हिन्दी के शब्द सुनाने का सौभाग्य हुआ। हिन्दी द्वारा अपना अभिप्राय समझाने में तो मैं हिदुस्तान के किसी भाग में असफल न रहा सिन्ध बिलोचिस्तान सीमा प्रान्त व काश्मीर में फारसी के और दक्षिण भारत व बङ्गाल बरमा आदि में सम्कृत के शब्द अधिक लाने पड़े। स्टेशन पर अंग्रेज़ी की अधिकता है पर पुर्तगीज़ गोआ प्रदेश में रेलवे पर भी मैंने अंग्रेज़ी की हार और हिन्दी ही की जीत होते देखी। मोरम गोआ मोवागोआ आदि स्थानों में शिक्षित लोगोंके लिये भी अंग्रेज़ी बेकार थी। हिन्दी को वे समझते थे। और कुछ बोलने में उन्हे कोई कठिनाई न हुई। त्रिचना पली में मुझे एक अंग्रेज़ी पोशाक वाला मनुष्य मिला मुझे जल्दी गाड़ी छूटने के बारे में एक दो बात अंग्रेज़ी में पूछी। उसने कहा हिन्दी में पूछो।

मुझे बड़ी लज्जा आई पर मेरे मन में यह बात सदा के लिये घर कर गई कि भिन्न २ भाषा वाले हिन्दुस्तानी एक दूसरे से हिन्दी ही द्वारा बात चीत करते हैं। यही बात बरमा; बंगाली, गुजराती मद्रासी आदि की बातचीत में भी पुष्ट होते देखी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाला भाषा।

हिन्दी को छोड़ भारत की भाषाओं में बंगाली बोलने वालों की सख्या सब से अधिक अर्थात् साढ़े चार करोड़ के लगभग है ये प्रायः सब क सब बंगाल प्रान्त तथा आसाम के सिलहट व कछार ज़िलों में रहते हैं। केवल ढाई लाख ही बगाली ऐसे हैं जो बगालके बाहर क्लर्की तथा अन्य सरकारी नोकरी पर भारत के दूसरों प्रान्तों में मिलते हैं। पर समस्त बंगाल प्रान्त भर में एक सी बगाली नहीं बोली जाती। यदि पूर्वी बंगाल के मुसलमानों को छोड़ दिया जावे तो साहित्यक भाषा अवश्य एकसी है। किताबें भी बंगाली में सस्कृत शब्दों की अधिकता है बोलचाल में अपभ्रंश अधिक है एत ५० वर्षों से बगाल-साहित्य ने इतनी उन्नति की है जिसे देख दंगरह जाना पड़ता है। पहिले पहल यह विहारी हिन्दी ही सी थी पर वर्तमान बंगाल दूसरी ओर को जा रही है। शब्द लगभग ६० सैकड़ा सस्कृत कोष से लिये जाते हैं पर लिपि और व्याकरण भिन्न होने से हिंदी और बङ्गाली का सम्बन्ध छूट सा रहा है। वैसे बङ्गाली बड़ी मधुर भाषा है और बङ्गाली-भाषी बड़े ही संगीत-प्रिय हैं। आज कल श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर की अलौकिक कविता का रसा स्वाद न करने के लिये संसार के और देशों के कोई विद्वान् बङ्गला का अध्ययन करने लगे हैं।

बंगाली तीन भागों में बांटी जा सकती है पच्छिमी या प्रधान पूर्वी और उत्तरी। पूरब की ओर सिलहट और कछार ज़िलों में दक्खिन की ओर चिटगांव के आगे भी बंगला ही भाषा बोली जाती है। चर चिटगांव की बंगाल अशुद्धतया कलकत्ता के निवासी बगाली के लिये दुर्बोध है। आगे चलकर अधिक भातरी चिटगांव के पहाड़ी प्रदेश में चाकमा भाषा है जिसकी लिपि बरमी से मिलती है। उत्तरी बंगला गंगा जी के उत्तरी भाग तथा आसाम घाटी के निचले सिरे में बोली जाती है। यह विहारी हिन्दी और आसामी दोनों ही से मिलती है। दक्खिन पच्छिम में बंगला भाषा उड़िया और रांची की हिन्दी से मिलती है।

बगला और आसामी लिपि एक दूसरे से बहुत मिलती हैं यह देव नागरी ही का रूपान्तर है। पर १०वीं ईस्वी से बगलिपि स्वतन्त्र रूप से चली जाती है।

सम्पादकीय-समाचार।

यह भाषा सम्बन्धी लेख केवल हिन्दी प्रेमियों का ध्यान इस ओर आकर्षित करने के लिये लिखे गये हैं। इन में भाषा-सम्बन्धी सब बातों का दे देना एक दम "भूगोल" के लिये कई कारणों से असम्भव था। केवल दिग्दर्शन मात्र कराया गया है।

यदि हिन्दी प्रेमियों ने इस ओर रुचि दिखला कर "भूगोल" की सहायता की तो अगले किसी सम्मेलनपर सम्भवतःकुछ और प्रयत्न कियाजावेगा

पृष्ठ संख्या पूरी हो जाने तथा सम्मेलन की तिथि समीप होने से "भूगोल" के स्थायी शीर्षक संक्षिप्त समाचार प्रश्नोत्तरी और ताप क्रम इस मास न निकल सके, हो सका तो दूसरे मास के कोई पत्र में ये लेख भेज दिये जावेंगे॥

आगामी दिसम्बर में "भूगोल" संसार शासन नामका विशेषांक निकालेगा इस अंक में संसार के समस्त देशों की शासन प्रकृतिका विवरण रहेगा।

इस के तैयार करने में श्रीयुत रासबिहारी बोस श्रीमान राजा महेन्द्र प्रतापसिंह जी आदि सरीखे महानुभावों ने भी जो इन बातों का निजी अनुभव रखते हैं सहयोग दिया है। इस अंक का मूल्य साधारण अंक के समान ही।) चार आना रक्खा गया है और अलग बेचने का प्रबन्ध किया है पर नियत ही संख्या में यह अंक निकलेगा इस भावा ग्राहक तथा शीघ्र मैनेजर के पास पांच आने के टिकट अथवा साल भर का ३) मूल्य नवम्बर क अन्त तक भेज दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DO YOU WANT TO
INCREASE YOUR TRADE?

THE EAST & WEST TRADE DEVELOPER.

The only Commercial Monthly of its kind in the East specially devoted to the promotion & consolidation of the International trade connections.

Subscription Rs. 10 or £ 1.

THE INDIAN MERCANTILE DIRECTORY.

Giving names & addresses of the Merchants, Manufacturers, Exporters, Importers, Agents and Industrial establishments, located everywhere in India, Burma, Ceylon, China, Federated Malay States, Netherland, Philippines, Siam and Straits Settlements. dealing in each class of goods, and an up-to-date list of Associations, Colleges, Schools, Hospitals, Newspapers and Libraries. Rs. 10/- or Sh. 15/.

THE MERCANTILE DIRECTORY OF GERMANY.

Gives an up-to-date list of prominent Manufacturers, Merchants Exporters, Importers etc, in Germany, dealing in each class of goods, classified under alphabetical trade headings. Rs. 10/- or Sh, 15/.

THE MERCANTILE DIRECTORY OF JAPAN.

This publication contains an up-to-date list of Merchants, Manufacturers, Importers, Exporters, etc. in Japan, dealing in each class of goods classified under alphabetical trade headings, as also useful facts and figures concerning Japanese trade and industry. Rs. 10-or Sh. 15.

PUBLISHERS—

THE EAST & WEST TRDAE DEVELOPER,

RAJKOT, INDIA.

मारवाड़ जैन सुधारक

मासिक

(निवन्धमाला)

मारवाड़ी जाति का यह एक ही इकलौता मासिक पत्र है। जिस में समाजिक,धार्मिक,नैतिक,ऐतिहासिक, उद्योगिक,व्यापारिक लेख तथा नवीन आविष्कार,हुन्नर और संसारिक घटनाओं पर प्रकाश डाला जाता है। यह मासिक पत्र अपने ढंग का एक ही है। इस की प्रशंसा सर्व पत्रों ने की है। इसका प्रचार भारत के सर्व प्रान्तों में है। वार्षिक मूल्य पेशगी रु० २॥) भेट में उपयोगी पुरुष के। भेजी जाती है। नमूने की प्रति मंगाने से फ्री भेजी जाती है। नाम पता साफ़ २ लिखना चाहिये।

पताः— **मैनेजर—मारवाड जैन सुधारक, सिरोही(राजपूताना)**

स्व० लोक० तिलक के धार्मिकऔर राजनैतिक विचारों का प्रचारक विश्व बन्धुत्व का उपदेशक, स्वराज्य का प्रतिपादक, हिन्दु संघटन का समर्थक, हिन्दुधर्म और हिन्दुजीवन में जागृति पैदा करने वाला सर्वांग सुन्दर राष्ट्रीय साप्ताहिक।

भारतधर्म का नया स्वरूप

विशाल आकर ! नये सुधार !!

बड़े बड़े २० कालम। सुपाठ्य लेख, ऊंचे दर्जे का विनोद, गम्भीर सम्पादकीय विचार, विचारपूर्ण राजनीतिक चर्चा, स्व० लोकमान्य की उत्तेजक स्मृतियां, हिन्दुओं में जाग्रति पैदा करने वाला धर्मविवेचन, मधुर और उत्तेजक कविताएँ व्यापार, कला स्त्री शिक्षा, विज्ञान आदि विषयों का भरपूर ऊहापोह। ये सब बातें नये स्वरूप के 'भारतधर्म' में केवल ३) वार्षिक चन्दा देकर ता० २ जून से पढ़िये। विज्ञापनदाताओं के लिये खास सुभीता रक्खा गया है।

मैनेजर "भारतधर्म" स्टेशन रोड, बनारस सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BHUGOL.

The only Geographical monthly in India.

Bhugol aims at enriching the geographical section of the Hindi literature so that Hindi may become the medium of instruction.

Bhugol contains valuable articles on all geographical topics such as Current History Astronomy, Industry, Survey, Trade, Fair, Tour, Exhibition Plant and Animal life. The articles usually follow in series so that they may form the ground work of a series of books on various geographical branches in due course. Climatic chart, brief diary of the month and questions and answers of the **Bhugol** interest even the dullest mind.

In order to furnish first-hand, accurate and reliable information regarding every part of the globe, foreign tours are arranged annually by the Travel Department of the **Bhugol.**

The price of the **Bhugol** covers just the cost of paper, printing, blocks and maps; its workers are all honorary.

Bhugol circulates largely in all parts of India, Burma, Siam, Africa Germany, Turkey, Scotland, America etc. though it is specially sanctioned as a periodical for use in High, Normal and Middle Schools of C. P. & Berar by the Director of Public Instruction and recommended for reading rooms and libraries of High, Normal and Middle Schools of U. P. by the Secretary Text Book Committee U. P.

Subscription Rates		
Single copy	Annas	4
One year	Rs.	3
Foreign	Rs.	5
Patrons	Rs.	10

Per insertion

Advertisement Rates	
Ordinary full one page	Rs. 10
3rd page of the cover	Rs. 12
4th page of the cover	Rs. 15

Bhugol insures success to the student in his Examination, pleasure to the teacher and news paper reader, guidance to the tourist, profits to the trader and fresh openings to the unemployed.

Whatever your vocation in life may be, **Bhugol** is sure to interest and instruct you.

Just remit Rs 3 (one year's subscription) by money order or as. 4 (four) for a single copy and you will realise the truth of every word said here.

Write to the:—

MANAGER BHUGOL,

Meerut. (U. P.)

INDIA.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Published by The Editor, and Printed by B. Bankey Lall Kshatrya at the Sahitya Press, Meerut.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1998-200[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri